# MARATHI SE HINDI MEIN ANUDIT DALIT UPNYASON KA BHASHIK ADHYAYAN

A Thesis submitted in partial fulfilment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Center for Dalit and Adivasi Studies and Translation

**2022**


Researcher

**ARGE GODAWARI SUDARSHAN**

16HDPH01

Supervisor

**Dr.J.ATMARAM**

Center for Dalit & Adivasi Studies and Translation, School of Humanities

University of Hyderabad

Hyderabad - 500046

Telangana,

India

# मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन

हैदराबाद विश्वविद्यालय की पीएच.डी. दलित-आदिवासी अध्ययन एवं अनुवाद केंद्र  उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध-प्रबंध

**2022**


शोधार्थी

**आरगे गोदावरी सुदर्शन**

16HDPH01

**विभागाध्यक्ष**

**प्रो. विष्णु सरवदे**

दलित-आदिवासी अध्ययन

एवं अनुवाद केंद्र

मानविकी संकाय

हैदराबाद विश्वविद्यालय

हैदराबाद 500046

**शोध निर्देशक**

**डॉ. जे. आत्माराम**

हिंदी  विभाग

मानविकी संकाय

हैदराबाद विश्वविद्यालय

हैदराबाद 500046

# DECLARATION

I ARGE GODAWARI SUDARSHAN (Registration no. **16HDPH01**) hereby declare that the thesis entitled '**MARATHI SE HINDI MEIN ANUDIT DALIT UPNYASON KA BHASHIK ADHYAYAN'** submitted by me under the guidance and supervision of Professor **DR.J.ATMARAM** is a bonafide plagiarism free research work. I also declare that it has not been submitted previously in part or in full to this or any other University or institution for the award of any degree or diploma. I hereby agree that my thesis can be deposited in shodhganga/Inflibnet.

**Signature of Supervisor**

(Dr.J.ATMARAM)

**Signature of Student**

ARGE GODAWARI SUDARSHAN

Reg. No. 16HDPH01

**DATE**

# CERTIFICATE

This is to certify that the thesis entitled '**MARATHI SE HINDI MEIN ANUDIT DALIT UPANYASON KA BHASHIK ADHYAYAN'** submitted by ARGE GODAWARI SUDARSHAN bearing Reg. No. **16HDPH01** in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of **DOCTOR OF PHILOSOPHY** in **CENTER FOR DALIT AND ADIVASI STUDIES AND TRANSLATION** is a bonafied work carried out by her under my supervision and guidance.

As far as I know, This thesis is free from plagiarism and has not been submitted previously in part or in full to this or any other University or institution for award of any degree or diploma.

Further, the student has the following publication(s) in the relevant area of her research before submission of the thesis for adjudication and has produced evidence for the same in the form of acceptance letter or in the reprint:

**A.Published research paper in the following publications :**

1.'ANUVAD KI BHASHAVAIGYANIK SAMASYAEN', AKSHARA MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL, PEER-REVIEWED & REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL, E-ISSN NO. 2582-5429, SPECIAL ISSUE 02, VOL-III, JULY-SEP- 2021, PAGE NO- 159-162.

2.‘’UPLYA’ AUR ‘HINDU’ MARATHI DALIT UPNYASON ME CHITRIT AMBEDAKARVAAD’, *AAYUSHI INTERNATION INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL*, PEER REVIEWED, ISSN NO. 2349-638X, VOL-IX,ISSUE-I , JANUAY-2022, PAGE NO. 73-76

A. **Research Paper presented in the following conferences :**

1. ‘DALIT UPYASON KI BHASHA SHAILI’, UNIVERSITY OF HYDERABAD 21 AUGUST 2017
2. ‘KYA MUJHE KHARIDOGE’ UPYAAS ME CHITRIT MAHANAGARIY BODH’, LAL BAHADUR SHASTRI MAHAVIDYALAYA DHARMABAD, 22-23 DECEMBER, 2017.
3. ’UPLYA’ AUR ‘HINDU’ MARATHI DALIT UPNYASON ME CHITRIT AMBEDAKARVAAD’ MAULANA AZAD NATIONAL URDU UNIVERSITY, HYDERABAD , 22-23 FEBRUARY, 2018.

Further the student has passed the following courses towards fulfilment of coursework requirement for Ph.D.

| **Course Code** | **Name** | **Credit** | **Result** |
|---|---|---|---|
| 1. DS801 | Research methods and critical approaches | 4 | PASS |
| 2. DS802 | Sociology of dalit literature | 4 | PASS |
| 3. DS803 | Dalit and Adivasi thought | 4 | PASS |
| 4. DS804 | Documenting of dalit & Adivasi oral literature | 4 | PASS |

The student has also passed M.PHIL degree of this university. She studied the following course in this programme.

| Course Code | Name | Grade | Credit | Result |
|---|---|---|---|---|
| 1. DS701 | Research methods and critical approaches | B | 4 | PASS |
| 2. DS702 | Introduction to Dr.B.R. Ambedkar though | B+ | 4 | PASS |
| 3. DS703 | Historical & sociological study of Adivasi literature | B | 4 | PASS |
| 4. DS704 | Translation & computing in hindi | B | 4 | PASS |
| 5. DS751 | Dissertation | B+ | | |

**Supervisor** **Head of Department** **Dean of the School**

# अनुक्रमणिका

- **अध्यायीकरण**
- **भूमिका**

## प्रथम अध्याय

## मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का सामान्य परिचय


1.1 मराठी से हिंदी में अनूदित उपन्यासों का परिचय 12-46

1.2 ‘नरवानर’ (मराठी उपन्यास-‘उपल्या’)

1.3 ‘हिंदू’ (मराठी उपन्यास-‘हिंदू’)

1.4 ‘बहुजन’ (मराठी उपन्यास-‘बहुजन’)

1.5 ‘त्रिशंकु’ (मराठी उपन्यास-‘त्रिशंकू’)

1.6 मूल उपन्यासकार और अनुवादकों का परिचय

1.6.1. मूल उपन्यासकार

1.6.2. अनुवादक


## द्वितीय अध्याय

## मराठी से हिंदी में अनुवाद की सामान्य समस्याएँ


2.1. अनुवाद की परिभाषा एवं उसका महत्त्व 47-76

2.2. अनुवाद के प्रकार

2.3. गद्य अनुवाद की समस्याएँ

2.4. मराठी से हिंदी में अनुवाद की सामान्य समस्याएँ

2.4.1. व्याकरणगत समस्याएँ

2.4.1.1. लिंग

2.4.1.2. वचन

2.4.1.3. कारक

2.4.2. शब्द के स्तर पर समस्याएँ

2.4.2.1. शब्दार्थ एवं अर्थ भिन्नता

2.4.3. वाक्यगत समस्याएँ

2.4.4. पारिभाषिक शब्दों की समस्याएँ

2.4.5. सांस्कृतिक समस्याएँ

2.4.6. मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग

2.4.7. प्रोक्ति स्तर पर समस्याएँ

**निष्कर्ष**

## तृतीय अध्याय

## मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन : शब्द के स्तर पर

3.1. शब्द की परिभाषा : भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार 77-119

3.2. अनूदित दलित उपन्यासों का शब्द स्तर पर विश्लेषण

3.3. शब्दों का वर्गीकरण

3.3.1. सार्थक और निरर्थक शब्दों का प्रयोग

**3.3.2.रचना के आधार पर वर्गीकरण**

3.3.2.1. रूढ़

3.3.2.2. यौगिक

3.3.2.3. योगरूढ़

3.3.3.मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का ऐतिहासिक आधार पर वर्गीकरण

3.3.3.1.तत्सम शब्दों का प्रयोग

3.3.3.2.तद्भव शब्दों का प्रयोग

3.3.3.3.देशज शब्दों का प्रयोग

3.3.3.4.विदेशी शब्दों का प्रयोग

3.3.3.5.अरबी तथा फारसी शब्दों का प्रयोग

**निष्कर्ष**

**चतुर्थ अध्याय**

**मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन : वाक्य के स्तर पर**

**4.1 वाक्य की परिभाषा एवं महत्त्व 120-160**

**4.2 वाक्य की संकल्पना**

**4.3 मराठी एवं हिंदी की वाक्य संरचना**

**4.4 वाक्य के आवश्यक घटक**

4.4.1. सार्थकता

4.4.2.योग्यता

4.4.3.आकांक्षा

4.4.4.आसक्ति

4.4.5.अन्विति

**4.5 वाक्य के प्रकार**

4.5.1. रचना के आधार पर मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों में वाक्य व्यवस्था

4.5.1.1. सरल वाक्य

4.5.1.2. मिश्र वाक्य

4.5.1.3. संयुक्त वाक्य

4.5.2.अर्थ के दृष्टि से

**4.6. मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों में मुहावरों का प्रयोग**

**निष्कर्ष**

## पंचम अध्याय

## मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन : प्रोक्ति के स्तर पर


5.1 प्रोक्ति : अर्थ एवं परिभाषाएँ 161-196

5.2 प्रोक्ति की संकल्पना

5.3 प्रोक्ति के अभिलक्षण

5.4.प्रोक्ति के प्रकार

5.4.1. मराठी से हिंदी में अनूदित उपन्यासों में संलाप की व्यवस्था

5.4.2.मराठी से हिंदी में अनूदित उपन्यासों में एकालाप की व्यवस्था

निष्कर्ष

**उपसंहार** **197-206**

**आधार ग्रन्थ** **207-213**

**सन्दर्भ ग्रंथ**

1. कोश सामग्री
2. वेब सामग्री

**प्रकाशित शोध-आलेख** **214-233**

3. पत्रिका में प्रकाशित आलेख
4. संगोष्ठी में प्रस्तुत प्रपत्र

# भूमिका

आज की दुनिया में अनुवाद का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। सारी दुनिया को एक करने, मानव - मानव को एक दूसरे के निकट लाने में, मानव जीवन को अधिक सुखी और संपन्न बनाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। अनुवाद आज व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता बन गया है। आज के सिमटते हुए संसार में सम्प्रेषण - माध्यम के रूप में अनुवाद भी अपना निश्चित योगदान दे रहा है। एक भाषा-भाषी समुदाय में परस्पर संपर्क - साधन तथा विचार - विमर्श के लिए भाषा का व्यवहार किया जाता है, किन्तु दो भिन्न भाषा-भाषी समुदायों के बीच विचारों के आदान-प्रदान के लिए अनुवाद की सहायता लेनी पड़ती है।

वर्तमान युग में 'अनुवाद' की उपयोगिता केवल भाषा और साहित्य तक ही सीमित नहीं है, वह हमारी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय सम्मति और एकता का माध्यम है। जो भाषाई सीमाओं को पार करके भारतीय चिंतन और साहित्य की सर्जनात्मक चेतना की समरूपता के साथ-साथ वर्तमान तकनीकी और वैज्ञानिक युग की अपेक्षाओं की पूर्ति कर, हमारे ज्ञान-विज्ञान के आयामों को देश-विदेश से समृध्द कराती है।

उपन्यास विधा का कलात्मक सौंदर्य दर्शाने का साधन 'भाषा' ही है। किसी भी सृजनात्मक साहित्य विधा के दो पक्ष होते हैं, भाव पक्ष तथा कला पक्ष। भाव पक्ष में भाव, विचार, संवेदनाएँ आती हैं, जो उसकी आत्मा होती है लेकिन आत्मा का अस्तित्व शरीर से है और शरीर भाषा है, जो भावों, विचारों, संवेदनाओं को

मूर्तरूप देती है। अतः साहित्य की संरचनात्मक व्यवस्था में भाषा का महत्त्व तभी है, जब भाषा की इकाईयाँ अपने उचित स्थान पर उचित अर्थ को स्पष्ट करें क्योंकि भाषा की एक संरचनात्मक व्यवस्था होती है, जिसकी इकाईयाँ होती हैं। जिनकी साहयता से ही हम भाषा से अर्थ को ग्रहण करते है। साहित्यकार के आंतरिक भावों को समझते है, कला के मूल्यांकन के लिए भाषा की इसी संरचनात्मक व्यवस्था को जानना जरूरी है क्योंकि इसी संरचनात्मक व्यवस्था को कलाकार या साहित्यकार अपने ढंग से प्रयुक्त करके अपनी भाषा को कलात्मक रूप देता है और इसी ढंग या पध्दति को 'शैली' कहते है। ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य एवं प्रोक्ति के चयन में वह अपनी व्यक्तिगत पध्दति अपनाता है। जिसे लेखक की अपनी अभिव्यक्ति शैली कहते है।

भाषा-सौदर्य में शैली का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। शैली के कारण ही भाषा की विशिष्टता दृष्टिगोचर होती है। शैली के माध्यम से ही विचार तथा भावो को स्पष्टता के साथ प्रकट किया जाता है। किसी भी भाषा में शैली यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हर भाषा की अपनी शैली होती है और विचार तथा विधा के अनुसार शैली में परिवर्तन होता रहता है। अनुवाद की दृष्टि से हम शैली को लेते हैं, तो पाते हैं कि स्त्रोत भाषा की अभिव्यक्ति को लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करने के लिए अनुवादक को लेखक के स्मृतिपटल पर जाकर देखना होता है। वह क्या कहना चाहते हैं और उसी संदर्भ को अपनी शैली में वे किस तरह अनूदित करने में सक्षम होते हैं। यह अनुवाद कार्य में महत्वपूर्ण पक्ष है, जिसे अनुवादक को शैली के स्तर पर निभाना होता है।

भाषा की संरचनात्मक इकाइयों के स्तर पर मैंने प्रस्तुत शोध प्रबंध का विषय “मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन” को चुना है। अध्ययन की दृष्टि से इस शोध-प्रबंध को पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय : ‘मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का सामान्य परिचय’ इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है। सबसे पहले मराठी उपन्यासों का और मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है तथा दूसरे उप-अध्याय में मूल उपन्यासकार और अनुवादकों का परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय : ‘मराठी से हिंदी में अनुवाद की समस्याएँ’ इस अध्याय के अंतर्गत अनुवाद का महत्त्व, स्वरुप और उसकी परिभाषा को स्पष्ट किया गया है साथ ही अनुवाद के प्रकार को भी मैंने स्पष्ट करने का प्रयास किया है। किसी विधा का अनुवाद करते समय कौन-सी समस्याएँ आती हैं उसको भी सारांश रूप में प्रस्तुत किया है। अनुवाद करते समय अनुवादक को विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझना पड़ता है। उसमें एक महत्वपूर्ण समस्या मुहावरों के अनुवाद की है। सामान्य शब्दावली के माध्यम से की गयी अभिव्यक्ति की तुलना में मुहावरों के माध्यम से की गयी अभिव्यक्ति अधिक प्रभावशाली तथा व्यंजक होती है, उसका अनुवाद भी उतना ही कठीन होता है साथ ही साथ मराठी से हिंदी में अनुवाद की क्या आवश्यकता है इसके बारे में भी बताया है।

तृतीय अध्याय : 'मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन: शब्द के स्तर पर' इस अध्याय के अंतर्गत 'शब्द' को लिया है अर्थात् उपन्यासों का शब्दस्तर पर अध्ययन किया गया है। जैसे- 'शब्द' की संकल्पना, 'शब्द' की परिभाषा और 'शब्द' के प्रकारों पर उपन्यासों में प्रयुक्त शब्दावली के सोदाहरण प्रस्तुत किया गया है। जैसे- अर्थ के आधार पर 'शब्द' के प्रकार जिसमें सार्थक शब्द, निरर्थक शब्द, बनावट के आधार पर शब्द के प्रकार जिसमें रूढ शब्द, यौगिक शब्द तथा योगरूढ शब्दों के उदाहरण देकर प्रस्तुत किया है। उत्पत्ति के आधार पर शब्द के प्रकार जिसके अंतर्गत तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज शब्द एवं विदेशी और अरबी-फ़ारसी, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग आदि का विश्लेषण है जिसका सोदाहरण परिचय प्रस्तुत अध्याय में दिया है।

चतुर्थ अध्याय : 'मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन : वाक्य के स्तर पर' इस अध्याय के अंतर्गत, उपन्यासों का वाक्य स्तर पर भाषिक अध्ययन प्रस्तुत किया है। जिसमें वाक्य की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए विभिन्न भाषा वैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाओं का उल्लेख किया गया है। जिससे वाक्य का स्वरूप स्पष्ट करने में सहायता मिली है। इसी चरण के अन्तर्गत रचना के अनुसार वाक्य का वर्गीकरण करते समय सरल वाक्य, मिश्र वाक्य तथा संयुक्त वाक्यों के उदाहरण उक्त सभी उपन्यासों में से लिए गए है। इसी उपाध्याय में वाक्य का तीसरा प्रकार अर्थ के अनुसार जिसमें विधि वाक्य, निषेध वाक्य, आज्ञार्थक वाक्य, प्रश्नार्थक वाक्य, विस्मयादिबोधक वाक्य, इच्छा बोधक वाक्य, संदेश वाक्य इनके सरल, मिश्र एवं संयुक्त प्रकार के वाक्यों के अलग-अलग उदाहरणों के साथ

परिचय दिया है और इस वर्ग के अंतर्गत अंतिम अर्थ के अनुसार वाक्य का प्रकार संकेतार्थक वाक्य प्रकार के उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय : 'मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन : प्रोक्ति के स्तर पर' अंतगर्त सर्वप्रथम प्रोक्ति का अर्थ एवं परिभाषाएँ को स्पष्ट किया गया है। अध्ययन की सुविधानुसार इस अध्याय को पाँच महत्वपूर्ण बिन्दुओं में विभक्त किया गया है। जिसमें प्रोक्ति की संकल्पना, प्रोक्ति के अभिलक्षण, संलाप और वार्तालाप की संकल्पना, प्रोक्ति के प्रकार और संलाप और एकालाप को उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया है।

अंत में 'उपसंहार' के अंतर्गत शोध-कार्य के जो निष्कर्ष निकलकर सामने आये हैं, उन्हें सक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इस शोध प्रबंध के लिए सर्वप्रथम अपने शोध-निर्देशक आदरणीय गुरुवर्य डॉ.जे.आत्माराम जी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित कराती हूँ, जिन्होंने शोध विषय के चुनाव से लेकर विषय को समझने में मेरी मदद की और अनुशासन में काम करने की प्रेरणा दी और साथ ही साथ मैं आदरणीय गुरुवर्य प्रो.आर.एस.सर्राजू जी के प्रति भी आभार और धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। अपने तमान व्यस्तताओं से समय निकालकर शोध-विषय से संबंधित समस्याओं को हल करने में मेरा सहयोग किया है।

मैं अपने माता-पिता और परिवार के प्रति भी विशेष रूप से आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने विषम परिस्थितियों में मेरा हौसला बढ़ाया और सहयोग प्रदान किया साथ ही साथ मैं अपने मित्रों के प्रति भी आभार और प्रेम व्यक्त करती हूँ।

अतः सविनय मेरा यह शोध-प्रबंध सुधी जनों के समुख प्रस्तुत है।

आरगे गोदावरी सुदर्शन

# प्रथम अध्याय

## मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का सामान्य परिचय

# प्रथम अध्याय

# मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का सामान्य परिचय

## 1.1. मराठी से हिंदी में अनूदित उपन्यासों का परिचय

मराठी से हिंदी में अनूदित साहित्य के संदर्भ में एक बात स्पष्ट है कि मराठी से हिंदी में उपन्यास के अनुवाद अधिक तो हुए हैं किन्तु उनमें दलित उपन्यासों की संख्या बहुत कम देखने को मिलती हैं । मराठी में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, आँचलिक, मनोविश्लेषणवादी और दलित आदि सभी प्रकार के उपन्यास लिखे गए हैं । जिसमें वि.स.खांडेकर, वा.म.जोशी, आपटे, सुमति देशपांडे, वि.दा.सावकार, मालतीबाई बेडेकर, अरुण साधू, दया पवार, भालचंद्र नेमाडे, लक्ष्मण गायकवाड, शरणकुमार लिंबाले आदि मराठी उपन्यासकारों की रचनाओं ने हिंदी के रचनात्मक साहित्य को प्रभावित किया है । सन् 1950 के बाद साहित्य और साहित्यकारों के केंद्र में केवल महानगर ही थे किन्तु 1960 के बाद साहित्यिक मूल्यों में परिवर्तन हुआ । शिक्षा प्रसार के कारण सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों का महत्त्व देने वाले तथा अपनी जमीन से जुड़े ग्रामीण लेखक पैदा हुए । सन् 1956 में दलितों ने नागपुर की भूमि पर डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर की प्रेरणा से धर्मान्तरण किया । हिंदू धर्म ने दलितों के प्रति अत्यधिक घृणात्मक भावना दिखाने के कारण यह सब हुआ । डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर ने कहा था कि – ‘जिस हिंदू धर्म में दलितों को पशु से भी हीन माना जाता है, उस धर्म मे मैं मरूँगा नहीं ।’ परिणाम

स्वरूप बड़ी संख्या में दलित बौद्ध बने। इसके पश्चात दलितों में चेतना उत्पन्न करने के लिए दलित साहित्य द्वारा दलितों का प्रबोधन करना शुरू हुआ। शुरूआती दौर में कविता और कहानियों के माध्यम से यह प्रबोधन होता रहा लेकिन बाद में उपन्यास और आत्मकथाओं द्वारा भी समाज में प्रबोधन शुरू हुआ। 1960 के आसपास दलित उपन्यास लिखे गये। इन सभी प्रवृतियों का परिचय हिंदी पाठकों को कराने का कार्य हिंदी अनुवाद ने किया।

उपन्यास मानवीय अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति का अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है। इसलिए दलित उपन्यासकारों ने अपने निजी जीवनानुभूतियों को उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया है। उपन्यास के माध्यम से लेखक दलित पात्रों के जीवन को समग्रता के साथ प्रस्तुत कर सकता है। उनके जीवन के सभी पहलुओं को वह उजागर कर सकता है। जिससे दलित वर्ग के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक तथा आर्थिक संदर्भों से जुड़े जीवन का चित्रण किया जा सकता है। इसलिए 'अम्बेडकरवाद' से प्रेरित दलित साहित्यकारों ने उपन्यासों का सृजन किया है। इन उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने दलित वर्ग के लोगों की पीड़ाएँ, यातनाएँ, अन्याय, अत्याचार, शोषण, उनका जीवन संघर्ष तथा उनमें निर्माण हुई चेतना का चित्रण किया है। ये दलित उपन्यास व्यक्ति विशेष पर केंद्रित न होकर पूरे समाज पर केंद्रित हैं। इसमें व्यक्त पीड़ाएँ, दुःख-दर्द, अन्याय-अत्याचार आदि किसी एक व्यक्ति की न होकर वह पूरे समाज की हैं। देश और समाज की परिस्थितियों, परंपराओं और नीतियों के विरुद्ध विद्रोह करने के उद्देश्य से ही दलित उपन्यास लिखे गए हैं। इनमें समाज की विषमतावादी परिस्थितियों केंद्रित

कर उनकी विद्रुपताओं का चित्रण किया है। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी के विचारों से प्रेरित होकर आज दलित समाज के लोग शिक्षित हुए हैं तथा संगठित होकर अपने ऊपर होने वाले अन्याय, अत्याचार और शोषण का विरोध कर रहे हैं, साथ ही अपने संवैधानिक अधिकारों के प्रति सजग हो गए हैं। वे 'अम्बेडकरवाद' से प्रेरित स्वतंत्रता, समता, बंधुता तथा सामाजिक न्याय आदि सामाजिक मूल्यों को समझ रहे हैं। इसलिए वे समाज में समता तथा अधिकार पाना चाहते हैं लेकिन उन्हें हर जगह संताप या अपमान को ही सहना पड़ रहा है। इसके परिणाम स्वरूप उनके मन में इस अपमान के विरुध्द चेतना जागृत हो रही है। यही संताप, अपमान, आक्रोश, विद्रोह तथा चेतना दलित उपन्यासों का आधार है। दलित लेखक स्वयं भुक्तभोगी होने के कारण उन्होंने अपनी संवेदनाओं को उपन्यासों के माध्यम से चित्रित किया है। उन्होंने पात्रों में नई चेतना का निर्माण करने का प्रयास किया है। अतः यह संवेदना या चेतना दलित लेखकों तथा गैर दलित लेखकों के पात्रों को अलग करती है।

अण्णाभाऊ साठे का पहला उपन्यास 'चित्रा'(1957) है। जिसमें निम्नवर्गीय ग्रामीण स्त्रियों की दुर्दशा का वास्तविक चित्र को दिखाने की कोशिश की गई है तो 'चंदना' में उन्होंने बंबई में फुटपाथ पर जीवन यापन करनेवालों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है किन्तु 'फकीरा' उनका सर्वाधिक सफल उपन्यास माना जाता है , जिसमें मांग जाति की वीरता, निष्ठा और साहस का प्रभावशाली चित्रण किया गया है। इसके अतिरिक्त 'वैजयंता', 'माकड़ीचा माळ', 'आवडी', 'वैर', 'रानगंगा',

‘पाझर’, ‘मास्तर’, ‘वारणेचा वाघ’, ‘चंदन’, ‘अलगूज’, ‘केवड्याचं कणीस’, ‘चिखलातील कमळ’ आदि उनके प्रमुख उपन्यास हैं।

दलित साहित्य मराठी साहित्य की एक प्रभावपूर्ण एवं चिंतन का विषय है। ‘बळी’ में दलित जीवन का प्रभावपूर्ण चित्रण हुआ है। मधु मंगेश कर्णिक, जयवंत दळवी ने भी दलित जीवन की ओर नजर डाली थी। शंकरराव खरात ने ‘हातभट्टी’ में झुग्गी-झोपड़ी में रहनेवाले दलित जीवन का सामुहिक चित्र प्रस्तुत किया है। हरिभाऊ पगारे ने अम्बेडकर द्वारा दिए गए ‘चवदार तालाब’ के सत्याग्रह को केंद्र में रखकर ‘कालिंदी’ नामक लघु उपन्यास लिखा है। हिं.गो.बनसोडे ने दलित मुक्ति के आंदोलन पर ‘मुक्तिसंग्राम’ नामक उपन्यास लिखा है। ज. वि. पवार ने ‘बलिदान’ सामान्य जनता की असमर्थता का प्रभावपूर्ण चित्र खींचा है। श्री.अशोक लोखंडे की रचना ‘निष्ठा’ दलित नारी की इज्जत पर आक्रमण करनेवाली घटना को केन्द्र बनाकर लिखी गई हैं। नामदेव ढसाळ का उपन्यास ‘हाडकी हडवळ’ में एक साहसी दलित स्त्री का प्रभावपूर्ण चित्रण किया गया है। बाबूराव बागूल का उपन्यास ‘सूड’ की नायिका देवदासी कन्या है और पुरुष के साधुत्व से प्रभावित होकर समर्पण करती है। प्रा. केशव मेश्राम का ‘जटायु’ बहुत ही प्रभावपूर्ण उपन्यास है साथ ही ‘पोखरण’ में आर्य-अनार्यों के संपर्क, संबंध, संघर्ष का चित्रण किया गया है। भीमसेन देठे का ‘इस्कोट’ बौद्ध और बौद्धेत्तर के बीच के संघर्ष को केन्द्र बनाकर लिखा गया है। भाई तांबे ने ‘नियती’ में एक बौद्ध युवक की प्रतिशोध की भावना का चित्रण किया है। जे.जी.माने की ‘मुक्ति’ अशोक व्हटकर ने ‘मेलेलं पाणी’,

भ.शि. शिंदे ने ‘अमृतनाक’, प्रेमानंद गजवी ने ‘जागर’ आदि इस तरह से उल्लेखनीय मराठी दलित उपन्यासों का सृजन हुआ हैं।

दलित साहित्य के शुरूआती दौर में हिंदी में भी दलित आत्मकथाओं का निर्माण हुआ। लेखकों ने इसमें स्वयं का दुःख, दर्द, पीड़ाओं को चित्रित करने का प्रयास किया है। इसके पश्चात दलित उपन्यास विधा ने आकार ग्रहण किया। जो दलित उपन्यास साहित्य को अत्याधिक उपादेय लगा। इस विधा ने हिंदी अनुवाद द्वारा हिंदी साहित्य में स्थान प्राप्त करने का प्रयास किया। मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यास हैं – ‘नरवानर’, ‘बहुजन’, ‘हिंदू’ ‘त्रिशंकु’ आदि। इनमें इन्होंने दलित संस्कृति, दलित समस्या, दलितों की आर्थिक, राजनैतिक स्थिति एवं उन पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार का वास्तविक चित्र पाठकों के समक्ष रखा है।

प्रस्तुत शोध – प्रबंध का विषय ‘मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन’ होने के कारण हम उन्हीं अनूदित उपन्यासों का सामान्य अध्ययन प्रस्तुत कर रहे हैं। जैसे –

| हिंदी उपन्यास | लेखक | मराठी उपन्यास | अनुवादक |
|---|---|---|---|
| 1.‘नरवानर’ | शरणकुमार लिंबाले | ‘उपल्या’ | निशिकांत ठकार |
| 2.‘हिंदू’ | शरणकुमार लिंबाले | ‘हिंदू’ | सूर्यनारायण रणसुभे |
| 3.‘बहुजन’ | शरणकुमार लिंबाले | ‘बहुजन’ | सूर्यनारायण रणसुभे |
| 4.‘त्रिशंकु’ | अरुण साधू | ‘त्रिशंकू’ | प्रकाश भातंब्रेकर |

## 1.1.**'नरवानर' (मराठी उपन्यास-उपल्या)**

'उपल्या' 1956 से 1996 तक के समय पर आधारित यह उपन्यास दरअसल आत्मचिंतन है। दलित विमर्श के संवेदनशील विस्फोटक सन्दर्भ का एक साहित्यिक विश्लेषण है । लेखक शरणकुमार लिंबाले ने 'उपल्या' उपन्यास में 1956 से 1996 तक चार दशकों के दौरान दलित आंदोलन का चित्रण करते हुए दलित आंदोलन पर प्रकाश डाला है। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के महानिर्वाण के बाद दलित आंदोलन विभाजित हो गया और कार्यकर्ताओं ने अनेक तरह के अलग-अलग संगठन बना लिए, इससे कार्यकर्ताओं में यह भावना पैदा हुई कि वे ही आंदोलन के मुख्य कार्यकर्ता हो और आंदोलन उन्हीं के हाथ में हो। इस उपन्यास का हालांकि कथानक यथार्थवादी है, उपन्यास चार भागों में विभाजित है, इसलिए उपन्यास में कोई सुसंगतता नहीं है। लेखक के अनुसार, "इस आत्मचिंतन या विश्लेषण के मूल में हैं- कुछ स्मृतियाँ, कुछ बहसे, कुछ साहित्यिक पाठ, कुछ समाचार, समाज की गतिविधियाँ और उनसे उत्पन्न प्रतिक्रियाएं आदि हैं।"[1] ग्रामीण समाज की वास्तविकताओं, दलितों के खिलाफ अन्याय-अत्याचार और उत्पीड़न, अज्ञानता, सामाजीकरण, अपमान, भूमि हथियाने के आंदोलन, अस्तित्व की लड़ाई आदि के खिलाफ आवाज उठाने के लिए दलित आंदोलन के कार्यकर्ताओं ने सबको आकर्षित करने का काम किया।

---

1.'नरवानर',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.172

इस उपन्यास के विषय का केंद्र तत्कालीन दलित आन्दोलन है। उपन्यास के पहले भाग में एक सनातन ब्राह्मण परिवार के दलितीकरण का चित्रण है। कैसे उनके कमरे के सहकर्मी  उसे दलितीकरण का कारण बना देते हैं , इस पर प्रकाश डाला गया है । दूसरे भाग दलित आंदोलन पर है, इनमें रिपब्लिकन पार्टी, दलित पैंथर्स और नामकरण पर आधारित समस्याओं का चित्रण किया है। जाति और सरकार के खिलाफ दलित आंदोलन द्वारा किए गए संघर्ष को इसमें दिखाया है। तीसरे भाग में ब्राह्मण परिवार की बेटी दलित की पत्नी बनती है और नया जीवन शुरू करती है। इससे सवर्ण में विचार परिवर्तन और अंतर्जातिय विवाह को दी गई मान्यता समकालीन स्थिति का प्रतिबिंब बन जाता है । उपन्यास के चौथे भाग में लेखक शरणकुमार लिंबाले इस तथ्य को उजागर करने में सफल होते हैं कि दलित आंदोलन और एक संगठन में मिलकर काम करने वाले कार्यकर्ता एक दूसरे के कैसे दुश्मन बन जाते हैं।

इस उपन्यास में अनेक मुख्य पात्र हैं - अनिरुद्ध देशमुख, रोहिदास नागदिवे, दयानंद किनिकर, मिलिंद कांबले, विजय पगारे, गौतम गंगुरडे, ईश्वर इंगले आदि।

सनातन ब्राह्मण परिवार का एक पुत्र अनिरुद्ध देशमुख कॉलेज की शिक्षा के लिए छात्रावास में प्रवेश करता है लेकिन समान प्रतिशत के साथ एक दलित छात्र मिलिंद कांबले अपने सहयोगी के रूप में कमरे में रहने के लिए आता है। यहाँ एक दलित छात्र के माध्यम से उन्होंने दलितों के खिलाफ अन्याय और अत्याचारों को दिखाया है। इतने सारे छात्र एक साथ आते हैं और दलित छात्र संगठन बनाते हैं। संगठन की दैनिक बैठके कमरे में ही होती रहती हैं, इस कारण अनिरुद्ध का अध्ययन नहीं हो

पाता है। वह हॉस्टल में कमरा बदलने की बहुत कोशिश करता है, लेकिन वह सफल नहीं हो पाता है। कमरा या सहकर्मियों को बदलने के लिए उसे सहमति नहीं मिलती है। इसके अलावा घर की खराब स्थिति के कारण यह अलग कमरे का खर्च नहीं उठा सकता है लेकिन इस स्थिति में भी वह शिक्षा प्राप्त करता है और अपराधी बन जाता है। नाम बदलने के आंदोलन के दौरान हाडोलती, जलकोट और बधौना गांवों में हुए दंगों के लिए अनिरुद्ध को दोषी ठहराया जाता है। ड्यूटी के दौरान अनिरुद्ध को गांव के लोग पत्थरों से कुचल कर जिंदा जलाने की कोशिश करते हैं लेकिन एक सहिष्णु पुलिस अधिकारी उसकी जान बचाता है।

दलित आंदोलन के माध्यम से समाज की रक्षा करने वाले प्रमुख व्यक्ति रोहिदास नागदिवे, मिलिंद कांबले, विजय पगारे, दयानंद किनिकर, गौतम गंगुरदे, ईश्वर इंगले आदि हैं। वहीं राहुल बनसोडे, रमा बाबर, याकूब शेख, भीमा भोले, पंडित कनाडे, निकम्मा, त्रिशरण और अन्य छोटी-छोटी शख्सियतों के साथ-साथ प्रमुख हस्तियां भी परिवर्तन आंदोलन के माध्यम से नाम परिवर्तन की लड़ाई लड़ रहे हैं। रवींद्र साने, रश्मि, संरक्षक मंत्री माने जैसी कुछ हस्तियों के नाम सामने आए हैं। इनमें से अनिरुद्ध, मिलिंद कांबले, रोहिवास नागदिवे अपने अलग व्यक्तित्य का निर्माण करने की कोशिश करते हैं। दलित आंदोलन के ये सभी कार्यकर्ता समाज और सरकार से संघर्ष करते हैं। उपन्यास के प्रत्येक भाग में कार्यकर्ताओं के कथनों के माध्यम से तत्कालीन इतिहास को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है लेकिन यह एक ऐसा उपन्यास है जो दलित आंदोलन के उभार, संघर्ष और विखंडन पर दृष्टिपात किया है। 'उपल्या' उपन्यास का शीर्षक अर्थपूर्ण लगता है क्योंकि डॉ.

बाबासाहेब द्वारा शुरू किए गए आंदोलन में एक साथ काम करने वाले कार्यकर्ता प्रतिद्वंद्वी बन जाते हैं। वे चाहते हैं कि आंदोलन उनके हाथ में हो और आंदोलन का एकाधिकार उनका हो। जो कि बंदरों की 'उपल्या' प्रजाति में भी यही रवैया पाया जाता है। बंदरों के समूह में मादा चूजे पैदा होने पर उपल्या खुशी से झूम उठता है। नर पिगलेट पैदा होने पर मारे जाते हैं। ऐसा है 'उपल्या' का रवैया। दलित आंदोलन के कार्यकर्ताओं का भी यही रवैया है। इससे 'उपल्या' नाम उपन्यास के लिए सार्थक हो जाता है।

## 1.3 हिंदू (मराठी उपन्यास-'हिंदू')

'हिंदू' उपन्यास को उपल्या की अगली कड़ी के रूप में जाना जाता है। गैर दलितों द्वारा अन्याय और उत्पीड़न के खिलाफ दलित कार्यकर्ताओं का संघर्ष उपन्यास उपल्या में दिखाई देता है। इसी प्रकार 'हिंदू' उपन्यास में दलित नेता तात्या कांबले अपने अम्बेडकर जलसा के माध्यम से दलितों में सुधार लाने का प्रयास करते हैं। लेकिन सवर्ण समाज यह बदलाव नहीं चाहता। इसके परिणामस्वरूप तात्या कांबले की हत्या कर दी जाती है। पूरी कहानी इसी घटना के इर्द-गिर्द घूमती है।

एक ओर उग्र हिंदुत्व की लहर और दूसरी ओर इसके खिलाफ एकजुट होने वाले दलितों के स्वाभिमान को इस उपन्यास के माध्यम से महसूस किया जा सकता है। 'हिंदू' उपन्यास में मुख्य पात्रों के रूप में तात्या कांबले, प्रभाकर कावले, मानिकचंद और गोपीचंद के साथ, सदानंद कांबले, रोहित, सोनाली, कस्बे गुरुजी, रामभाऊ कवाले, सुरेखा माने, जगन्नाथ पंडित और दीपक माने आदि मुख्य पात्र हैं।
'हिंदू' उपन्यास का मुख्य पात्र तात्या कांबले है। उनकी बचपन की शिक्षा अचलपुर गांव में हुई। दो-तीन पीढ़ियों तक तमाशगीर के परिवार के रूप में जाने जाने के बावजूद तात्या कांबले एक ऐसे नायक हैं, जो 'अम्बेडकर जलसा' के माध्यम से दलित भाइयों को अज्ञानता से बाहर निकालते हैं और जैसे कट्टरपंथियों का मनोरंजन करने के स्थान पर समाज के लाभ के लिए राजनीति को जोड़ते हैं। परिवर्तनकारी आंदोलन के माध्यम से समाज की रक्षा करते हुए सभी लोग इसके शिकार हो जाते

हैं और जलसाकर तात्या कांबले का नाम हमेशा के लिए मिट जाता है। प्रभाकर पूरे उपन्यास में एक खलनायक की मुख्य भूमिका निभाते हैं। वह तात्या कांबले से नाराज हैं क्योंकि उनके पिता का सरपंच आरक्षण उनके कारण चला गया है।

गांव के दलितों को अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करने वाले तात्या कांबले की हत्या में प्रभाकर और गांव के अन्य लोग शामिल होते हैं। सभी नेता दलितों की हत्या कर आम दलितों को सबक सिखाने की कोशिश करते हैं। इस घटना ने समाज में व्याप्त विषम तनाव और विकृत जाति व्यवस्था पर प्रकाश डाला है। 'संघर्ष' इस उपन्यास का एक महत्वपूर्ण तत्व है।

तात्या कांबले की हत्या का पर्दाफाश करने के लिए दलित कार्यकर्ता एक साथ आ जाते हैं लेकिन मानिकचंद और गोपीचंद जैसे भ्रष्ट लोग दलितों को अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल कर लेते हैं। तात्या कांबले के छोटे भाई सदानंद कांबले ने उन्हें सरपंच के पद से हटाकर समाज कल्याण मंत्री बनाने का वादा किया है। इस घटना के कारण दलित आंदोलन में फूट पड़ती है। इस कारण विकृत जाति व्यवस्था के बोझ तले दबे दलितों और उत्पीड़ित दलित समाज की असल तस्वीर हमें साफ दिखाई देती है। अतः 'हिंदू' उपन्यास सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

उपन्यास 'हिंदू' का सामाजिक चित्रण करते हुए सामाजिक दर्शन, दलित, उच्च जाति के भीतर श्रेष्ठ हीनता का चित्रण, उच्च जाति में अंधविश्वास, परंपरा, अम्बेडकरवादी विचारधारा का आविष्कार आदि पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। 'उपल्या' और 'हिंदू' उपन्यास 1956 से 1996 के चार दशकों के दौरान

समाज और दलित आंदोलन में हुए परिवर्तनों को दर्शाते हैं। यहाँ डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के निधन के बाद दलित समाज में जो परिवर्तन हुए हैं, उन्हें दिखाया गया है। आजादी के बाद की अवधि में भी, उच्च जातियों द्वारा दलितों के साथ अवहेलना और अपमान जनक व्यवहार किया जाता है। ऐसा लगता लगता है कि दलित समाज कई अपवादों, रूढ़ियों, परंपराओं का शिकार हो गया है, हालाँकि आज दलित समाज में सुधार हुआ है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों को अपनी आजीविका के लिए उच्च जातियों पर निर्भर रहना पड़ता है।

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर द्वारा दलितों को दिए गए "शिक्षित बनो, संगठित हो और संघर्ष करो"[2] आदर्श वाक्य के साथ, हजारों दलित युवा, अम्बेडकर के विचारों को स्वीकार करके, सभी के खिलाफ लड़ते दिख रहे हैं और अन्याय और उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं। 'हिंदू' उपन्यास का शीर्षक अर्थपूर्ण लगता है। 'हिंदू' उपन्यास का समर्पण लेखक की भावुकता का परिचायक है चूंकि उपन्यास एक कथा- उन्मुख साहित्यिक शैली है, इसलिए कोई भी भाषाई कलाकृति बिना कथा के नहीं पढ़ी जा सकती है। 'हिंदू' उपन्यास के वर्णन के लिए प्रथम पुरुष और तृतीय पुरुष कथा पद्धति का प्रयोग किया गया है।

अंत में कहा जा सकता है कि दलित उपन्यास 'अम्बेडकवाद' से प्रभावित है। ये रचनाएँ पाठकों में एक नई चेतना निर्माण कर उन्हें प्रेरणा देने का भी काम करती हैं। दलित साहित्य के मानदंडों की दृष्टि से इन उपन्यासों में लेखकों ने आंबेडकरवादी तत्वों को संप्रेषित करने का सफल प्रयास किया है, जो निश्चित रूप

[2]'दलित साहित्य का सौदर्यशास्त्र', ओमप्रकाश वाल्मीकि,पृ.सं.22

से सराहनीय है । यह उपन्यास डॉ बाबासाहब अम्बेडकर जी के विचारों को विश्व धरातल पर संप्रेषित करने में सक्षम है । दलित साहित्य में अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यासों का सृजन बहुत कम हुआ है । इसलिए दलित उपन्यासों की दृष्टि से यह प्रारंभिक काल माना जा सकता है । समकालीन दौर में  दलित लेखक लिख रहे हैं, अभिव्यक्त हो रहे हैं । इसलिए उनकी भाषा में भले ही अलंकार, रस और छंद आदि नहीं होंगे लेकिन उनके पास शब्द हैं , जो उनकी भावनाओं को ही शब्दों के माध्यम से व्यक्त कर रहे हैं । यह बात दलित उपन्यासों की दृष्टि में महत्वपूर्ण है जो इस विधा के विकास में सहायक सिद्ध हो सकती है ।

## 1.4 बहुजन (मराठी उपन्यास-'बहुजन')

शरणकुमार लिंबाले जी का मराठी साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपने उपन्यास 'बहुजन' में सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है। उपन्यास भले ही काल्पनिक है, लेकिन यह आज की सामाजिक वास्तविकता को व्यक्त करता है। ऐसा लगता है कि वे इसी उपन्यास के माध्यम से दलित आंदोलन को व्यक्त करना चाहते हैं साथ ही साथ उस समय की परिस्थिति को भी व्यक्त करना चाहते हैं। अपने उपन्यास लेखन की भूमिका के बारे में बताते हुए, वे कहते हैं, 'महाराष्ट्र में दलित आंदोलन की 1996 के बाद की जो अवधि है वे 21 वीं सदी में संक्रमण से अभिभूत होने, उबरने, जीवित रहने और बड़ी पार्टी के साथ घूमने के बारे में थी। मैं राष्ट्रीय स्तर पर हिंदू-समर्थक माहौल और महाराष्ट्र में अम्बेडकरवादी आंदोलन के बारे में सोच रहा था। यह एक बोरी की तरह लग रहा है जो एक ड्रॉस्ट्रिंग के साथ संलग्न है।' इसी मानसिकता से उपन्यास लिखने में उनकी भूमिका स्पष्ट होती है।

दादा मंडली नाम से कुछ लोग है जो लगातार झुग्गीवासियों पर हावी होने की कोशिश करते रहते हैं। वे बस्ती के लोंगो को डराते हैं और मारपीट करके उनपर अन्याय-अत्याचार करने लगते हैं। यह सब इसलिए करते हैं कि सामाजिक लाभ, आर्थिक लाभ, राजनीतिक लाभ के लिए ऐसा प्रभुत्व बना रहे। ऐसे अनेक संघर्ष 'बहुजन' उपन्यास में हमें देखने को मिलते हैं। एक छोटी सी गली में सभी जातियों और धर्मों के लोगों का निवास था। उनका जीवन स्तर एक था। वे सभी गरीब थे। वे मलिन बस्तियों में रहते थे लेकिन उनमें भी कई स्तर थे, उनके सभी के रीति-

रिवाज अलग थे। कलशट्टी और बालशेटवार यह दोनों वहा के मुख्य पुरुष यानि मुखियाँ  थे। हर कोई उन्हें एक झुग्गी दादा के रूप में जानता था। लोग अपने विवादों को निपटाने के लिए उनके पास ही जाते थे। उनकी बात को अंतिम माना जाता था। झुग्गीवासियों को हर चीज के लिए उन पर निर्भर रहना पड़ता था क्योंकि उनकी कला के अनुसार जीना, उनकी मर्जी से जीना, उनके जीवन का एक हिस्सा है लेकिन यहाँ की स्थिति के अनुसार यह उनके द्वारा स्वीकार किया गया है या उन्हें नाइलाज से इनकों स्वीकार करना पड़ता है। इन सबके  पीछे मुख्य उद्देश्य सामाजिक लाभ प्राप्त करना है। विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, राजनेताओं की सलाह पर इन झुग्गियों में अनेक प्रकार की सुविधाओं की मांग की जाती हैं। इनके के सुविधा के अनुसार राजनीति की जाती है। इनका फायदा केवल उन्हें ही मिलता हैं। इन राजनीति के दंगों में आम झुग्गीवासियों पर अन्याय-अत्याचार किये जाते हैं लेकिन आम जनता इन सभी घटनाक्रमों का और राजनीति का अर्थ नहीं समझ पाते हैं।

हालांकि मलिन बस्तियों में हर कोई गरीब है लेकिन उनकी अलग-अलग जातियों के कारण उनके बीच सामाजिक दूरी बनी हुई है। इसका फायदा यह गुंडे लेते है। इसके अलावा उपन्यास ‘बहुजन’ में एक अलग तरह के वर्चस्व के संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है, वह समस्या धार्मिक विचारधारा के प्रभुत्व की है। हिंदुत्व की विचारधारा को विकसित करने का प्रयास कैसे किया जाता है? इन प्रयासों से सामाजिक परिवेश में किस प्रकार हलचल होती है आदि  सामाजिक समस्याओं को उपन्यास ‘बहुजन’ में प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है।

भारत को विभाजन के माध्यम से स्वतंत्रता मिली। सम्पूर्ण भारत दो भागों में बँटा हुआ था। भारत और पाकिस्तान दो अलग-अलग राष्ट्र हैं। प्रवास और हिंदू-मुस्लिम दंगों के सवाल ने इन दोनों समूहों को स्थायी रूप से आहत कर दिया। कश्मीर का भी एक सवाल था। बाद में बांग्लादेश पाकिस्तान से अलग हो गया। भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध हुए। यह पूरी पृष्ठभूमि इस उपन्यास में गूंजती है। ये दर्दनाक घाव दोनों समुदायों के जेहन में रहते हैं। इस घटना के दुष्परिणाम आज भी महसूस किए जा रहे हैं। उनका ही उल्लेख उपन्यास 'बहुजन' में मिलता है।

दंगे धार्मिक दरार पैदा करते हैं। धार्मिक दरार से ही राजनीतिक की जाती है। वहीं झूठ बोलने से स्वार्थ की प्राप्ति होती है। दंगों के दौरान लूटना मनुष्य में पशुता का एक भयानक कार्य है। इस लूट के पीछे इंसान की भी मौत हो जाए कोई फर्क नहीं पड़ता। भाईचारे का गला घोंटा जाता है। एक आदमी दूसरे का दुश्मन बनता है। ऐसे दंगों में लोग जानवरों की तरह व्यवहार करते हैं। कट्टरपंथी हत्या कर रहे हैं, खून बहा रहे हैं, धर्म के नाम पर लूटा जा रहा हैं। ऐसे स्थिति में लोंगो में विवेक ही नहीं बचता। यह सब क्यों? अनेक अंगों द्वारा इस प्रश्न का उत्तर बहुजन उपन्यास है। धार्मिक प्रश्न जटिल हैं। धार्मिकता के नाम पर लोगों की भावनाओं को जगाया जाता है। मंदिर-मस्जिद प्रश्न बनते हैं। इससे अंतर्धार्मिक समानता के सिद्धांत को पैरों तले रौंदा जाता है। भीड़ शासन के आधार पर लोकतंत्र के प्रभुत्व को कम करने का प्रयास किया जाता है। इस गंभीर प्रश्न की चर्चा समय की मांग है। यह एक प्रतिक्रिया है। इसके बारे में साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ बहुजन उपन्यास में सामाजिक यथार्थ को अपने ढंग से प्रस्तुत करते हुए आज के सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत

किया है। यह उपन्यास में उठाए गए मुद्दों पर एक गंभीर नज़र डालता है। उपन्यास एक यथार्थवादी साहित्यिक विधा है जो बदलते सामाजिक जीवन के साथ बदलती है। एक अर्थ में यह न केवल सामाजिक जीवन का साहित्यिक दस्तावेज है बल्कि एक व्यक्ति के विचारों पर लेखक की प्रतिक्रिया भी है।

1.5 **'त्रिशंकु'(मराठी उपन्यास-'त्रिशंकू')**

जब से हम खुद को जानते हैं, तब से हम एक आदर्श के रूप में इस मध्यम वर्ग के पीछे दौड़ रहे हैं। जब से हम अपनी सभी पृष्ठभूमियों, संदर्भों और बाधाओं को तोड़ते हुए इस कक्षा में प्रवेश करने के लिए अधीर थे। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन इस वर्ग ने अभी तक हमें स्वीकार नहीं किया है। लेकिन हमने उनके विचारों और तौर-तरीकों को आत्मसात कर लिया है। साथ ही साथ हर कोई इस वर्ग के साथ-साथ चलना चाहता है किंतु यह वर्ग हमें स्वीकार करने से मना करता है।

हम जैसे सभी दलित कवि किसके लिए लिखते हैं? वे किसकी प्रशंसा की सबसे अधिक लालसा करते हैं? यह कैसी त्रासदी है? लेकिन इसमें त्रासदी क्या है? क्या विरोधाभास अपरिहार्य नहीं है? दो संस्कृतियों के बीच संघर्ष में जो संस्कृति अधिक प्रभावशाली और अच्छी तरह से शिक्षित होती है, वह जीत जाती है।

यहां हमारी लड़ाई मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग से है। और हम उनके मूल्यों और परंपराओं को उठा रहे हैं। और यह अपरिहार्य है। इसमें दुखी होने की क्या बात है? कोई दुख नहीं। लेकिन हमारी समस्या यह है कि हम बीच में ही फंस गए हैं। हमने अपनी जड़ें काट लीं और यहां इस दुनिया में शाखाएं फैला दीं। हमारे समाज का समर्थन छोड़ दिया और इस समाज ने अभी तक हमें दहलीज से प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी है। हमारे मन ने इस नई संस्कृति को स्वीकार किया है

लेकिन यह अभी भी पूरी तरह से आत्मसात नहीं हुआ है। और हमारी पीढ़ियों के खून में निहित पारंपरिक विचार हमें पीछे नहीं छोड़ते।

भारत जैसे बहुसंस्कृति वाले देश में संस्कृति एवं सामाजिक विषमताओं, धर्मभेद के बीच दलित समाज की स्थितियाँ हर जगह लगभग एक जैसे ही रही है। भारतीय समाज व्यवस्था में दलित वर्ग समाज से बहिष्कृत रहा है। हजारों सालों से दलितों पर होने वाले अन्याय, अत्याचार, मनुष्य होते हुए भी उनके साथ पशु जैसा व्यवहार करना देखकर सहज ही हमारा मन विचलित हो जाता है। यहाँ इनकी रचनाओं के हिंदी अनुवाद द्वारा महाराष्ट्र दलित संस्कृति का परिचय हिंदी साहित्य जगत को करने का प्रयत्न किया गया है।

मराठी से हिंदी में अनुदित साहित्य को ध्यान में लेते हुए कहा जा सकता है कि-मराठी की बहुचर्चित रचनाओं के अनुवाद हिंदी में हुए हैं। सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, आँचलिक, ग्रामीण, दलित आदि सभी प्रकार के उपन्यासों के अनुवाद हिंदी में हुए हैं।

दलित और आँचलिक साहित्य के अनुवाद हिंदी साहित्य के लिए नयी उपलब्धि मानी जा सकती है। 'महानंदा' और 'देवदासी' उपन्यासों के अनुवाद ने हिंदी जगत को देवदासी प्रथा से परिचित कराया। ' फकीरा' और 'हिंदू' उपन्यासों के माध्यम से उनकी संस्कृति, रीति-रिवाज और उनकी स्थिति से परिचित कराया है।

समय के अनुसार उपन्यासों की भाषा में परिवर्तन दिखाई देता है। पहले साहित्यिक भाषा का प्रयोग होता था अब बोलचाल की भाषा का प्रयोग होने लगा है।

दलित साहित्य में आत्मकथा ज्यादा लिखी गई हैं। 'बलुत' तथा 'उचल्या' को आत्मकथात्मक उपन्यास माना गया है और अनूदित दलित उपन्यासों की संख्या बहुत कम हैं।

उपरोक्त सभी प्रकार के अनुवादकों का अनुवाद कार्य हिंदी के लिए उपादेय रहा है।

## 1.6. मूल उपन्यासकार और अनुवादकों का परिचय

शरणकुमार लिंबाले मराठी दलित साहित्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। वे मराठी दलित लेखकों में एक समर्थ प्रतिभा संपन्न, महान लेखक के रूप में विख्यात हैं। शरणकुमार लिंबाले मराठी के कवि, लेखक और आलोचक हैं। इनकी मराठी में 40 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनकी आत्मकथा 'अक्करमाशी' बहुत प्रसिद्ध कृति है। इसका विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी हो चुका है। इस आत्मकथा के बाद ना केवल मराठी साहित्य में आत्मकथा लेखन की बाढ़ आ गई। बल्कि दूसरी भाषाओं में भी दलित आत्मकथा लिखी जाने लगी है।

उनका लेखन समाज को बदलाव के लिए प्रेरित कर रहा है। इनकी कई महत्वपूर्ण कृतियों का चारो ओर स्वागत हो रहा है। ज्यादातर भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं में अनुवाद भी हो रहा है।

उनकी आत्मकथा ने दलित साहित्य में प्रवर्तन का काम किया है । उन्होंने अनेक यातनाओं को झेल कर जो कुछ लिखा है उसे न सिर्फ पढ़ा जा रहा है बल्कि उनसे प्रेरित होकर बहुत से दलित साहित्यकार आत्मकथा लिखने को विवश हुए हैं । इनका दलित साहित्य न सिर्फ मराठी भाषी लोगों के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं बल्कि सभी भारतीय भाषाओं के लेखकों को भी दलित साहित्य लिखने के लिए प्रेरित करता है ।

अरुण साधु एक पत्रकार, लेखक और शिक्षक थे । महाराष्ट्र में अमरावती के पास जन्मे और अमरावती और नागपुर में शिक्षा ग्रहण कर साधु ने अपने लेखन में ग्रामीण और शहरी महाराष्ट्र की संस्कृति और राजनीति को प्रस्तुत करने की कोशिश की है । उनकी रचनाओं में हाशिए के लोगों की पीड़ा और पाखंड को व्यक्त करने की वाक्पटुता परिलक्षित होती है । उन्होंने लघु कथाओं के पांच संग्रह, 11 उपन्यास और मराठी में एक नाटक लिखा । उन्होंने समकालीन महाराष्ट्र के शहरी और ग्रामीण जीवन की कई परतों की खोज की ।

अरुण साधु को उनके लेखन के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित कई सम्मान मिले । उन्हें 2007 में अखिल भारतीय मराठी महासम्मेलन का अध्यक्ष चुना गया था ।

मराठी तथा हिंदी अनूदित साहित्य में डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे का नाम आदर से लिया जाता है । डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे एक सुप्रतिष्ठित अनुवादक, लेखक, समीक्षक, सहलेखक तथा विचारक रहे हैं । उन्होंने भारतीय संविधान के शिल्पकार

बोधिसत्व डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर की जीवनी का लेखन किया है। इन सभी में उन्होंने अनुवाद के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे ने अपने साहित्य और विचारों के माध्यम से एक शोषणमुक्त समाज के निर्माण की परिकल्पना की है।

निशिकांत ठकार हिंदी और मराठी के विख्यात दो-तरफा समीक्षक और अनुवादक हैं। अब तक उनकी 60 से भी ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जिनमें अनुवादों की संख्या अधिकतम है।

प्रकाश भातंब्रेकर मराठी और हिंदी के अनुवादकों में से एक है।। विगत चार दशकों में अनुवाद कार्य से इनका संबंध है। पचास से अधिक मराठी पुस्तकों, अनेक कहानियों तथा उनकी ही कविताओं का हिंदी से मराठी में अनुवाद किया हैं। इन्हें  केंद्र सरकार, भारतीय अनुवाद परिषद्, दिल्ली, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी सहित अन्य संस्थाओं द्वारा भी सम्मानित किया गया हैं।

मूल उपन्यासकारों और अनुवादकों का परिचय विस्तार रूप से आगे देख सकते हैं-

### 1.6.1 मूल उपन्यासकार

#### 1.शरणकुमार लिंबाले

जन्म- 1 जून 1956 में हुआ है।

शिक्षा- बी.ए. अंग्रेजी माध्यम से 1978 में हुआ है।

एम.ए.मराठी में 1990 में हुआ है।

पी-एच.डी. मराठी में 1996 शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

व्यवसाय- डायरेक्टर, विद्यार्थी कल्याण विभाग, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नाशिक महाराष्ट्र।

- रचना संसार
- कविता

1.उत्पाद-1902

2.श्वेतपत्रिका-1989

- कहानी-संग्रह

1.बारामाशी-1988

2.हरिजन-1988

3 रथयात्रा-1993

4.दलित ब्राम्हण-2006

5.छुआछूत-2008

- **आत्मकथा**

1.अक्करमाशी-1984

2. राणीमाशी-1992

- **मराठी संपादक कार्य**

दलित प्रेम कविता 1986, दलित पैंथर 1989, दलित चळवळ 1991, दलित साहित्य 1991, प्रशासूर्य 1991, भारतीय रिपब्लिकन पक्ष 1992, मराठी वाडम्यातील नवीन प्रवाह 1993, विवाहबाह्य संबंधी दृष्टिकोण 1994, गावकुसा बाहेरील कथा 1997, जानगंगा घरोघरी 2000, शतकातील दलित विचार 2001, साठोतरी मराठी वाड्मय प्रवाह-2006.

- **उपन्यास**

1.देवता आदमी-1994

2.नरवानर-2003

3. बहुजन-2003

4.हिंदू-2004

- **'अक्करमाशी' आत्मकथा का अनेक भाषाओं में अनुवाद -**

1.अंग्रेजी में Oxford University Press, New Delhi & USA

2.कन्नड में नव कर्नाटक प्रकाशन बंगलोर 'आक्रम संतान'(1992) द्वारा प्रकाशित।

3.हिंदी में 'अक्करमाशी'(1991) नाम से प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित।

4.पजाबी में 'अक्करमाशी'(1991) नाम से लोकगीत प्रकाशन, जालंधर से प्रकाशित।

5.तमिल में ‘अक्करमाशी’(2003) नाम से वाडियले पाथीपगम फोईमतूर से प्रकाशित।

6.मलयालम में ‘अक्करमाशी’(2005) नाम से मातृभूमि प्रकाशन, कोसीकोड़े से प्रकाशित।

7.हिंदी अनुवाद दिल्ली से ‘संचेतना’ मासिक पत्रिका से प्रकाशित।

8.अक्करमाशी हिंदी अनुवाद का कन्नड़ में नाट्य रूपांतर हुआ है।

- **अंग्रेजी साहित्य**

द आउटकास्ट (2003), टू बर्डस ऑन अस्थिटिक्स ऑफ़ दलित लिटरेचर (2004)

- **साहित्य सम्मान**

1.‘अक्करमाशी’ (मराठी) महाराष्ट्र शासन राज्य पुरस्कार-1985

2.‘अक्करमाशी’ (अंग्रेजी) हच-क्रासवर्ड अवार्ड-2004

- **समीक्षा**

1.दलित साहित्य का सौदर्यशास्त्र-1996

2. साहित्याचे निष्कर्ष बदलावे लागेल-2005

3.ब्राह्मण-2006

**2.अरुण साधू**

जन्म नाम - अरुण मार्तण्डराव साधू।

जन्म-17 जून, इ.स.1941 परतवाडा, अमरावती।

मृत्यू-25 सप्टेंबर, इ.स.2017,मुंबई।

शिक्षा-गणित और भौतिकशास्त्र पदवी

कार्यक्षेत्र-पत्रकारिता मराठी साहित्य

भाषा- मराठी और अंग्रेजी

- **उपन्यास**

1.झिपया

2.तडजोड

3.त्रिशंकू

4.बहिष्कृत

5. मुख

6.मुंबई दिनांक

7. विप्लव

8.शुभमंगल

9.सिंहासन

- **कथासंग्रह**

1. एक माणूस उडतो त्याची गोष्ट

2. कथा युगभानाची (निवडक कथा- संपादिका मीना गोखले)।

3. ग्लानिर्भवति भारत

4. बिनपावसाचा दिवस

5. बेचका आणि आकाशाशी स्पर्धा करणाऱ्या इमारती

6. मंत्रजागर

7. मुक्ति

- **नाटक**

1.पडघम

- **ललित लेखन**

1.अक्षांश-रेखांश

2.तिसरी क्रांति

3.सभापर्व

4.सहकरधुरीन

- **समकालीन इतिहास**

1.आणि ड्रगन जागा झाला

2.जेंव्हा ड्रगन जागा होतो

3.फिडेल चे आणि क्रांति

- **पुरस्कार आणि सन्मान [संपादन]**

1.अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मलेन के अध्यक्ष- नागपूर

2.कुसुमाग्रज प्रतिष्ठान का जनस्थान पुरस्कार (फरवरी-2015)

3.अमेरिका महाराष्ट्र फाउंडेशन का जीवनगौरव पुरस्कार (जानेवरी-2017)

**1.6.2 अनुवादक**

**1. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे**

सूर्यनारायण रणसुभे का जन्म 7 अगस्त 1942 को पुराने हैदराबाद रियासत के जिला गुलबर्गा में हुआ हैं।

**अनुवादक का रचना संसार-**

सूर्यनारायण रणसुभे द्वारा अनूदित ग्रंथों की सूची

सृजनात्मक साहित्य: मराठी से हिंदी में

1) आठवणीचे पक्षी आत्मकथा, श्री प्र.ई. सोनकांबले यादों के पंक्षी श्री राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1983

2)अक्करमाशी: आत्मकथा श्री शरण कुमार लिंबाले

अक्करमाशी प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1991

3. उचल्या आत्मकथा श्री लक्ष्मण गायकवाड़

उठाईगीर साहित्य अकादमी दिल्ली 1995

4)साक्षीपुरम: नाटक, श्री रामनाथ चव्हाण साक्षीपुरम प्रभात प्रकाशन दिल्ली 1991

5) बामणवाडा नाटक श्री रामनाथ चव्हाण बामनवाडा वाणी प्रकाशन, दिल्ली 2004

6. हिंदू – उपन्यास, डॉ.शरणकुमार लिंबाले, वाणी प्रकाशन, दिल्ली 2004

7. बहुजन - उपन्यास, डॉ.शरणकुमार लिंबाले, वाणी प्रकाशन दिल्ली 2004

**हिंदी से मराठी में -**

1.झूठ सच उपन्यास, यशपाल

2.खोटं सत्य: साहित्य अकादमी दिल्ली, 2004

**वैचारिक साहित्यःमराठी से हिंदी में**

1.समाज परिवर्तनाच्या दिशा. डॉ. जे. एम. वाघमारे

समाज परिवर्तन की दिशाएं विकास प्रकाशन कानपुर 1998

2.भारतीय मुसलमानांची मानसिकता आणि सामाजिक संरचना प्रा. एफ. एच. बेन्नूर

3.भारतीय मुसलमानों की मानसिकता और सामाजिक संरचना: पहल प्रकाशन, जबलपुर

**हिंदी से मराठी में**

1.मार्क्सवादानंतर एजाज अहमद, लोकवाड:मय प्रकाशन मुंबई

2.उज्ज्वल उद्यासाठी रमेश उपाध्याय, लोकवाड मय प्रकाशन, मुंबई

**साहित्यशास्त्व हिंदी से मराठी में**

1.संरचनावाद उत्तर संरचनावाद और प्राच्य काव्यशास्त्र

श्री गोपीचंद नारंग, साहित्य अकादमी, दिल्ली 2005

**अंग्रेजी से हिंदी में**

1.Indian Writingin English, Dr. Bhalchandra Nemale आलोचना, दिल्ली 2003.

(अनुवादित पृष्ठों की कुल संख्या: 2933)

**संपादन: हिंदी**

1.दलित कहानियाँ (17 दलित कहानियों का संग्रह) डॉ. कमलाकर गंगावण के साथ, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1981

2.डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे जी का हिंदी मराठी में प्रकाशित लेखन

**समीक्षा: हिंदी**

1.कहानीकार कमलेश्वर संदर्भ और प्रकृति, पंचशील प्रकाशन- जयपुर, 1977

2. आधुनिक मराठी साहित्य का प्रवृत्तिमूलक इतिहास ग्रंथम, कानपुर,1976

3.देश-विभाजन और हिंदी कथा-साहित्य विकास प्रकाशन, कानपुर, 1987

4.जीवनीपरक हिंदी साहित्य यशवंतराव चव्हान मुक्त विद्यापीठ-नासिक, 2002

5.उन्नीसवीं सदी और हिंदी साहित्य: यशवंतराव चव्हान मुक्ता विद्यापीठ नासिक, 2002

6. बीसवीं सदी और हिंदी साहित्य: यशवंतराव चव्हान मुक्त विद्यापीठ, नासिक, 2002

7. प्रादेशिक भाषा और साहित्येतिहास: लातूर जिला हिंदी साहित्य परिषद्, लातूर, 2004

8.आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास विकास प्रकाशन, कानपुर, 2005

9. दलित साहित्य स्वरुप और संवेदना: अमीत प्रकाशन, के. वी. 97.कविनगर, गाजियाबाद, 2009

10. पत्रकार डॉ. भीमराव अम्बेडकर: माखनलाल चतुर्वेदी, पत्रकारिता वि. वि. भोपाल

**सम्मान**

1.'आठवणींचे पक्षी' के अनुवाद हेतु भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की ओर से 'यादों के पंक्षी' अनुवाद पर 1984 में राष्ट्रीय पुरस्कार।

2.महाराष्ट्र राज्य हिंदी अकादमी द्वारा मराठी भाषी हिंदी लेखक के रूप में गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार 1989 में।

3.हैदराबाद हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद 'साहित्य वाचस्पति' उपाधि प्रदान।

4.महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा में अतिथि प्राध्यापक।

5.2007 में कराची (पाकिस्तान) में आयोजित बाबासाहेब अम्बेडकर जयंती के अवसर पर प्रमुख वक्ता के रूप में निमंत्रित।

**2.निशिकान्त ठकार**

जन्म 11 जून, 1985, पंढरपुर

शिक्षा: एम.ए. हिन्दी, संस्कृत, मराठी फिल्म एप्रिसिएशन कोर्स, फिल्म एण्ड टेलीविजन संस्थान, पुणे।

लगातार 39 वर्षों तक हिन्दी अध्यापन, 19 वर्षों का स्नातकोत्तर अध्यापन अनेक कृतियों का हिन्दी से मराठी और मराठी से हिन्दी में अनुवाद।

**साहित्य सम्मान**

1. साहित्य अकादमी, दिल्ली का अनुवाद पुरस्कार।

2. महाराष्ट्र राज्य हिन्दी अकादमी का मामा वरेरकर अनुवाद पुरस्कार।

**अन्य सम्मान**

सम्प्रति स्वतंत्र लेखन कार्य, सदस्य, हिन्दी पाठ्यक्रम समिति, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नासिक।

आवरण- रेनू चौधरी प्रगतिशील, संभावनाशील एवं स्वप्रशिक्षित युवा चित्रकार विभिन्न रंगों का उतार-चढ़ाव और चित्रों का संकलन रेनू के सरल, प्रभावी और आधुनिक दृष्टिकोण को दर्शाता है। कम्प्यूटर ग्राफिक्स में कुशलता प्राप्त।

**3.प्रकाश भातम्ब्रेकर**

जन्म : 1947

शिक्षा : मराठवाडा विश्वविद्यालय से बी.एस.सी.(BSC), कोल्हापुर विश्वविद्यालय से हिंदी विषय में बी.ए .(BA) और राजस्थान विश्वविद्यालय से एम.ए. (MA) किया है |

**मराठी से हिंदी में अनुवाद**

1. पांगिरा
2. लाव्हा
3. स्वर सम्राट दीनानाथ मंगेशकर
4. त्रिशंकू

**सम्मान**

1. महाराष्ट्र हिन्दी साहित्य अकादमी और हिंदी प्रचार सभा सहित अन्य संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया हैं |
2. हिंदी भाषा में उल्लेखनीय काम के लिए उत्तर प्रदेश के हिंदी संस्था की ओर से दिया जाने वाला दो लाख रुपयों से सम्मानित किया गया |

**निष्कर्ष**

अंत में सारांश में कह जा सकता है कि मराठी-हिंदी के दलित उपन्यास अम्बेडकवाद से प्रभावित हैं। ये रचनाएँ पाठकों में एक नई चेतना निर्माण कर उन्हें प्रेरणा देने का काम करती हैं। दलित साहित्य के मानदंडों की दृष्टि से इन उपन्यासों में लेखकों ने ‘आंबेडकवादी’ तत्त्वों को संप्रेषित करने का सफल प्रयास किया है, जो निश्चित रूप से सराहनीय है। यह उपन्यास डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी के विचारों

को विश्व धरातल पर संप्रेषित करने में सक्षम हैं। दलित साहित्य में अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यासों का सृजन बहुत कम हुआ है। इसलिए दलित उपन्यासों की दृष्टि से यह प्रारंभिक काल माना जा सकता है। दलित लेखक अब लिख रहे हैं, अभिव्यक्त हो रहे हैं। इसलिए उनकी भाषा में भले ही अलंकार रस, छंद आदि नहीं होंगे, लेकिन उनके पास शब्द हैं, जो उनकी भावनाओं को ही शब्दों के माध्यम से व्यक्त कर रहे हैं। यह बात दलित उपन्यासों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, जो इस विधा के विकास में सहायक सिद्ध हो सकती है।

# द्वितीय अध्याय

# मराठी से हिंदी में अनुवाद की सामान्य समस्याएँ

# द्वितीय अध्याय

# मराठी से हिंदी में अनुवाद की सामान्य समस्याएँ

हिंदी भारत की केवल राजभाषा ही नहीं, राष्ट्रभाषा भी है और देशीय संस्कृतियों के लिए संपर्क भाषा भी बनी हुई है। भारतीय भाषाओं का साहित्य श्रेष्ठ कृतियों के अनुवादों से समृद्ध हो रहा है। अंग्रेजी में जिस तरह विश्व की श्रेष्ठ कृतियों के अनुवाद उपलब्ध हो जाते हैं लगभग उसी तरह अब हिंदी में भारतीय भाषाओं के अनुवाद उपलब्ध हो रहे हैं। इसलिए हिंदी से मराठी में आने वाले साहित्य की अपेक्षा मराठी से हिंदी में आने वाले साहित्य पर विचार आवश्यक है क्योंकि अपनी भाषा के साहित्य एवं संस्कृति को हिंदी के माध्यम से अन्य भाषा-भाषी राज्यों को ज्ञात करने के उद्देश्य से मराठी भाषी हिंदी अनुवादक प्रयत्नशील रहे हैं।

मराठी भाषी हिंदी अनुवादकों द्वारा किये गये अनुवाद कार्य का स्वरुप बहुआयामी है। अनुवाद के माध्यम से मराठी-हिंदी के परस्पर संबंध को दृढ़ बनाने में अनुवादकों ने असाधारण योगदान दिया है। कमोवेश रूप से अनुवाद के माध्यम से आदान-प्रदान का क्षेत्र व्यापक बनाया है। मराठी भाषी हिंदी अनुवाद की विशिष्ट स्थिति से भली-भाँति अवगत रहा है।

मराठी-हिंदी में परस्पर विचार-विनिमय की प्रक्रिया प्राचीन काल से गतिमान रही है। मराठी-हिंदी का मूल स्त्रोत आर्यभाषा संस्कृत है। दोनों का सम्बन्ध भाषा सहोदर का है। फलस्वरूप दोनों भाषाओं में मूलभूत एकता है। दोनों की लिपि भी

देवनागरी रही है। शब्द-संपदा एवं शब्द, रूप, वाक्य रचना, अर्थपरकता, ध्वनि संयोजन आदि के संदर्भ में भी पर्याप्त मात्रा में समानता है।

इसका यह अर्थ नहीं है कि इन दोनों भाषाओं में लाक्षणिक भेद नहीं है। प्राय: इनमें कुछ हद तक भेद भी है। भेद होते हुए भी दोनों भाषाएँ भारतीय है। भाषाओं के संदर्भ में दोनों का अपना-अपना महत्त्व है तथा दोनों प्रादेशिकता के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास चक्र की परिधि पर कार्यशील हैं। इसलिए दोनों के साहित्य का एक दूसरे में अनूदित होना आवश्यक है। मराठी को अपनी प्रादेशिक भाषाई विशिष्टताओं और सांस्कृतिक, सामाजिक, व्यावहारिक चेतना बिंदुओं सहित हिंदी जैसी उत्तर भारतीय भाषा के साथ संपर्क बनाये रखना आवश्यक है और हिंदी को प्रादेशिक भाषाओं तक पहुँचकर अपने बृहत्तर संदर्भ में सार्थकता प्रमाणित करना जरुरी है। सारांश रूप में कहा जाए तो मराठी साहित्य के माध्यम से हिंदी भाषा-भाषी, मराठी संस्कृति और सभ्यता समझ सकते हैं।

## 2.1.अनुवाद की परिभाषा एवं उसका महत्त्व

अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के ‘वद्’ धातु से हुई है। ‘अनुवाद’ का शाब्दिक अर्थ है ‘पुन:कथन’ अर्थात किसी कही गई बात को फिर से कहना। यह भी कहा जा सकता है कि एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में ज्यों का त्यों प्रकट करना ही अनुवाद है। अनुवाद एक साहित्यिक विधा है। अनुवाद में मूलत: किसी एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना बड़ा ही कठिन कार्य होता है, क्योंकि प्रत्येक भाषा का अपना महत्त्व एवं स्वरूप होता है, उसकी

अपनी निजी-ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य तथा अर्थमूलक विशेषताएँ होती हैं। कभी-कभी स्रोत भाषा का कथ्य लक्ष्य भाषा में अपेक्षाकृत विस्तृत, कहीं संकुचित और कहीं भिन्नरूपी हो जाता है। अनुवाद में दो भाषाओं का होना जरूरी है। इन दोनों भाषाओं को अनुवाद विज्ञान में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की संज्ञा दी गई है। जिस भाषा की सामग्री अनूदित होती है वह स्रोत भाषा कहलाती है और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है वह लक्ष्य भाषा कहलाती है।

डॉ.भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद की परिभाषा इस प्रकार दी है, “एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।”[3]

**प्रो. गोपीनाथन**

“अनुवाद एक प्रकार से दो संस्कृतियों के बीच सांस्कृतिक सेतु का महत्वपूर्ण कार्य करता है।”[4]

**डॉ.रवींद्रनाथ श्रीवास्तव**

“एक भाषा (स्रोत भाषा) की पाठ सामग्री में अंतर्निहित तथ्य का समतुल्यता के सिध्दांत के आधार पर दूसरी भाषा (लक्ष्य) में संगठनात्मक रूपांतरण अथवा सर्जनात्मक पुनर्गठन को ही अनुवाद कहा जाता है।”[5]

[3]‘अनुवाद समझें और करें’,डॉ.बिचार दास ‘सुमन’,पृ.सं.12
[4]‘अनुवाद समझें और करें’,डॉ.बिचार दास ‘सुमन’,पृ.सं.12
[5]‘अनुवाद शिल्प समकालीन संदर्भ’,डॉ.कुसुम अग्रवाल,पृ.सं.37

**कैटफर्ड**

"अनुवाद एक भाषा के पाठ्यपरक उपादानों का दूसरी भाषा के रूप में समतुल्यता के सिध्दांत के आधार पर प्रतिस्थापन है।"[6]

**सॉम्युअल जॉन्सन**

"अनुवाद मूल भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना हैं।"[7]

सारांश रूप में कहा जाए तो अनुवाद मूल भाषा की सामग्री के भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना है। अर्थात यह एक भाषांतर की प्रक्रिया है और गंभीरता से किया जाने वाला प्रयास है।

'आज की दुनिया में अनुवाद का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। सारी दुनिया को एक करने, मानव-मानव को एक दूसरे के निकट लाने में, मानव जीवन को अधिक सुखी और संपन्न बनाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह एक बहुत बड़ी सच्चाई है कि मनुष्य को परस्पर विभाजित करने वाली शक्तियों में भाषाओं की अनेकता की अहम् भूमिका रही हैं।'भाषाओं की अनेकता' मनुष्य को एक दूसरे से अलग ही नहीं करती, उसे कमजोर, ज्ञान की दृष्टि से निर्धन और संवेदन शून्य बनाती है। अपने देश को ही लें यदि हमारे यहाँ इतनी भाषाएँ न होती तो राष्ट्रीय एकता की समस्या इतनी जटिल न होती जितनी की आज है।'[8]

---

[6]अनुवाद की परिभाषाएँ,prakashblog.google.blogspot.com

[7]अनुवाद की परिभाषाएँ,prakashblog.googel.blogspot.com

[8]'अनुवाद क्या है',सं.डॉ.भा.ह.राजूरकर,डॉ.राजमल बोरा,पृ.सं.28

अनुवाद आज व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता बन गया है। आज के सिमटते हुए संसार में सम्प्रेषण-माध्यम के रूप में अनुवाद भी अपना निश्चित योगदान दे रहा है। एक भाषा-भाषी समुदाय में परस्पर संपर्क-साधन तथा विचार-विमर्श के लिए भाषा का व्यवहार किया जाता है, किन्तु दो भिन्न भाषा-भाषी समुदायों के बीच विचारों के आदान-प्रदान के लिए अनुवाद की सहायता लेनी पड़ती है।

अनुवाद मानव की मूलभूत एकता, व्यक्तिचेतना एवं विश्वचेतना के अद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण है। विश्व संस्कृति के निर्माण की प्रक्रिया में विचारों के आदान-प्रदान का योगदान रहा है और यह अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो सका है। बीसवीं शताब्दी में अनुवाद को जो महत्त्व प्राप्त हुआ है। वह उससे पहले नहीं मिला था। इसी कारण इस सदी को अनुवाद युग कहा जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि बीसवीं शताब्दी में ही भिन्न भाषाभाषी समुदायों में संपर्क की स्थिति प्रमुख रुप से उभर कर आयी। इसका मूल कारण आर्थिक और राजनीतिक है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राष्ट्रों के बीच राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक तथा साहित्यिक और सांस्कृतिक स्तर पर बढ़ते हुए आदान-प्रदान के कारण अनुवाद कार्य की अनिवार्यता और महत्ता को नई दिशा प्राप्त हुई है। इस कारण अनुवाद एक व्यापक तथा एक सीमा तक अनिवार्य और तर्कसंगत स्थिति है।

सामाजिक संदर्भ में अनुवाद व्यापार अनौपचारिक परिस्थितियों में होता है। इसका संदर्भ द्विभाषिकता की स्थिति से है। इसका सामान्य अर्थ है कि हम एक समय में दो भाषाओं का वैकल्पिक रुप से प्रयोग करते हैं। यानी हम एक भाषा(मातृभाषा) में सोचते हैं परंतु उसे दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। इस

स्थिति में अनुवाद प्रक्रिया का होना अनिवार्य है । इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अनौपचारिक रुप से अनुवादक होते हैं। इस दृष्टि से अनुवाद व्यापार अनौपचारिक स्थिति में होता है। इसके दो भेद हैं - साधन रूप में अनुवाद और साध्य रूप में अनुवाद। साधन रूप में अनुवाद का प्रयोग भाषा शिक्षण की एक विधि के रूप में किया जाता है। साध्य रूप में अनुवाद अनेक क्षेत्रों में दिखाई देता है।

## 2.2 अनुवाद के प्रकार

आज का युग अनुवाद का युग है। अनुवाद ही साहित्य की एक ऐसी विधा है जो संभवता: आधुनिक युग का सर्वाधिक चर्चा का विषय है । आज हिंदी में तकनीकी, व्यावसायिक, सूचनापरक और साहित्यिक सभी प्रयुक्तियों के स्तर पर अनुवाद अनिवार्य बन गया है। अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन सर्वेक्षण ने भी यही सिद्ध किया कि आज हम अनुवाद के युग में जी रहे है। विश्व की समस्त प्रमुख भाषाएँ परस्पर अनुवाद करती रहती हैं। आज अनुवाद में प्रौद्योगिकी का आश्रय लिया जा रहा है, जिससे यह अनुमान होता है कि अनुवाद बीसवीं सदी की संतान है किन्तु यह मान्यता निराधार है क्योंकि अनुवाद की परंपरा तो अत्यंत प्राचीन काल से ही चली आ रही है। भले ही उसका स्वरुप वह न रहा हो जो आज है। यदि मानवता की परंपरा संस्कृति की परंपरा है तो भाषा और साहित्य उसके संवाहक हैं।

स्रोत भाषा में लिखित साहित्यिक पाठ को लक्ष्य भाषा में अनुवाद करने को साहित्यिक अनुवाद कहते हैं। साहित्य की विधाओं में कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण आदि शामिल हैं। साहित्यिक कृतियों का

अनुवाद, सामान्य अनुवाद से उच्चतर माना जाता है। साहित्यिक अनुवादक कार्य के सभी रूपों जैसे भावनाओं, सांस्कृतिक बारीकियों, स्वभाव और अन्य सूक्ष्म तत्वों का अनुवाद करने में भी सक्षम होना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं कि साहित्यिक अनुवाद वास्तव में संभव नहीं है।

अनुवाद की संभावनापूर्ण सफलता की दिशा में भी कुछ सोच सकते हैं। मूल भाषा की रचना में प्रयुक्त मिथक, प्रतीक, मुहावरे, कहावतें, लोकोक्तियाँ आदि में कुछ ऐसा ही होता है जो परंपरा से अनुवाद की भाषा में भी उपलब्ध होता है, चाहे वह मूल भाषा के बिल्कुल समान न हो पर उससे समानता रखने वाला अवश्य होता है। अनुवादक इसका प्रयोग कर एक सशक्त अनुवाद दे सकता है।

डॉ. इंद्रनाथ चौधरी के अनुसार साहित्यिक अनुवाद न तो पूरी तरह अनुकरण है और न ही पूरी तरह सृजन है- "अनुवादक तो कृति के अनुसार सृजन करता है, मगर कृति में निहित विचारों को मात्र प्रस्तुत नहीं करता। उसको रूपांतरित करता है। अनुवादक एक प्रकार का सृष्टा है जो लेखक के यथार्थ के सम्मुख अपने को समर्पित करता है।"[9]

साहित्यिक विधाओं के आधार पर तो अनुवाद के अनेक प्रकार किए जा सकते हैं किन्तु मुख्य तीन प्रकार हैं ,जैसे- 1.काव्यानुवाद 2.नाट्यानुवाद 3.कथानुवाद।

[9]'अनुवाद क्या है',सं.डॉ.भा.ह.राजूरकर,डॉ.राजमल बोरा,पृ.सं.117

## 1.काव्यानुवाद:-

किसी काव्य-रचना का अनुवाद काव्यानुवाद कहलाता है। यह अनुवाद गद्य, पद्य या मुक्त छंद किसी में भी हो सकता है। यह प्राय: काव्य का अनुवाद पद्य या मुक्त छंद में ही किया जाता है। यह प्रश्न विवाद का रहा है कि काव्य का अनुवाद हो भी सकता है या नहीं। स्पष्ट ही, काव्यानुवाद होते रहे हैं, अत: अनुवाद हो सकते हैं। हाँ, यह अवश्य है कि शैली और अर्थ दोनों ही दृष्टियों से मूल का अनुगामी सफल अनुवाद करना कठिन है। कभी-कभी तो यह इतना कठिन होता है कि असंभव की सीमा को छू लेता है। इसलिए इसका अनुवाद करना कठिन कार्य है।

काव्यानुवाद असंभव नहीं है, कठिन अवश्य है। इसकी कठिनाई को अनेक अनुवादकों ने अनेक तरह से स्वीकार किया है, जैसे, जार्ज बोरो का कहना है कि "अनुवाद अपने श्रेष्ठतम रूप में एक प्रति ध्वनि है।"[10] या फिर श्री राजशेखर दास का कथन यह है कि "कविता का अनुवाद कितना ही सुंदर क्यों न हो, वह केवल मूल के विचारों पर आधृत एक नई कविता ही हो सकती है।"[11]

## 2.नाटकानुवाद

किसी नाटक का नाटक के रूप में अनुवाद करना ही नाटकानुवाद होता है। अन्य साहित्यिक विधाओं के भी नाटक रूप में अनुवाद हो सकते हैं और इसके ठीक विपरीत नाटक के भी काव्य या कहानी के रूप में अनुवाद होते हैं। नाटक का नाटक में रूपांतरण करना काफी कठिन कार्य होता है, क्योंकि उसे पठनीय होने के

[10] 'अनुवाद मूल्य और मूल्यांकन',डॉ.शशि मुदीराज,पृ.सं.17

[11] 'अनुवाद मूल्य और मूल्यांकन',डॉ.शशि मुदीराज,पृ.सं.17

साथ-साथ ऐसा होना चाहिए कि रंगमंच पर खेला भी जा सके। इसलिए रंगमंच की सारी आवश्यकताओं तथा विशेषताओं का जानकार ही सफल नाट्यानुवाद कर सकता है।

**3.कथानुवाद**

कथा साहित्य का कथा साहित्य में अनुवाद करना ही कथानुवाद होता है। इस श्रेणी का अनुवाद काव्यानुवाद तथा नाटकानुवाद की तुलना में सरल होता है। इस आधार पर कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, रेखाचित्र, निबंध, संस्मरणानुवाद आदि इसके कई प्रकार हो सकते हैं।

अनुवाद की प्रकृति के आधार पर भी अनुवाद के अनेक प्रकार हैं। जैसे- 1.शब्दानुवाद 2.भावानुवाद 3.छायानुवाद 4.सारानुवाद 5.व्याख्यानुवाद 6.वार्तानुवाद 7.रूपान्तर आदि।

**1. शब्दानुवाद**

अनुवाद के क्षेत्र में शब्दानुवाद को उच्च कोटि की श्रेणी में नहीं रखा जाता किन्तु अनुवाद प्रक्रिया में ऐसे अनेक बिन्दु आते हैं जब शब्दानुवाद के अलावा कोई विकल्प नहीं रह जाता। शब्दानुवाद वैसे भी भावानुवाद के लिए पूरक तत्व के रूप में काफी महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। शब्दानुवाद में शोध भाषा के शब्दों को ज्यों-का-त्यों लक्ष्य भाषा में परिवर्तित करके अनुवाद किया जाता है। अर्थात इसमें मूल पाठ या सामग्री की प्रत्येक शब्दाभिव्यक्ति का अनुवाद प्राय: उसी क्रम में किया

जाता है। इसलिए अनुवाद के इस प्रकार को निकृष्ट कहा जाता है क्योंकि प्रकृति भिन्न होने के साथ ही प्रत्येक भाषा का शब्द्क्रम भी भिन्न-भिन्न होता है।

**2.भावानुवाद:-**

हिंदी में रचित अनुवाद-अध्ययन संबंधी साहित्य में लगभग सभी लेखकों ने भावानुवाद की चर्चा की है। कहीं-कहीं ऐसा भी प्रतीत होता है कि मानो भावानुवाद सही या निम्न दर्जे का अनुवाद हो। इन लेखको के दृष्टिकोण भी मूलतः एक जैसे हैं , यदि अंतर है तो व्याख्या की अभिव्यक्ति में । जैसे कि डॉ.रीतारानी पालीवाल भावानुवाद को अर्थविज्ञान के अधिक निकट मानती हैं और उनका विचार है कि इसमें मूल अर्थ की संपूर्णता बनी रहती है तथा उसकी आत्मा सुरक्षित रहती है । उनका यह भी कथन है कि यदि मूल भाषा में अर्थ बहुत सूक्ष्म हो तो अनुवाद में होनेवाले बिखराव से बचने के लिए भावानुवाद किया जाता हैं । डॉ. गोपिनाथन मानते हैं कि भावानुवाद में मूल पाठ का आशय अधिक महत्वपूर्ण होता है जब कि डॉ.के.के. गोस्वामी मानते हैं कि भावानुवाद का अभिप्राय 'sense for sense' है जिसकी इकाई अनुच्छेद भी हो सकती है, वाक्य भी और शब्द भी। उनकी यह मान्यता है कि भावानुवाद उस स्थिति में किया जाता है जहाँ शब्द अनुवाद न हो पाए । डॉ. पालीवाल की भाँति वे भी भावानुवाद को एक ओर यंत्रवत् अनुसरण से मुक्ति का तो दूसरी ओर मौलिक रचना जैसे प्रवाह का साधन मानते हैं। इन्हीं भावों की प्रतिध्वनि विश्वनाथ अय्यर के लेखन में भी मिलती है किंतु भावानुवाद को अंग्रेजी में 'faithful translation' कहा गया है।

अनुवाद के क्षेत्र में अन्य सभी अनुवादों की अपेक्षा भावानुवाद को उत्तम कोटि का अनुवाद माना जाता है । भावानुवाद में शब्दानुवाद की तरह केवल शब्द,वाक्यांश तथा वाक्य-प्रयोग आदि पर ध्यान न देकर स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा के मूल अर्थ, विचार और भावाभिव्यक्ति पर ही अधिक ध्यान दिया जाता है। भावानुवाद में मूल पाठ की आत्मा अर्थात कथ्य की सामग्री को ही मुख्य मानकर उसे लक्ष्य भाषा में यथा योग्य पध्दति से संप्रेषित किया जाता है। भावानुवाद में मूल शब्दावली , वाक्यांश, वाक्यरचना आदि का विचार न करते हुए लक्ष्य भाषा में मूल रचना का भाव प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है । सूक्ष्म भावाभिव्यक्ति के प्रसंग में भावानुवाद ही सफल  अनुवाद माना जा सकता है । इसलिए आदर्श अनुवाद का विचार अगर करना है तो आवश्यकतानुसार शब्दानुवाद और भावानुवाद दोनों पध्दतियों का प्रयोग उचित रहेगा।

**3.छायानुवाद:-**

छायानुवाद में मूल रचना का अनुवाद उसके छाया रूप में या प्रभाव में किया जाता है । यह मूल मुक्त होता है । किसी मूल कृति का प्रेरक सूत्र, भावानुवाद में सम्पूर्ण स्वतन्त्र पद, वाक्यांश, वाक्यरचना का प्रयोग स्वीकार किया जाये तो, रचना एक सीमा तक स्वतन्त्र रहती है। अत: उसकी गणना छायानुवाद में ही की जाती है। इस बात पर विवाद अवश्य खड़ा किया जा सकता है कि ऐसी कृतियाँ कहाँ तक छायानुवाद कहलाएगी। इस रचना का मात्र आधार अन्य भाषा साहित्य से स्वीकृत है। अत: यह रचना आधारित ही अधिक है, अनुवाद कम।

**4.सारानुवाद**

सारानुवाद मूल रचना का समग्र अनुवाद नहीं होता, उसका सार, संक्षेप, तथ्य ही अनुवाद में प्रतिपादित किया जाता है । संक्षिप्तता, धारावाहिकता के कारण व्यवहार में सारानुवाद ही प्रयोग होता है ।

**5.आशु-अनुवाद**

आधुनिक युग में सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक आदान-प्रदान हेतु आशु-अनुवाद पध्दति को समस्त विश्व में अत्यधिक महत्त्व प्राप्त है । एक दूसरे की भाषा न जानने वाले दो या अधिक भिन्न भाषा- भाषी जब महत्वपूर्ण बातचीत या चर्चा करते हैं तब उनके विचारों और भावों को एक-दूसरे तक संप्रेषित करने का महत्वपूर्ण कार्य द्विभाषिक करता है । दुभाषिया यह कार्य आशु-अनुवाद के माध्यम से ही संपन्न करता है ।

**6.व्याख्यानुवाद**

व्याख्यानुवाद की प्रक्रिया सारानुवाद के विपरीत होती है । मूल रचना में विद्यमान भाव, अर्थ, विचार, कल्पना आदि का शब्दानुवाद या भावानुवाद के माध्यम से उचित रीति से व्यक्त करना अगर संभव न हो तो व्याख्यानुवाद आवश्यक बनता है । गीता की सटीक आवृत्ति इसका एक उदाहारण कहा जा सकता है । इस प्रकार  के अनुवाद में अनुवादक का अपना चिंतन-मनन सम्मिलित रहता है । बात को स्पष्ट करने के लिए अनुवादक का उदहारण देते हुए अपनी बात को स्पष्ट करता

है । वह यह भी देखता है कि उसका अनुवाद सहज, सुबोध बने । व्याख्या, भाष्य नाम से भी जाना जाता है ।

### 7.वार्तानुवाद

वार्तानुवाद में वक्ता अपनी भाषा में बोलता है तो श्रोता उस भाषा के ज्ञाता न होने से 'दुभाषिया' उसका अनुवाद श्रोताओं की भाषओं में करता है । यह अनुवाद आशु अनुवाद होता है और उसका लक्ष्य भी सीमित होता है । इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक, वक्ता, श्रोता, स्थल एवं काल की मर्यादाओं में आबध्द रहता है । शब्द के लिए प्रतिशब्द को ढूँढने के लिए कोश जैसे साधन भी उपलब्ध नहीं होते और हो भी तो वह उसका प्रयोग कर सकेगा ऐसा नहीं कहा जा सकता है ।

### 8.रूपांतर

रूपान्तरकार मूल रचना को अपनी रूचि के अनुसार रूपांतरित करता है । यह अनुवाद या भाषांतर होगा ही ऐसा नहीं कहा जा सकता। रूपांतर एक अनिवार्यता के रूप में भी किए जाते हैं । रेडियो रूपान्तर या दूरदर्शन रूपांतर इसी वर्ग में हो जाता हैं।

अत: यह स्पष्ट है कि अनेक प्रकार के अनुवाद अपनी-अपनी सीमाएँ लिए होते हैं और अनुवाद के अभ्यासक के सामने समस्या के रूप बने रहते हैं ।

## 2.3 गद्य अनुवाद की समस्याएँ

विश्व की अनेक भाषाओं में कई विषयों पर आधारित अनेक प्रकार का साहित्य उपलब्ध होता है । आज के युग में सभी पाठकों को वह साहित्य पढ़ना असंभव है ऐसी स्थिति में पाठक का अपने आप अनूदित साहित्य की ओर खींचा

जाना स्वाभाविक हो जाता है। आज की इक्कीसवीं सदी में तो अनूदित साहित्य का महत्त्व इसी कारण बढ़ा है।

अलग-अलग भाषाओं के साहित्य का अनुवाद किसी दूसरी भाषा में करने की प्रक्रिया बहुत प्राचीन समय से चली आ रही है अर्थात् अनुवाद का इतिहास बहुत पुराना है। ईसवी पूर्व दूसरी सदी में 'रोजेटा प्रस्तर' पर लिखा हुआ अनुवाद इसी बात का प्रमाण है। इसके सम्बन्ध में डॉ. सराफ और गोस्वामी कहते हैं कि- "इसमें मिश्र की प्राचीन लिपियों में मिश्र इतिहास तथा संस्कृति विषयक मूल सामग्री प्रस्तुत है। तथा इसका यूनानी भाषा में अनुवाद भी कर दिया गया है।"[12]

दो संस्कृतियों के बीच अनुवाद रूपी पुल के निर्माण में साहित्यिक अनुवाद की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती है। इसका सीधा-सा कारण यह है कि किसी भौगोलिक क्षेत्र का साहित्य उस क्षेत्र की संस्कृति, कला और रीतियों का प्रतिनिधित्व करता है। कहा भी गया है कि 'साहित्य समाज का दर्पण होता है'। बस यही वह चीज है जो साहित्य अनुवाद को बेहद उत्तरदायी और कठिन कर्म बना देती है।

साहित्यिक पाठ के अनुवादक में अनुवादक की पहली समस्या यही है कि वह स्वतंत्र है भी या नहीं। इसका निर्णय लेना उसे मूल-रचना के भाव एवं अभिव्यंजन की सीमाओं में सीमित रहना है, अपनी स्वतंत्र-सृजनशील प्रतिभा का उपयोग भी उन्हीं सीमाओं के भीतर रहकर करना पड़ता है। अवश्य ही यह एक कठिन कार्य है। मूल लेखक अपनी रूचि,इच्छा के अनुसार शब्द, भाव, वाक्य

[12]'अनुवाद:सिध्दांत एवं स्वरुप,'सं.डॉ.गोस्वामी,डॉ.सराफ,पृ.सं.76

आदि को बदल सकता है, काट-छांटकर सजा-संवार सकता है, मनचाहे रूप-रंग को आकर दे सकता है, जबकि अनुवादक को मूल आशय से बंधे रहना पड़ता है। व्यक्त आशय को अपने शब्दों में ढालना पड़ता है।

अनुवाद के लिए सुयोग्य रचना का चुनाव अनुवादक की दूसरी समस्या है। नाटक, उपन्यास, कहानी आदि साहित्य की विविध विधाओं में कौन-सी विधा अपनी सृजन क्षमता के अनुरूप है, इसका उसे पहले ही निर्णय कर लेना पड़ता है। चुनाव में भूल हुई, तो अनुवाद की समस्या बढ़ जाएगी। कथा- साहित्य एवं निबंध दोनों का स्वरुप एवं शैली भिन्न है । उपन्यास का सुंदर अनुवाद करने वाला अनुवादक निबंध एवं नाटक के प्रति अपनी कलात्मकता को मोड़ पायेगा या नहीं यह एक अवश्य ही संदेहास्पद बात है । इसलिए अनुवादक को अपनी रुचि, शब्दसंपदा, भाषा पर अधिकार आदि बातों पर विचार करके ही साहित्य-विधा का चुनाव करना चाहिए।

अनुवादक की तीसरी समस्या है- मूल रचना के वातावरण के यथार्थ को अनूदित कृति में ज्यों का त्यों उतारना। प्रसिध्द भाषाविज्ञान श्री रामचद्र वर्मा ने कहा है, “अनुवाद वस्तुत: वही अच्छा होता है, जिसमे मूल की सब बातें ज्यों की त्यों आ जाये। न तो मूल की कोई बात छूटने पावे और न बिगड़ने पावे।”[13] केवल भाषा का रूपान्तर, पर्यायवाची शब्दों का प्रस्तुति करण तथा आशय समाज के रीति-रिवाज, सभ्यता-संस्कृति, तीज-त्यौहार आदि का सजीव चित्रण करना अनुवादक के सामने परीक्षा की घड़ी होती है।

[13]‘अनुवाद क्या है’, सं.डॉ.भा.ह.राजूरकर,डॉ.राजमल.बोरा,पृ सं.136

प्रभूत शब्द-सम्पदा तथा पर्यायवाची शब्दों का समृध्द भंडार अनुवादक के लिए परम आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। विशेषकर कहावतों तथा मुहावरों का अनुवाद करने में तो और भी अनिवार्य है। ऐसे में समानार्थी मुहावरों एवं लोकोक्तियों के साथ प्रतिस्थापन किया जाता है। मराठी कहावत 'खायला काळ अन भुईला भार' को हिंदी में 'काम का ना काज का, दुश्मन अनाज का' कहना कितना व्यंजक एवं उपयुक्त है। मराठी मुहावरों का समानार्थी तथा उसी के समान प्रभावोत्पादक हिंदी हो, तभी अनुवाद सशक्त बन पता है।

अनुवादक को तत्सम शब्दों का प्रयोग भी अत्यंत सावधान होकर करना चाहिए। अन्यथा मराठी और हिंदी में 'चेष्टा', 'शिक्षा' जैसे तत्सम शब्दों का अशुध्द प्रयोग हास्यास्पद हो सकता है। साहित्य का अनुवाद करते समय इस प्रकार की अनेक समस्याओं का सामना अनुवादक को करना पड़ता है।

## 2.4 मराठी से हिंदी में अनुवाद की सामान्य समस्याएँ

आज के दौर में मानव जीवन के लिए अनुवाद की उपयोगिता अत्यधिक बढ़ गई है। सभी देशों की भाषा जनसामान्य तक पहुँचाने का एक ही माध्यम है- अनुवाद। आज का मानव किसी भी देश, काल और भाषा विशेष की रचना को अत्यल्प समय में पढ़ने का आकांक्षी हो गया है। इसलिए अनुवाद की जरूरत मनुष्य के ज्ञान की भूख के समानान्तर बड़ी है। आज अनुवाद को दोयम दर्जे के कार्य नहीं माना जाता बल्कि उसे श्रमसाध्य एवं महत्वपूर्ण कर्म के रूप में स्वीकारा जा चुका है। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद की उपयोगिता स्वयं सिध्द है।

किसी भी साहित्य का अनुवाद करते समय अनुवादक को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मराठी और हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी होने के बावजूद दोनों भाषाओं की लेखन-प्रविधि बिल्कुल अलग है। दोनों भाषाओं की लिपि में समानता अधिक मात्रा में होते हुए भी लिंग, वचन, वाक्य-रचना, कारक, वर्तनी के भिन्न नियमों के कारण दोनों भाषाओं में काफी अंतर पाया जाता है। इसी कारण मराठी से हिंदी में अनुवाद करते समय अनुवादक को व्याकरणिक और सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक  परिस्थिति को व्यक्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। व्याकरणिक तथा संरचनात्मक स्तर पर जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, वे निम्न है –

### 2.4.1 व्याकरणगत समस्याएँ

'लिंग' और 'वचन' को लेकर मराठी और हिंदी भाषा में काफी अलग-अलग ढंग के विचार है। लिपि बहुत ही साम्य होते हुए भी लिंग, वचन, वाक्यरचना, कारक, वर्तनी के नियमों के भिन्नता के कारण इन दो भाषाओं में काफी अंतर है।

### 2.4.2. लिंग

मराठी में संस्कृत की तरह तीन लिंग हैं, तो हिंदी में केवल दो ही लिंग हैं। मराठी के कई नपुंसक लिंग शब्द ही नहीं, पुलिंग शब्द भी हिंदी में स्त्रीलिंग हैं। जैसे- अग्नि, सरकार, आत्मा, देह, आवाज आदि। इसके विपरीत मराठी में कुछ स्त्रीलिंग शब्द हिंदी में पुलिंग है। जैसे- इंकलाब, मजा, छत्री आदि। साथ ही साथ कई मराठी के

नपुंसक लिंग शब्द हिंदी में पुलिंग हो जाते हैं। जैसे- झाड़, रूप, ध्यान, कापड़ा आदि।

### 2.4.3 वचन

दोनों भाषाओं के एक वचन से बहुवचन बनाने के लिए अलग-अलग नियम हैं। जैसे-

| मराठीः- | हिंदीः- |
|---|---|
| एकवचन | बहुवचन |
| कथा | कथाएँ |
| वक्ते | अनेक वक्ता |
| अनेक बालिका | बालिकाएँ |

### 2.4.4 कारक

कारक को लेकर दोनों भाषाओं में काफी भिन्नता है। साथ-साथ अवयव, रिश्ते, संतान आदि मराठी के संबंध में कारक के रूप में लिए जाते हैं। हिंदी में 'के' का प्रयोग होता है। मराठी में कर्म कारक 'ला' का प्रयोग मिलता है।

उदा- रामराव के दो बेटे थे। (हिंदी)

रामरावला दोन मुले होती. (मराठी)

## 1.4.2 शब्द के स्तर पर समस्याएँ

अनुवाद का प्रमुख कार्य है कि स्रोत भाषा में अभिव्यक्त भावों विचारों को पूर्णतः लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करें। ऐसी स्थिति में अनुवादक को ध्यान देना होता कि मूल रचना में जिन शब्दों को प्रयुक्त किया है, उनके भाव एवं अर्थ को अनुवाद में यथावत रखें, क्योंकि शब्द के भाव एवं अर्थ की छटा से ही संवादों को प्रभावी बनाया जाता है। मराठी-हिंदी के शब्दों में अधिक मात्रा में समानता होती है, किंतु जब वे अन्य भाषा में प्रविष्ट हो जाते हैं तब उसकी अपनी भाषागत सीमाएँ समस्याएँ निर्माण करती हैं। अत: अनुवादक को मूल रचना का अनुवाद करने के लिए शब्द शक्ति पर विशेष ध्यान देना होता है।

मराठी में प्रयुक्त शब्दों का सही और निश्चित अर्थ के साथ अनुवाद करना कठिन कार्य होता है। भाषा के कुछ खास शब्द होते हैं, जो व्यवहार में प्रचलित हैं। उन शब्दों को हिंदी में अनुवाद करना अनुवादक के लिए समस्या उत्पन्न करता है। अनुवादक को मूल रचना में प्रस्तुत परिवेश एवं पात्रों की भाषा को ध्यान में रखते हुए समुचित शब्दावली का चयन करना होता है ताकि अनुवाद सफल हो, वे इस प्रकार हैं –

### 2.4.2.1 समान रूपी शब्द

मराठी और हिंदी में बहुत सारे शब्द का रूप एक होते हुए भी अर्थ की दृष्टि से उसमें भिन्नता है । इससे अनुवादक को काफी भ्रम पैदा होता है । अनुवाद करते समय ऐसे

कुछ शब्द हैं जो शब्द एक ही रहता है लेकिन इन दोनों भाषाओं में अलग-अलग अर्थ के रूप में प्रयोग किया जाता है। जैसे-

| समान शब्द | हिंदी अर्थ | मराठी अर्थ |
|---|---|---|
| 1.खाली[14] | नीचे | रिक्त |
| 2. खड़ा[15] | स्थित | कंकड |
| 3. संसार[16] | दुनिया | गृहस्थी |
| 4. शिक्षा[17] | शिक्षण | दंड |
| 5. यात्रा[18] | प्रवास | तीर्थ यात्रा |
| 6. जाडा[19] | ठंड के दिन | मोटा |

ऐसे और भी कई शब्द हैं जो कि अर्थ की अलग-अलग छटाएँ दिखाते हैं। साथ-साथ साम्य अर्थ होते हुए भी वर्तनी में भिन्नता रहने वाले शब्द भी काफी हैं। ऐसे शब्द जो पढ़ने और सुनने में लगभग एक-से लगते हैं, परंतु अर्थ की दुष्टि से भिन्न होते हैं, उन्हें भिन्नार्थक शब्द कहते हैं|

जैसे-   जनावर-जानवर

पाणी-पानी

---

[14]'त्रिशंकू',अरुण साधू,पृ.सं.84
[15]'त्रिशंकू,अरुण साधू, पृ.सं.11
[16]'त्रिशंकू',अरुण साधू,पृ.सं.15
[17]'बहुजन',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.73
[18]'नरवानर',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.३३
[19] 'हिंदू',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.14

मदत-मदद

कुल-कूल

कर्म-क्रम

और-ओर

कागद-कागज आदि।

### 2.4.3 वाक्यगत समस्याएँ

वाक्य भाषा की इकाई होती है। प्रत्येक भाषा का अपना एक वाक्य विन्यास रहता है। अनुवाद के कारण कुछ सीमा तक स्रोत भाषा की वाक्य रचना का प्रभाव लक्ष्य भाषा की वाक्य रचना पर पड़ना स्वाभाविक है। अनुवाद करते समय शब्द के स्थान पर शब्द रख देने से रचना अव्यवस्थित और अनर्थकारी हो जाती है। इसलिए उन वाक्यों का भावानुवाद करना पड़ता है। उन वाक्यों का विवरण नीचे दिया जा रहा है-

मराठीः-1.'तिच सशोभित राहण नीटनेटक वागण मोकळ-चाकळ बोलण हयामुळे तिच्या विषयी अफवांची भरमार असायची.' (मराठी उपन्यास-हिंदू- पृ.सं.11)

हिंदीः-1.'उसका ठीक-ठाक रहना सबके साथ सहज रूप से बातचीत करना उसके संपूर्ण व्यक्तित्व में स्थित अनौपचारिकता इस संबंध में अपवाहे भी भरपुर रहती।' (अनु.पृ.सं.15)

मराठीः-2.'अगदी ओढून ताणून शिवशक्ति आणि भीमशक्ति एकत्र आवळण्याचा प्रयत्न केला होता.' (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.10)

हिंदीः-2. ‘खूब खींचतान कर मैं शिवशक्ति और भीमशक्ति को जोडने का उन्हें इकट्ठे लाने का प्रयत्न कर रहा था।’ (अनु. पृ.सं.14)

मराठीः-3. ‘हा महारडा गावची राखरांगोळी करू पाहतोय’. (मराठी उपन्यास-त्रिशंकू-पृ.10)

हिंदीः-3. ‘यह महार पूरे गाँव का सत्यानाश करना चाहता है।’(अनु.पृ.13)

मराठी:-4. ‘जिन्याच्या बरगड्यावर आपली पोलादी पावले आदलीत तो तूफान होऊन वर चढून गेला आणि त्यानं आपल्या अजस्त्र मुठीचा दणका दाराला दिला.दारानं धसका घेतला. डार उघडलं गेलं.’

हिंदी:-4. ‘सीढ़ियों के फसली पर फौलादी पैर रखते हुए तूफान की तरह ऊपर चला गया और उसने अपने विशाल मुट्टी से दरवाजे को धक्का मारते ही वह दरवाजा खुल गया।’[20]

मराठी:-5. ‘भादराल्यामुले त्याच्या काल्या रंगाला लखलखीतपणा आला होता; आणि असा तो रेडा लोकांना प्रत्यक्ष मरणच वाटत होता.’

हिंदी:-5. ‘बाल निकालने की वजह से उसका काला रंग चमकने लगा था और वह सांड लोगों को प्रत्यक्ष रूप में मौत ही नजर आ रहा था।’[21]

---

[20]‘बहुजन’,शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.99

[21]‘नरवानर’,शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.92

## 2.4.4 पारिभाषिक शब्दों कि अनुवाद समस्याएँ

पारिभाषिक, ग्रामीण तथा व्यावहारिक शब्दों का मराठी से हिंदी में अनुवाद करना  काफी कठिन होता है। वैज्ञानिक, तकनीकी सामग्री को मराठी से हिंदी में अनूदित करते समय शब्दों के पर्याय ढूंढते, निश्चित अर्थ शब्दों का चयन करने और उसके निश्चय में अनेक समस्याएं खड़ी होती हैं।अनुवाद करते समय उन शब्दों के स्थान पर पर्यायवाची शब्दों को नहीं रख सकते क्योंकि वह सही भाव व्यक्त नहीं कर पाएगा। इसलिए पाद-टिप्पणियाँ दी जाती हैं। कुछ जगहों के नाम भी हैं जिन्हें वैसे ही रखा गया हैं और स्थानों के नामकरण की टिप्पणीयाँ दी गयी हैं। उदा-

1.कोंडवाडा- जानवरों को बांधकर रकने की जगह।

2.चावडी – गाँव के सभी लोग एकत्रित होने की जगह।

3.भेंडी- जगह का नाम

## 2.4.5 सांस्कृतिक समस्याएँ

अपनी-अपनी भाषा के रीति-रिवाज तथा पहनावा अलग होने के कारण उनका अनुवाद करना मुश्किल हो जाता है। अनुवाद करते समय मूल कृति के कुछ ऐसे शब्द सामने आते हैं जिसका हिंदी में सही अर्थ देने वाला समानान्तर शब्द नहीं मिल पाता है। अनुवाद करते समय उन शब्दों के साथ पर्यायवाची शब्द को भी नहीं रख सकते हैं क्योंकि वह सही भाव व्यक्त नहीं करता है। इसलिए उन शब्दों को उसी तरह रखकर नीचे पाद टिपण्णीयाँ देनी पड़ती है। जिससे शब्दों के अर्थ को समझने में आसानी हो और साथ ही भाव भी व्यक्त होता है। मराठी का ‘पातळ’ जिसका

हिंदी अर्थ केवल साडी ही होगा। 'पातळ' कुछ अधिक अर्थवत्ता रखती है जो महाराष्ट्र की एक वेशभूषा है । उसी प्रकार 'पागोटे' एक अलग ही मराठी शिरो भूषण है । जैसे- कुछ विशिष्ट रूढ़ी तथा रीति-रिवाज के वाचक शब्द होते है जैसे- साँग, पागोटे, लुगडे, पातळ, अंबाडा, सैलाचा बुचडा, कोल्हापुरी चप्पल आदि।

1) 'पागोटे'[22]- सिर को बंधने का विशेष कपड़ा।

2) 'साँग'[23]- धारण करना

3) 'चोळी'[24]- एक विशिष्ट प्रकारचा ब्लाउज

4) 'लुगडं'[25]- साड़ी

5) 'सैलाचा बुचडा'[26]- विशिष्ट प्रकार का झूटा

6) 'कोल्हापुरी चप्पल'[27]- चप्पल का एक प्रकार

### 2.4.6 मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग

हर भाषा में मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ विशेष रूप में प्रचलित होते हैं । इनमें समाज की समग्र जीवनानुभूति संचित होती है । इसलिए भाषिक स्तर पर मुहावरे और लोकोक्तियों के अनुवाद में समस्याएँ आती है ।

[22]'त्रिशंकू',अरुण साधू,पृ.सं.15
[23]'त्रिशंकू',अरुण साधू,पृ.सं.26
[24]'नरवानर',शराकुमार लिंबाले,पृ.सं.20
[25]'नरवानर',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.15
[26]'बहुजन',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.34
[27]'बहुजन',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.83

मुहावरे भाषा की विशिष्ट एवं अद्भुत इकाई के रूप में सदा प्रचलित रहते हैं, जैसे कुछ मुहावरे सामाजिक घटना तो कुछ मुहावरे प्रादेशिक इतिहास एवं घटना विशेष से संबंधित होते हैं। अनुवादक को मुहावरों को मूल कृति की तरह ही रखना अनिवार्य हो जाता है अन्यथा मूल भाव खो देने की संभावनाएँ होती है । इसलिए अनुवादक ने मूल भाव को सुरक्षित रखते हुए भावानुवाद करने की कोशिश की है । उदाहरण के लिए मराठी उपन्यास 'उपल्या' में 'तुम्ही राईचा पर्वत करताय.' (पृ.सं.49) इसका अनुवाद अनुवादक ने 'आप लोग राई का पहाड़ बना रहे हैं।'(अनु.पृ.सं.51) इस तरह करने की कोशिश की है जो कि मूल कृति का भाव स्पष्ट हो रहा है ।

लोकोक्तियों अभिव्यंजना की दृष्टि से जितनी सशक्त होती हैं, उतना ही कठिन अनुवाद करने की दृष्टि से होती है । कहावतों का महत्व भाषा में उसकी अभिव्यक्ति, वैविध्य, उक्ति वैशिष्ट और प्रभावबोधकता पर आधृत होता है । जिसे अनुवाद में डालना संभव नहीं हो पाता तब भावानुवाद का सहारा लेकर अनुवाद किया जाता है।

अतः स्पष्ट होता है कि मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग स्रोत भाषा के अनुसार कृति को जितना प्रभावशाली बनाते हैं उतना ही अनुवादक के लिए अनुवाद में समस्याएँ निर्माण करते हैं । इसलिए अनुवादक को हमेशा ज्ञात रहना चाहिए कि यदि मूल रचना के अनुरूप मुहावरे और लोकोक्तियों का चयन करने में असमर्थ हो जाए तो उसे भावानुवाद करना चाहिए या मूल कृति के समान शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए जो मूल के सर्वाधिक निकट हो ।

## 2.4.7 प्रोक्ति स्तर पर समस्याएँ

प्रोक्ति को अंग्रेजी में 'डिस्कोर्स' (Discourse) कहते हैं । अंग्रेजी में 'डिस्कोर्स' के अतिरिक्त 'अटरेन्स' का भी प्रयोग होता है। प्रोक्ति का प्रयोग जहां सिल-सिलेबार लगे वाक्यों के संदर्भ में आता है जो परस्पर किसी एक केद्रीय भाव से जुड़े रहते है तो वहां मात्र बातचीत के अर्थ में 'कथत' जबकि भाषाविद उसे वार्तालाप भी कहते है। प्रोक्ति का प्रयोग वाक्यबंध के अर्थ में किया जा रहा है। जिस प्रकार उक्ति से अन्य अर्थ में सूक्ति प्रचलित है उसी प्रकार प्र+उक्ति प्रोक्ति बता है।

"अनेक वाक्य मिलकर सर्वांग रूप से जब इकाई रूप में बन जाता है, तो वह इकाई ही प्रोक्ति कहलाता है।"[28] इस प्रकार वाक्य से बड़ी इकाई प्रोक्ति है। भाषा की संरचना को शुद्ध भाषिक घटकों के एक सुनियोजित अधिकम के रूप में भी देखा जा सकता है। जैसे- एक छोटा घटक, उससे बड़ा घटक, उससे भी बड़ा घटक आदि।

व्याकरणिक संरचना की दृष्टि से वाक्य भाषा की सबसे बड़ी इकाई है लेकिन संदेश संप्रेषण की दृष्टि से वाक्य से भी बड़ी एक इकाई है प्रोक्ति (Discourse) जो वक्ता के मंतव्य या विचार-बिंदु का प्रतिनिधित्व करता है और जो संदर्भ या प्रकरणयुक्त होता है। यह एक अल्यांग वाक्य भी हो सकता है। जैसे- 'आओ' एक पूर्णाक वाक्य भी और एकाधिक वाक्य समूह भी। प्रोक्ति वह इकाई है जो वक्ता के अभिष्ट मंतव्य या संदेश को अपनी पूर्णता में श्रोता तक पहुंचाती है।

---

[28] 'व्यवहारिक हिंदी', डॉ.कैलाशचंद्र भाटिया, पृ.सं.149

मराठी से हिंदी में प्रोक्ति स्तर पर विश्लेषण पंचम अध्याय में विस्तार रूप से प्रस्तुत किया जायेगा।

हर व्यक्ति का व्यक्तित्व अलग होता है। साथ ही हर व्यक्ति का अपना अनुभव भी अलग होता है। एक ही परिस्थिति में, चाहे वह भौतिक हो या मानसिक, विभिन्न व्यक्तियों में प्रतिक्रिया एक सी नहीं होती, इसलिए सबके अनुभव भी बिल्कुल एक नहीं होते। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के अनुभव का अपना व्यक्तित्व होता है, बाकी अपनी निजता होती है, किंतु सभी लोग अपने अनुभव की निजता को पहचान नहीं पाते जब वे पहचान जाते हैं कि सामान्य भाषा तो केवल सामान्य अनुभव को अभिव्यक्ति देने में ही समर्थ है, विशिष्ट अनुभव को नहीं। यहीं आकर सामान्य भाषा से कवि या लेखक को विद्रोह करना पड़ता है। भाषा की सामान्य संरचना चरमरा कर टूट जाती है और नये तेवर, नया धार से युक्त नयी भाषा जन्म देती है। सामान्य भाषा में अपना यह अलग ही शैली है जो चयन, विचलन, समानांतरता, अप्रस्तुत विधान आदि इन सबके रूप में हमारे सामने आती है।

भाषा एक अमूर्त संकल्पना नहीं वरन सामाजिक व्यवहार की वस्तु है। समाज में इसके प्रयोग में आने से कई रूप उभरने लगते हैं, जिनसे भाषा-भेद या प्रकार झलकने लगते हैं। वास्तव में भाषा अपने आप में समरूपी है, लेकिन प्रयोग में आने से वह विषमरूपी हो जाती है। इसका कारण यह है कि मनुष्य का मस्तिष्क इतना सृजनशील है कि उससे विभिन्न सदर्भों, स्थितियों तथा उद्देश्यों में अधिकाधिक भाषा प्रकार मिलने लगते हैं और ये भाषा-प्रकार अपने आप में वैविध्यपूर्ण होते हैं। इस प्रकार रॉबिन्स के मतानुसार 'मनुष्य की भाषा में जो

विविधताएं पाई जाती हैं, उन्हें भाषा की शैलियां कहा जाता है। यद्यपि ये भाषा भेद एक-दूसरे में भिन्न है, किंतु संदर्भों एवं उद्देश्यों में अभिव्यक्ति की रीति होने के कारण शैली कहलाते हैं। इस प्रकार शैली की भूमिका बड़ी व्यापक है और इसमें भाषा के सभी प्रकार समाविष्ट हो जाते है।'

अनुवाद में मूल कृति की शैलीगत विशेषताएं अवश्य सुरक्षित रखनी चाहिए। उदाहरण के लिए वाक्य में बार-बार जो, जिन्हें, तथा, जिनके आदि शब्दों का प्रयोग किया जायेगा। तो वाक्य और भाषा शैली बेढंग हो जायेगी। सबसे बड़ी समस्या शैली में उस समय आती है जब किसी भाषा के विशेषीकृत हास्य, मुहावरों, विशिष्ट अभिव्यक्तियों और मूल कृति के पात्रों द्वारा प्रयुक्त विशेष संबंधो का हिन्दी तथा अन्य भाषा से अनुवाद करना पड़ता है।

**निष्कर्ष**

सारांश रूप में कहा जाए तो वस्तुतः अनुवाद कार्य कठिन है पर असंभव नहीं। अनुवादक को मराठी और हिंदी दोनों की इन विशेषताओं को समझ लेना चाहिए। दोनों क्षेत्रों की संस्कृति, जीवन, समाज-व्यवस्था, चिंतनधारा की पहचान होनी चाहिए और शाब्दिक संरचना के सारे संदर्भों को सही अर्थ में ग्रहण करने की क्षमता भी। उपर्युक्त शब्द चयन की ओर हमेशा ध्यान रखना चाहिए।

अनुवाद करते समय अनुवादक को विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझना पड़ता है। उसमें एक महत्वपूर्ण समस्या मुहावरों के अनुवाद की है। सामान्य शब्दावली के माध्यम से की गयी अभिव्यक्ति की तुलना में मुहावरों के माध्यम से

की गयी अभिव्यक्ति अधिक प्रभावशाली तथा व्यंजक होती है, उसका अनुवाद भी उतना ही कठिन होता है।

किसी भी एक साहित्यिक कृति का उसकी मूल भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय कई सावधानियां रखनी पड़ती हैं। ये सभी सावधानियां सांस्कृतिक भिन्नताओं के चलते समस्याओं का रूप ले लेती हैं। क्योंकि सांस्कृतिक भिन्नता को समाप्त करने के लिए भाषा को मूल रचना की भाषा में व्यक्त प्रतीकों, भावों और उन अनेक विशेषताओं को सटीक तरीके से लक्ष्य भाषा में उतारना होता है और साथ ही यह ध्यान रखना होता है कि लक्ष्य भाषा में उतरी कृति पढ़ने वाले को सहज और आत्मीय लगे।

आगामी अध्यायों में 'शब्द', 'वाक्य' एवं 'प्रोक्ति' के स्तर मराठी से हिंदी में अनूदित चयनित दलित उपन्यासों का अध्ययन सोदाहरण सहित विस्तार रूप से प्रस्तुत किया जायेगा।

# तृतीय अध्याय

## मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन :

## 'शब्द' के स्तर पर

# तृतीय अध्याय

## मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन : 'शब्द' के स्तर पर

मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण निरंतर समाज के अन्य सदस्यों से विचारों और भावों का आदान-प्रदान करता है। इसके लिए मनुष्य को भाषा की आवश्यकता पड़ती है। वस्तुतः भाषा ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा वह अपने सामाजिक प्रयोजनों की सिद्धि के लिए संदेश देता और प्राप्त करता है। प्रत्येक भाषा की अपनी-अपनी ध्वनियाँ, शब्द और व्याकरणिक संरचनाएं होती हैं। भाषाओं की इस संरचनाओं में समानताएं और असमानताएं दोनों मिलती हैं।

हिंदी और मराठी के समाज, संस्कृति एवं भाषा में ऊपरी स्तर में कुछ एकरूपता दिखाई देती हो, लेकिन यह एकरूपता मूलतः उतनी नहीं है, जितनी की यह दिखाई पड़ती है। इसमें संस्कृति के कुछ अति सूक्ष्म बिंदु हैं जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। इस भेद का रहस्य भाषा विद्वान जान सकते हैं या अनुवादक, क्योंकि संस्कृति का संबंध जितना गहरा एक समाज से होता है उतना ही समाज से जुड़ी भाषा से भी होता है। इसी प्रकार मराठी एवं हिंदी भाषा परिवार, लिपि और सामाजिक स्तरों में भले ही समान नजर आते हो, लेकिन जब हम इसका भाषिक दृष्टि से अध्ययन करते है तो पाते है कि इनकी संस्कृति और व्यवहार दोनों भिन्न है। खास तौर पर हम यह देख सकते हैं कि दोनों भाषाओं की संरचना का स्वर भी

बिल्कुल भिन्न है। दोनों भाषा स्थिति, परिवेश, पर्यावरण, सामाजिक परिस्थिति चिंतन तथा अर्थ क्षेत्र की दृष्टि से भी एक दूसरे से काफी दूर है। इन दूरियों को निकटता में परिवर्तित करने का कार्य अनुवादक का होता है।

उपन्यास में पात्रों का चरित्र-चित्रण, उनकी वेशभूषा, रहन-सहन, बोल-चाल, पात्रों के सामाजिक संबंध, पात्रानुकूल भाषा, संवाद, योजना, विवरण, एकालाप, क्षेत्रीय तत्व या आंचलिकता जैसे कई धरातल होते हैं, जो उपन्यास विधा को अन्य गद्य-विधाओं से अलग खडा करते हैं। ये सभी धरातल भाषावद्ध होते हैं, भाषा के माध्यम से ही व्यक्त होते हैं और भाषाई बुनावट ही इन्हें अच्छा या बुरा पाठ बनाती है। अतः स्रोत भाषा लक्ष्य भाषा में पुन-सृजन का प्रयास भी कभी पूर्ण, कभी आंशिक तो कभी शून्य स्तर पर अनूदित हो पाता है।

दलित उपन्यासों का संपूर्ण वातावरण जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता के दुःखों से उभरा हुआ है। इसलिए इन उपन्यासों में शब्द शक्ति और भाषा सौंदर्य के पक्ष पर जोर देते हुए दलितों के दुखों को उजागर करने हेतु सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। लेकिन प्रत्येक भाषा की संरचनात्मक बुनावट अपने सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भौगोलिक प्रदेश की सीमाओं से प्रतिबद्ध भी होती है। समाज की प्रचलित बोलचाल की भाषा भी साहित्य में विभिन्न कोनों से अपने अस्तित्व को सिद्ध करने की लगातार कोशिश करती रहती है। मराठी दलित उपन्यासों में तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्दों का प्रयोग कर मुहावरे और लोकोक्तियों को प्रयुक्त किया गया हैं। शब्द संयोजन, वाक्य संरचना तथा प्रोक्ति संरचना की दृष्टि से मराठी तथा हिंदी दोनों वियोगात्मक भाषा है तथा इनमें लिपि और शब्दों के अर्थ में समानता

पायी जाती है। इसके बावजूद मराठी से हिंदी में अनुवाद करने समय मूल पाठ की संरचनागत विशेषताओं को ध्यान में रखना अनुवादक के लिए आवश्यक होता है। सामाजिक समस्याओं और पीड़ा को उजागर करने के लिए इन उपन्यासों में कई छोटे-छोटे वाक्य तो कई लंबे वाक्यों का प्रयोग किया गया है साथ-ही-साथ अनेक जगह पर ग्रामीण भाषा का प्रयोग किया गया है।

कथात्मक साहित्य में कथ्य जितना महत्वपूर्ण होता है उतनी ही महत्त्वपूर्ण उसकी शैली भी होती है। अतः अनुवाद करते समय स्त्रोत भाषा की शैली का निर्वाह लक्ष्यभाषा में अत्यंत आवश्यक होता है।

साहित्यिक भाषा बहुआयामी होती है। उसमें उस भाषाई परिवार की सुदीर्घ परंपरा, संस्कृति, रहन-सहन, विश्वास, मान्यताएँ तथा ऐसी ही अनेक बातें झलकती हैं। साहित्यिक रचना के अनुवाद में स्त्रोत भाषा की सभी विशेषताएँ लक्ष्यभाषा में उतारना आवश्यक हो जाता है। यहाँ हम मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का शब्दस्तर पर विचार करेंगे और यह देखेंगे कि इन अनूदित पाठों में साहित्यिक भाषा की ये विशेषताएँ कहाँ तक सुरक्षित रखी गई हैं? शब्द स्तर पर अध्ययन करने से पहले शब्द और उसकी संरचना को जानना जरुरी हैं।

### 3.1. शब्द की परिभाषा : भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार

भाषा विज्ञान के अध्ययन में शब्द इकाई अक्षर है और अक्षरों के समूह से शब्द बनता है, शब्दों के समूह से वाक्य बनता है तथा वाक्यों के समूह से प्रोक्ति

बनती है। प्रोक्ति का विस्तारित रूप अनुच्छेद होता है। वाक्य संरचना व शब्द चयन तथा इसका प्रस्तुतिकरण का ढंग शैली कहलाता हैं।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि भाषिक अध्ययन में इन सभी का अध्ययन होता हैं। शब्द का अध्ययन भाषिक स्तर पर इसलिए भी जरुरी है क्योंकि जिस प्रकार अक्षर ध्वनि की इकाई है उसी प्रकार भाषा की इकाई शब्द है क्योंकि शब्द भाषा का वह रूप है जो अर्थवहन करने में सक्षम होता है। तो हम सर्वप्रथम शब्द का अर्थ एवं परिभाषाओं को देखने का प्रयास करेंगे।

शब्द का मूल अर्थ ध्वनि हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार , "शप , शब्द आदि एक से अधिक धातुओं से इसका संबंध जोड़ा जा सकता है। प्रचलित मत यह है कि शब्द का संबंध 'शब्द' धातु से हैं। जिसका अर्थ हैं- 'शब्द करना', ध्वनि करना या बोलना आदि।"[29] अर्थात भाषा में शब्दों का अत्यंत महत्त्व है। सार्थक संगत एवं उपयुक्त शब्दों द्वारा ही अपने हृदय के भावों या विचारों को प्रस्तुत कर सकते हैं। अत: हम 'शब्द' के स्वरुप को स्पष्ट करने के लिए कुछ विद्वानों की परिभाषाओं को देखते हैं-

**1.आचार्य सीताराम चतुर्वेदी**

"वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।"[30]

**2.डॉ.कामता प्रसाद गुरु**

"एक या अधिक अक्षरों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं।"[31]

[29] 'शब्दों का अध्ययन',डॉ.भोलानाथ तिवारी,पृ सं.9

[30]'वाग्विज्ञान भाषाशास्त्र ', सीताराम चतुर्वेदी, पृ.सं.205

**3.डॉ.विश्वनाथ प्रसाद मिश्र**

“दो मौन स्थितियों के बीच की ध्वनियों के समूह को शब्द कहते हैं।”[32]

**4.डॉ.उदयनारायण तिवारी**

“शब्द वे भाषा शास्त्रीय रूप हैं जिनका वितरण एवं अर्थ पूर्णतया स्वतंत्र रूप से होता है।”[33]

**5.डॉ.उमेशचंद्र शुक्ल**

“ध्वनियों के मेल से बने सार्थक वर्ण समुदाय को शब्द कहते हैं।”[34]

**6.डॉ.रामेश्वर**

“एकाधिक ध्वनि मिलकर ध्वनि से भी बड़ी जो एक-एक अर्थपूर्ण इकाई गढ़ती है,वह शब्द कहलाती है।”[35] अर्थात रामेश्वर जी ने कई ध्वनियों से बनी अर्थपूर्ण इकाई को शब्द कहा है।

**7.स्वीट**

“शब्द को भाषा की लघुत्तम आर्थिक इकाई कहते हैं।”[36]

**8.ब्लूमफील्ड**

---

[31]‘हिंदी व्याकरण’, डॉ.कामताप्रसाद गुरु,पृ.सं.47

[32]‘अभिनव भाषा विज्ञान’,डॉ.ओमप्रकाश शर्मा,पृ.सं.89

[33]‘अभिनव भाषा विज्ञान’,डॉ.ओमप्रकाश शर्मा,पृ.सं.89

34.‘हिंदी व्याकरण’,डॉ.उमेशचंद्र शुल्क,पृ.सं.11

[35]‘साधारण भाषाविज्ञान’,डॉ.रामेश्वर,पृ.सं.358

[36]‘शब्दों का अध्ययन’,डॉ.भोलानाथ तिवारी,पृ.सं.10

"शब्द को भाषा का लघुत्तम मुक्तरूप कहते हैं।"[37]

**9.राबर्टसन और कैसिड़ी के अनुसार**

"वाक्य में प्रयुक्त लघुत्तम स्वतंत्र इकाई शब्द हैं।"[38]

**10.पामर के अनुसार**

"शब्द को ऐसी लघुत्तम भाषिक इकाई मानते हैं, जो एक पूर्ण उच्चार के रूप में काम कर सकें।"[39]

उपर्युक्त परिभाषाओं से शब्द के संदर्भ में हम यह कह सकते हैं कि 'शब्द' भाषा की महत्वपूर्ण लघुत्तम सार्थक इकाई होने के कारण इन्ही के द्वारा हम हमारे नए विचार, नए भाव, नए अनुभव आदि को लिखित या मौखिक रूप में अभिव्यक्त कर सकते हैं | जैसे कि उपर्युक्त सभी विद्वानों ने कहा है कि, 'एक या एक से अधिक वर्णों से बनी स्वतंत्र या सार्थक ध्वनि समूह 'शब्द' कहलाता है | इसलिए 'शब्द' सार्थक है और एक से अधिक ध्वनियों का होता है, साथ-ही-साथ शब्द स्वतंत्र लघुत्तम इकाई है। शब्द एक न्यूनतम इकाई है और यह अर्थ व्यक्त करने में स्वतंत्र एवं समर्थ है।

## 3.2. अनूदित दलित उपन्यासों का शब्द स्तर पर विश्लेषण

'शब्द' का व्याकरण में बड़ा महत्व है। अपने व्यवहार में हम शब्दों का प्रयोग करते हैं। शब्दों से हमारा आशय उन वर्णों या अक्षरों से है, जो एक विशिष्ट

---

[37]'शब्दों का अध्ययन', डॉ.भोलानाथ तिवारी,पृ.सं.10

[38]'शब्दों का अध्ययन',डॉ.भोलानाथ तिवारी,पृ.सं.10

[39]'शब्दों का अध्ययन' डॉ.भोलानाथ तिवारी,पृ.सं.11

ध्वनि के साथ उच्चरित होकर हमें कुछ अर्थ का प्रतीति करा दें। जैसे – मराठी में ‘कावळा’, ‘माणूस’, ‘गाय’ ये शब्द हिंदी में ‘कौआ’, ‘आदमी’ और ‘गाय’ जाति के वाचक हुए और इनसे उनके बारे में हमें ज्ञान प्राप्त हो सका। ‘शब्द’ एक या एक से अधिक वर्णों से मिलकर बनते हैं। ‘शब्द’ भाषा की स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई कहा जाता है। स्वतंत्र इकाई होने के कारण ‘शब्दों’ को कोश में स्थान मिल जाता है। प्रत्येक भाषा का वैभव उसके शब्द संग्रह से सिद्ध होता है। अतः जिस भाषा का शब्द भण्डार जितना अधिक होता है उस भाषा को उतना अधिक समृद्ध भाषा का दर्जा प्राप्त होता है।

भाषा में कई प्रकार की ध्वनियाँ होती हैं, जो स्वयं कुछ अर्थ बोध नहीं कराती, पर अन्य वर्णों के साथ जुड़ जाने से वे शब्द बन जाती है, तब उन ध्वनियों का सार्थक प्रयोग होता है। जैसे - ‘कमल’ में तीन वर्ण है ‘क’, ‘म’, और ‘ल’ जब ये तीनों वर्ण एकत्र हो गये, तो वह शब्द एक विशिष्ट ‘फूल’ का वाचक हुआ।

‘शब्द’ एक भाषायी संकेत है अर्थात एक यादच्छिक प्रतीक है, जो किसी भी भाषा की वस्तुओं के अर्थ अथवा कल्पना का गतिशील स्वरूप प्रदान करता है। वास्तव में भाषा के शब्द बाह्य जगत के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में ज्ञान से संबंधित होते हैं। साथ ही भाषा-भाषी समुदाय के चिंतन प्रक्रिया से भी जुड़े रहते हैं, इसीलिए यह कहा जाता है कि शब्द का यही अर्थ होता है जो समाज उसे देना है। इसीलिए शब्द समाज और संस्कृति के प्रत्येक परिवर्तन को व्यंजित करने में सक्षम रहते हैं। भाषा शब्दों से बनी है और शब्दों की सहायता से भाषा का अर्थ प्रतीत होता है।

## 3.3. शब्दों का वर्गीकरण

'शब्द' भाषा की लघुतम सार्थक इकाई होने के कारण इन्हीं के द्वारा हम हमारे नए विचार, नये भाव और नये अनुभव आदि को लिखित या मौखिक रूप में अभिव्यक्त कर सकते हैं। जैसे उपर्युक्त सभी विद्वानों ने यह कहा कि एक या एक से अधिक वर्णों से बनी स्वतंत्र या सार्थक ध्वनि समूह 'शब्द' कहलाता है। भाषा विद्वानों ने शब्दों का वर्गीकरण कई प्रकार से किया है। जैसे कि अर्थ के आधार पर शब्द के दो प्रकार माने गये हैं – 1.सार्थक और 2.निरर्थक।

बनावट या रचना के आधार पर शब्द के तीन प्रकार माने गये हैं-

1.रूढ़ 2.यौगिक तथा 3.योगारूढ़ आदि।

शब्द के इतिहास या व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दों के अनेक प्रकार माने गये हैं-

1.तत्सम 2.तद्भव 3.देशज 4.विदेशी आदि।

जिनका अध्ययन विस्तृत रूप से देख सकते हैं –

### 3.3.1. सार्थक और निरर्थक शब्दों का प्रयोग

सार्थक शब्द उन शब्दों को कहा जाता है जिनका कोई निश्चित पूर्ण अर्थ स्पष्ट होता हो। निरर्थक शब्द उन शब्दों को कहते हैं, जिनका कोई कोशगत अर्थ नहीं होता हैं। अत: रचनाकार साहित्य में बोलचाल की स्थिति को अत्यधिक स्वाभाविक बनाने के लिए सार्थक शब्दों के साथ निरर्थक शब्दों का भी सहारा लेते

हैं। यही कारण है कि उन्होंने अपने उपन्यासों में सार्थक शब्दों के साथ-साथ निरर्थक शब्दों का भी प्रयोग किया हैं। उदाहरण के तौर पर हम निम्न रूप से देख सकते हैं कि 'साफ-सुथरा' अर्थात 'साफ' का अर्थ है 'स्वच्छ' और 'सुथरा' का कोई अर्थ नहीं हैं, लेकिन बोलचाल की भाषा में हम साफ-सुथरा का प्रयोग करते हैं। इस शब्द का प्रयोग हमें उपन्यास में भी देखने को मिला हैं। ऐसे अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ हैं।

जैसे-

उलटी-सीधी - नरवानर-शरणकुमार लिंबाले.पृ.सं.32

मेल-मिलाप - नरवानर-शरणकुमार लिंबाले.पृ.सं.35

मार-पीट - नरवानर-शरणकुमार लिंबाले.पृ.सं.45

हाथ-पैर - बहुजन-शरणकुमार लिंबाले.पृ.सं.33

साफ-सुथरा - बहुजन-शरणकुमार लिंबाले.पृ.सं.55

खान-पान – बहुजन-शरणकुमार लिंबाले.पृ.सं.38

कभी-कभार - हिंदू-शरणकुमार लिंबाले.पृ.सं.15

आधी-अधूरी - हिंदू-शरणकुमार लिंबाले.पृ.सं.25

लोट-पोट - हिंदू-शरणकुमार लिंबाले.पृ.सं.32

खुसर-पुसर – त्रिशंकू-अरुण साधू.पृ.सं.8

उलट-पलट - त्रिशंकू-अरुण साधू.पृ.सं.8

बन-ठनकर - त्रिशंकू-अरुण साधू.पृ.सं.8 आदि।

**3.3.2.रचना के आधार पर वर्गीकरण**

रचना के आधार पर शब्दों के तीन प्रकार होते हैं- रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द और योगरूढ़ शब्द आदि। इन शब्दों को हम उदाहरण के साथ निम्न रूप से आगे देख सकते हैं, जैसे-

**3.3.2.1. रूढ़**

"जिन शब्दों के सार्थक खंड न हो सकें उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं।"[40] अत: रूढ़ शब्दों को मौलिक शब्द या अयौगिक शब्द भी कहते हैं। जैसे-

1.पानी[41] 2.रात[42]

3.दिन[43] 4.हाथ[44]

5. पैर[45] 6.कुर्सी[46]

7.रोटी[47] 8.पशु[48]

9.पेड़[49] 10.तीर[50] आदि।

[40]'भाषा विज्ञान',अनुजप्रताप सिंह,पृ.सं.299
[41]'हिंदू',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.95
[42]'हिंदू',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.97
[43]'बहुजन',शरणकुमा रलिंबाले,पृ.सं.22
[44]'नरवानर',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.56
[45]'नरवानर',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.35
[46]'बहुजन',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.14
[47]'बहुजन',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.26
[48]'हिंदू',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.12

अर्थात पानी एक सार्थक शब्द है, इसके खण्ड करने पर ‘पा’ और ‘नी’ का कोई संगत अर्थ नहीं निकलता है। इसी प्रकार रात, दिन, हाथ, पैर, कुर्सी, रोटी आदि शब्दों के खण्ड किए जाये तो ‘रा’,’त’, ‘दि’, ‘न’, ‘हा’, ‘थ’ आदि निरर्थक ध्वनियाँ ही शेष रहेंगीं। इनका अलग अर्थ प्रयोग में कोई अर्थ नहीं हैं।

### 3.3.2.2. यौगिक

“यौगिक वे शब्द हैं जो दो से अधिक इकाइयों से मिलकर बनते हैं।”[51] अर्थात रूढ़ शब्दों के साथ संधि, उपसर्ग या प्रत्यय या कोई और शब्द जोड़कर ‘यौगिक’ शब्द बनते हैं। यौगिक का अर्थ ही है-‘जोड़ा हुआ’ या ‘जोड़कर बनाया हुआ’। जैसे – डाकघर, पाठशाला, विद्यालय आदि। अत: रूढ़ शब्दों के अगर टुकड़े करेंगे तो कोई सार्थक शब्द नहीं मिलते हैं, पर उसके विपरित ‘यौगिक’ शब्द के अगर टुकड़े करने पर सार्थक शब्द या शब्दांश जरुर मिलते हैं। यौगिक शब्दों को निम्न रूप से देख सकते हैं

| | |
|---|---|
| 1.बैलगाड़ी[52] | 2.परोपकार[53] |
| 3. विद्यालय[54] | 4.मुसलधार[55] |
| 5.बकवास[56] | 6.अनुशानन[57] |

[49]‘हिंदू’,शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.25
[50]‘बहुजन’,शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.15
[51]‘त्रिशंकू’,अरुण साधू,पृ.सं.18
[52]‘त्रिशंकू’,अरुण साधू,पृ.सं.19
[53]‘हिंदू’,शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.87
[54]‘हिंदू’,शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.84
[55]‘बहुजन’,शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.38

7.पराजय[58] 8. पायदान[59]

9.आकर्षण[60] 10.आदमन[61] आदि।

'बैलगाड़ी' शब्द 'बैल' और 'गाड़ी' शब्दों की संधि से बना है तथा इसके दोनों खण्डों का पूरा अर्थ निकलता हैं। वैसे ही 'परोपकार' शब्द 'पर' और 'उपकार' शब्दों की संधि से बना है और दोनों का सार्थक अर्थ है। इस प्रकार से यौगिक शब्दों को देख सकते हैं।

**3.3.2.3. योगरूढ़**

जब किसी यौगिक शब्द से किसी रूढ़ अथवा विशेष अर्थ का बोध होता है अथवा जो शब्द यौगिक संज्ञा के समान लगे किन्तु जिन शब्दों के मेल से वह बना है उनके अर्थ का बोध न कराकर, किसी दूसरे ही विशेष अर्थ का बोध कराये तो उसे 'योगरूढ़' कहते हैं।

"जिन शब्दों की व्युत्पत्ति की दृष्टि से तो सार्थक खंड न हो सकें किन्तु जो विशेष अर्थ के घोतक हों। जैसे- जलद (जल + द), पंकज (पंक + ज) आदि। इनमें से जलद का व्युत्पत्ति परक अर्थ हैं – पानी देने वाला, किन्तु यह शब्द केवल

---

[56]'नरवानर',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.40
[57]'नरवानर',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.53
[58]'नरवानर',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.55
[59]'बहुजन',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.27
[60]'त्रिशंकु',अरुण साधू,पृ.सं.23
[61]'त्रिशंकु'अरुण साधू,पृ.सं.22

'बादल' का विशेष अर्थ देता है । इसी प्रकार 'पंकज' का व्युत्पत्ति परक अर्थ है 'कीचड़' में पैदा होने वाला, किन्तु इसका विशेष अर्थ 'कमल' हो गया है ।"[62]

### 3.3.3.मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का ऐतिहासिक आधार पर वर्गीकरण

मराठी भाषा का जन्म महाराष्ट्री और अपभ्रंश भाषाओं से हुआ है । संस्कृत और प्राकृत से निकट का संबंध रहा है । इसलिए मराठी के अधिकतर शब्द संस्कृत, प्राकृत से आये हुए हैं । ऐतिहासिक आधार पर शब्द के चार भेद हैं - 1. तत्सम 2. तद्भव 3. देशज एवं 4.विदेशी । इसी प्रकार मराठी में भी स्रोत के आधार पर शब्द के चार प्रकार माने गये हैं । भाषा को देश, काल, वातावरण और पात्रानुकूल रूप देने के प्रयास में तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है।

#### 3.3.3.1.तत्सम शब्दों का प्रयोग

'तत्सम' का शाब्दिक अर्थ है, 'तत्' (उसके) और 'सम' (समान) अर्थात 'संस्कृत के समान' । जाल्मन के अनुसार "तत्सम वे शब्द हैं जो संस्कृत से बिना किसी स्वनिम परिवर्तन से हिंदी में आए हैं वे 'तत्सम' शब्द कहलाते हैं ।"[63] अत: तत्सम शब्द वे होते हैं, जो बिना परिवर्तन के साथ सीधे संस्कृत से ग्रहण किया गया हो परंतु इस बात पर भी ध्यान देना आवश्यक है कि ये शब्द सीधे संस्कृत से ही हिंदी में नहीं आये हैं । तत्सम शब्द संस्कृत से सीधे पालि, प्राकृत, अपभ्रंश की यात्रा करते

[62] 'हिंदी व्याकरण',कमाता प्रसाद गुरु, पृ.सं-75-76
[63] 'हिंदी व्याकरण',कमाता प्रसाद गुरु,पृ.सं.58

हुए हिंदी में प्रयुक्त वे शब्द तत्सम कहे जाते हैं जो मूल संस्कृत के हैं, जिनमें किसी भी प्रकार का ध्वनि परिवर्तन नहीं हुआ हो। मराठी-हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त किए गए हैं। अनुवाद में शब्द वर्ग की दो स्थितियाँ हो सकती हैं-

1. मूल शब्द के लिए अनुवाद में उसी शब्द वर्ग का शब्द प्रयोग। जैसे – तत्सम शब्द के लिए तत्सम, तद्भव शब्द के लिए तद्भव, देशज शब्द के लिए देशज और विदेशी शब्द के लिए विदेशी आदि।

2. मूल शब्द के लिए किसी और शब्द वर्ग के शब्द का प्रयोग। जैसे –

मराठी से हिंदी में अनूदित उपन्यासों में शब्द वर्ग की स्थितियाँ इस प्रकार हैं –

1. तत्सम शब्द के लिए तत्सम शब्द का प्रयोग

1.अस्वल (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.9)

रीछ (अनु-पृ. सं. 13)

शरणकुमार लिंबाले कृत 'हिंदू' उपन्यास के प्रारंभ में लेखक के मन में उद्घाटित शब्द जिससे उपन्यास की कथावस्तु की एक स्पष्ट संवेदना दिखाई पड़ती है। मूल कृति में 'अस्वल' शब्द का प्रयोग जो एक भोगवादी संकल्पना को स्पष्ट करता है। 'अस्वल' एक जीव का नाम है, यह 'तत्सम' का शब्द है, अनूदित कृति में इसका शाब्दिक अनुवाद मिलता है।

2.पाशवी प्रवृत्ति (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.10)

हिस्त्र वृत्तियों (अनु.पृ.सं.13)

मूल कृति में ‘पाशवी प्रवृत्ति’ जो की ‘तत्सम’ का शब्द प्रयोग है हिन्दी में इसका अनुवाद ‘हिंस्र वृत्तियों’ के रूप में किया गया है। यहाँ पर भावानुवाद किया गया है। भावानुवाद करके अनुवादक ने कृति को स्पष्ट एवं प्रभावी बनाया है।

3.कामजीवन (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ. सं. 11)

व्यक्तित्व (अनु.पृ.सं.13)

मूल मराठी कृति में प्रयुक्त ‘कामजीवन’ ‘तत्सम’ का शब्द में है। अनूदित कृति में व्यक्त्वि जो कि हिन्दी भाषा का शब्द है। मूल में कामजीवन अर्थात अश्लील भोगवादी शब्द है किन्तु व्यक्तित्व शब्द उसके सगुण या अवगुण का भी हो सकता है। शायद अनुवादक ने भावानुवाद तो किया है परन्तु मूल कृति का भाव स्पष्ट नहीं हो रहा है।

5.शिस्न (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.16)

शिस्न (अनु.पृ.सं.19)

‘शिस्न’ यह संस्कृत का शब्द है। अनूदित कृति में जैसे का तैसा प्रयोग मिलता है। जब कि एक पुल्लिंग के रूप यहाँ पर लेखक ने पात्र की मानसिक भावना को प्रस्तुत करने के लिए इसका प्रयोग किया है।

6.नेतृत्व (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.141)

नेतृत्व (अनु.पृ.सं.141)

मूल उपन्यास का ‘नेतृत्व’ तत्सम शब्द है। अनुवादक इस ‘नेतृत्व’ शब्द को ही अनुवाद में अंतरीत किया है, जब कि नेतृत्व राजनैतिक क्षेत्र में बहुत प्रचलित शब्द है इस तरह ‘नेतृत्व’ का नेतृत्व ही शब्द के स्तर पर अनुवाद करके पाठक को पढ़ने तथा समझने हेतु सरल एवं सुलभ बनाया है।

7.मंत्री (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.136)

मंत्री (अनु.पृ.सं.124)

मूल उपन्यास मे प्रयुक्त शब्द ‘मंत्री’ संस्कृत का शब्द है और अनूदित कृति में भी ‘मंत्री’ का ही प्रयोग मिलता है। यहां पर शाब्दिक अनुवाद किया गया है।

8.धर्मनिरपेक्षतावादी (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.140)

धर्मनिरपेक्षवाद (अनु.पृ.सं.127)

मूल में प्रयुक्त ‘धर्मनिरपेक्षतावादी’ संस्कृत का शब्द है इसका अनुवाद ‘धर्मनिरेपक्षतावाद’ किया गया है। अर्थात धर्म के विरोध में वोट्स देनेवाले यहाँ पर भीमा भोले के वाणीमुख से उद्घाटित उपरोक्त शब्द का उल्लेख इस ‘हिंदू’ उपन्यास में मिलता है।

9.पतिव्रता (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.11)

पतिव्रता (अनु.-पृ.सं.13)

मूल कृति में ‘पतिव्रता’ जो की ‘तत्सम’ का शब्द प्रयोग है हिन्दी में इसका अनुवाद ‘पतिव्रता’ के रूप में किया गया है। यहाँ पर शाब्दिक अनुवाद किया गया है।

10.धर्म (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.11)

धर्म (अनु.पृ.सं.13)

मूल कृति में प्रयुक्त शब्द ‘धर्म’ जो की ‘तत्सम’ का शब्द प्रयोग है हिन्दी में इसका अनुवाद ‘धर्म’ के रूप में किया गया है। यहाँ पर शाब्दिक अनुवाद किया गया है।

11.बंधू (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.11)

बन्धु (अनु.पृ.सं.13)

मूल कृति में ‘बंधू’ जो की ‘तत्सम’ का शब्द प्रयोग है हिन्दी में इसका अनुवाद ‘बन्धु’ के रूप में ही किया गया है। बंधू का अर्थ है- भाई। यहाँ पर शाब्दिक अनुवाद किया गया है।

12.हिंदुत्व (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.11)

हिंदुत्व (अनु.पृ.सं.13)

मूल कृति में ‘हिंदुत्व’ जो की ‘तत्सम’ का शब्द प्रयोग है हिन्दी में इसका अनुवाद ‘हिंदुत्व’ के रूप में ही किया गया है। जिसका अर्थ है- हिंदू होने की अवस्था। हिंदुत्व एक जातिवाचक संज्ञा है जो एक जाति-धर्म विशेष में जन्म लेने

वाले सभी मनुष्यों का बोध कराती है। भाषा की प्रकृति के अनुसार यहाँ शब्दानुवाद किया है जो सटीक अनुवाद है।

13.शूद्र (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.11)

शुद्र (अनु.पृ.सं.13)

मूल कृति में लेखक ने 'शूद्र' तत्सम शब्द का प्रयोग किया है। ठीक उसी तरह लक्ष्य भाषा पाठ में भी अनुवादक ने 'शुद्र' तत्सम शब्द का प्रयोग किया है, जिसे समान रूप से अनुवादक ने प्रस्तुत किया है। जिसका अर्थ है- 'हिन्दुओं के चार प्रमुख वर्णों में से एक। 'शूद्र' शब्द हिंदी और मराठी दोनों में ही समान रूप से प्रचलित है। अतः अनुवादक को यहाँ अनुवाद करने की जरूरत अनुभव नहीं हुई।

14.संध्याकाळ (मराठी उपन्यास-त्रिशंकू-पृ.सं.2)

संध्यासमय (अनु.पृ.सं.3)

15.स्थायीभाव (मराठी उपन्यास-त्रिशंकू-पृ.सं.2)

स्थायीभाव (अनु.पृ.सं.3)

16.निर्जीव (मराठी उपन्यास-त्रिशंकू-पृ.सं.2)

निर्जीव (अनु.पृ.सं.3)

17.स्निग्ध (मराठी उपन्यास-त्रिशंकू-पृ.सं.9)

स्निग्ध (अनु.पृ.सं.10)

सारांश रूप में अगर कहा जाये तो इन सारे उपन्यासों में मूल और अनूदित में तत्सम शब्द के लिए तत्सम शब्दों का प्रयोग अनेक जगहों हमें देखने को मिलता हैं । मूल पाठ की शब्द स्तरीय विशेषता का विशेष ध्यान रखते हुए अनुवाद किया गया हैं ।

### 3.3.3.2.तद्भव शब्दों का प्रयोग

"तद्भव शब्द भी दो शब्दों के योग से बनते हैं- तत् + भव । 'तत्' अर्थात 'उससे' और 'भव' का अर्थ है – 'उत्पन्न' । अर्थात उससे उत्पन्न ।"[64] यानी संस्कृत भाषा से उत्पन्न शब्दों को 'तद्भव' शब्द कहा जाता है । ये शब्द संस्कृत से उत्पन्न या विकसित हैं । तद्भव शब्द प्राकृत से होकर हिंदी में आये हैं । तद्भव शब्दों का प्रयोग इन उपन्यासों में हुआ हैं जो इस प्रकार हैं-

तद्भव शब्द के लिए तद्भव शब्द का प्रयोग

1.निवडणुक (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.139)

चुनाव (अनु.पृ.सं.127 )

इस उपन्यास में 'निवडणुक' तत्सम का तद्भव रूप है, अनूदित कृति में अनुवादक ने 'चुनाव' शब्द का प्रयोग किया। इस उपन्यास ने अचलपुर गांव के चुनाव हेतु सरपंच और विधायक पद के लिए इस में चुनाव शब्द का प्रयोग किया गया है ।

रात (हिंदू-पृ.सं.14)

[64]डॉ.हणमंतराव पाटिल,'भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा',पृ.सं.225

रात (अनु.पृ.सं.15)

घर (हिंदू-पृ.सं.15)

घर (अनु.पृ.सं.16)

काम (हिंदू-पृ.सं.15)

काम (अनु.पृ.सं.16)

हात (उपल्या-पृ.सं.12)

हाथ (अनु.पृ.सं.14)

बस्ती (उपल्या-पृ.सं.14)

बस्ती (अनु.पृ.सं.16)

परवाह (उपल्या-पृ.सं.14)

परवाह (अनु.पृ.सं.16)

दूध (त्रिशंकू-पृ.सं.14)

दूध (अनु.पृ.सं.15)

पाणी(त्रिशंकू-पृ.सं.16)

पानी (अनु.पृ.सं.16)

किसान (त्रिशंकू-पृ.सं.18)

किसान (अनु.पृ.सं.19)

अनूदित कृतियों में तत्सम शब्द के लिए तत्सम शब्दों का प्रयोग और तद्भव शब्द के लिए तद्भव शब्द का प्रयोग कहीं-कहीं तत्सम और तद्भव शब्द के लिए विदेशी शब्द प्रयोग हमें देखने को मिलता हैं।

**3.3.3.3.देशज शब्दों का प्रयोग**

देशज या देशी वे शब्द होते हैं जिनकी व्युत्पत्ति नहीं मिल पाती। इनमें प्राय: वे शब्द आते हैं, जो लोकजीवन में प्रयोग होते हैं। पर जिनके मूल स्रोत का पता नहीं। इनमें वे शब्द भी आते हैं जिनका आवश्यकतानुसार निर्माण होता हो। इस स्त्रोत में आनेवाले शब्दों का संस्कृत भाषा के शब्दों से कोई संबंध नहीं है। वे प्रादेशिक बोलियों के शब्द हैं जो हिंदी में आये हैं। देशज वे शब्द हैं जो 'अज्ञान व्युत्पत्तिक' और 'अनुकरणात्मक' होते हैं। अत: साहित्य में पत्रों के माध्यम से देशी शब्दों का प्रयोग होता है। इसलिए साहित्यकार भी देशी शब्दों का चयन करता है। इन उपन्यासों के अंतर्गत भी देशज शब्दों का प्रयोग हुआ हैं जो इस प्रकार हैं-

1.ढोलकी (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.47)

ढोलकी (अनु.पृ.सं.45)

'ढोलकी' यह एक देशज हिन्दी भाषा का शब्द है, जिससे इस उपन्यास में सोनाली दलित युवक रोहित कांबले के प्रेम में दीवानी हो चुकी है। ढोलक की आवाज सुनकर उसके मन में अनेक तर्क-वितर्क ओर विचार मन में उठते रहते हैं। अनूदित कृति में वहीं शब्द मिलता है। इसमें शब्दानुवाद किया गया है। ढोलकी शब्द दलित धर्म से संबंधित है।

2.घोषणा (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.139)

नारेबाजी (अनु.पृ.सं.127 )

मूल उपन्यास का ‘घोषणा’ मराठी शब्द है । जिसका अनूदित कृति में ‘नारेबाजी’ किया गया है । आंदोलन हेतु इस शब्द का प्रयोग किया जाता है । इस उपन्यास में उद्धाटित शब्द ही एक प्रकार से कई अर्थो को सामने खड़ा करता है किन्तु अनुवादक ने सफलता से अनुवाद किया है।

3.मामा (मराठी उपन्यास-हिंदू- पृ.सं.10)

मामा (अनु.पृ.सं.14)

‘मामा’ मूल उपन्यास में प्रयुक्त शब्द ‘देशज’ शब्द है जो एक भारतीय संस्कृति का प्रतीक है । मामा का अर्थ माँ का भाई के लिए भी मामा कहकर संबोधन करते हैं । पति के पिता को भी कुछ जगह मामा बुलाते हैं । अनूदित कृति में किसी के साथ इस शब्द का रिश्ता नहीं मिलता बल्कि इस शब्द का प्रयोग संबोधन के रूप में किया है । जैसे- ‘निकम मामा’ इनको इस उपन्यास में सभी जगह एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में प्रयोग किया गया है । अतः इसमें शाब्दिक अनुवाद किया गया है ।

4.जंगल (मराठी उपन्यास-हिंदू- पृ.स.9)

जंगल (अनु.पृ.सं.13)

मूल कृति (मराठी) में जंगल शब्द का प्रयोग किया है। जो ‘देशज’ शब्द हैं अनूदित कृति में जंगल ही शब्द प्रयोग किया गया है जो कि ‘तत्सम’ (संस्कृत) का है। किन्तु यहाँ पर दलित पीड़ा के प्रतीक को यह शब्द प्रकट करता है।

टक्कर (उपल्या-पृ.सं.45)

टक्कर (अनु.पृ.सं.46)

मूल कृति (मराठी) में टक्कर शब्द का प्रयोग किया है। अनूदित कृति में टक्कर ही शब्द प्रयोग किया गया है जो कि ‘देशज’ शब्द है।

गल्ली (उपल्या-पृ.सं.25)

गल्ली (पृ.सं.26)

मूल कृति में गल्ली शब्द का प्रयोग किया है। वैसे ही अनूदित कृति में भी गल्ली ही शब्द प्रयोग किया गया है जो कि ‘देशज’ शब्द है।

ठेस (उपल्या-पृ.सं.40 )

ठेस (पृ.सं.41)

धोती (त्रिशंकू-पृ.सं.22)

धोती (पृ.सं.24)

मूल कृति में धोती शब्द का प्रयोग किया है। अनूदित कृति में अनुवादक ने धोती शब्द का ही प्रयोग किया गया है जो कि ‘देशज’ शब्द है।

### 3.3.3.4.विदेशी शब्दों का प्रयोग

"विदेशी शब्द का अर्थ है जो अन्य देशों की भाषाओं से आये हो ।"[65] हर समय भारत विदेशी जाति और साहित्य के संपर्क में रहा हैं । क्योंकि भारत में अंग्रेज,मुग़ल, तुर्की,डच, पुर्तगाल आदि विदेशी जाति के लोग भारत में आये थे इसलिए अपनी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्द आये हैं । जो शब्द विदेशी भाषाओं के प्रभाव से हिंदी में आये हैं वे शब्द तथा तत्सम,तद्भव और देशज शब्दों की श्रेणी में नहीं आते वे शब्द विदेशी शब्द कहलाते हैं । इन उपन्यासों में शिक्षित पात्रों के माध्यम से अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग तथा अन्य पात्रों के माध्यम से अरबी तथा फारसी शब्दों का प्रयोग भी हुआ हैं । जैसे-

**अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग**

1. रिटायर (मराठी उपन्यास हिंदू- पृ. सं. 12 )

रिटायर (अनु. पृ. सं. 16)

'रिटायर' मूल हिंदू उपन्यास में प्रयुक्त शब्द अंग्रेजी शब्द अनूदित रूप अंग्रेजी भाषा का ही शब्द लेकर शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद करके लोकमानस में अनुवादक ने कृति को रोचक बना दिया है । किन्तु यहां पर लोगों के समझने की भावना को देखकर ही यहाँ पर शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद किया गया है । इस तरह हिन्दी को सरल बनाने का प्रयास यहां पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है ।

---

[65]'शब्दों का अध्ययन'भोलानाथ तिवारी,पृ.सं.19

2.टेस्ट (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ. सं. 12)

टेस्ट (अनु. पृ. सं. 16)

'टेस्ट' मूल में प्रयुक्त शब्द अंग्रेजी शब्द है, किन्तु टेस्ट - का कई अर्थों में प्रयोग हिन्दी भाषाओं में मिलता है। जैसे जांच, स्वाद आदि किन्तु अनुवादक ने मूल में उद्घाटित प्रसंग को सामने रखकर टेस्ट शब्द का ही प्रयोग किया है। यहाँ पर टेस्ट शब्द चाय के संदर्भ में लिया गया है, मूल को समझते हुए टेस्ट शब्द को अपने अनूदित कृति में निहित किया है।

3.ओवरटेक (मराठी उपन्यास-हिंदू- पृ. सं. 17)

ओवरटेक (अनु. पृ. सं. 19 )

मूल उपन्यास का शब्द 'ओवरटेक' वैसे ही अनूदित रूप में मिलता है। मूलतः मूल में तथा अनूदित कृति में प्रयुक्त शब्द अंग्रेजी का ही है। ओवरटेक का अर्थ यह है कि, पार करना या आगे जाना। इन शब्द को न लेते हुए अनुवादक ने शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद किया है।

4.पोस्ट ऑफिस (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ. सं. 19)

पोस्ट ऑफिस (अनु. पृ. सं. 21)

मूल उपन्यास में प्रयुक्त शब्द 'पोस्ट ऑफिस' अंग्रेजी शब्द है। जिसका अर्थ होता है, 'डाकघर' किन्तु हिंदू उपन्यास में समसामायिक संदर्भ को लेकर लिखा हुआ है। इसलिए अनुवादक ने अनुवादनीयता के स्तर पर 'पोस्ट ऑफिस' शब्द का ही प्रयोग किया है।

5. रिअ‍ॅक्ट (मराठी उपन्यास-हिंदू- पृ. सं. 26)

रिअ‍ॅक्ट (अनु. पृ. सं. 27)

'रिअ‍ॅक्ट' मूल में प्रयोग किया हुआ शब्द अंग्रेजी है अनुवाद में रिअ‍ॅक्ट शब्द का ही प्रयोग किया गया है। रिअ‍ॅक्ट का अर्थ हिन्दी में प्रतिक्रिया होता है। किन्तु अनुवादक ने सूझबूझ से शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद किया है क्योंकि भारतीय भाषाओं तथा अन्य भाषा में रिअ‍ॅक्ट शब्द का प्रयोग मिलता है।

6.मर्डर (मराठी उपन्यास-हिंदू- पृ. सं. 33 )

मर्डर (अनु. पृ. सं. 32)

मूल में प्रयुक्त शब्द 'मर्डर' अंग्रेजी शब्द है। अनूदित रूप में भी मर्डर ही है। हिन्दी भाषा में मर्डर के लिए हत्या, खून आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। किन्तु भाव को दृष्टि में रककर अनुवादक ने लक्ष्यभाषा में रूपांतरित करने का सफल प्रयास किया है।

7.आयविटनेस (मराठी उपन्यास-हिंदू- पृ. सं. 33)

आइ-विटनेस (अनु. पृ. सं. 32)

'आयविटनेस' मूल में प्रयोग किया शब्द तथा अनूदित रूप आइविटनेस एक अंग्रेजी शब्द है। आइविटनेस का मतलब है-साक्ष या गवाह। किन्तु अनूदित कृति में बड़ी सर्तकता से आइविटनेस शब्द का लिप्यंतरण करके हिन्दी भाषा को स्पष्ट एवं प्रभावी किया है। यहाँ पर प्रमुख रूप से शाब्दिक अनुवाद मिलता है।

8.आयडिया (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ. सं. 54)

आयडिया (अनु. पृ. सं. 51)

'आयडिया' अंग्रेजी विदेशी भाषा का शब्द है अनूदित कृति में भी 'आयडिया' शब्द का ही प्रयोग किया हुआ है। क्योंकि हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा में अंग्रेजी भाषा का प्रभाव दिखाई पड़ता है इसी कारण हिंदू उपन्यास में भी राजनैतिक नेता लोग मातृभाषा के साथ साथ विदेशी शब्दों का भी प्रयोग करतें है। इसी तरह अनुवादक ने भी मूल उपन्यास के लेखक की भावना को अनूदित कृति में निहित कर दिया हैं।

9.गेस्ट (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.13)

गेस्ट (पृ.सं.15)

'गेस्ट' मूल में प्रयुक्त शब्द अंग्रेजी शब्द है। गेस्ट का अर्थ है- अतिथि जो हिन्दी भाषा में प्रयोग किया जाता है। अनुवादक ने मूल में उद्घाटित प्रसंग को ध्यान में रखकर गेस्ट शब्द का शब्दानुवाद किया है।

10.पार्टनर (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.11)

पार्टनर (पृ.सं.14)

मूल उपन्यास का शब्द 'पाटर्नर' वैसे ही अनूदित कृति में रूपांतरित किया गया है। मूलतः मूल में तथा अनूदित कृति में प्रयुक्त शब्द अंग्रेजी का ही है। पाटर्नर का अर्थ यह है-सहभागी। इन शब्द को न लेते हुए अनुवादक ने शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद किया है।

11.फर्निचर (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.13)

फर्नीचर (अनु.पृ.सं.15)

मूल उपन्यास में प्रयुक्त 'फर्निचर' शब्द का अनुवाद अनुवादक ने अनूदित कृति में भी 'फर्निचर' शब्द के रूप में ही किया है। मूलतः मूल में तथा अनूदित कृति में प्रयुक्त शब्द अंग्रेजी का ही है। फर्निचर का अर्थ यह है कि लकड़ी से बनी हुई कोई भी वस्तु। लेकिन अनुवादक ने मूल में जो शब्द प्रयुक्त किया गया है वैसे ही अनुवाद में भी शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद किया है।

12.होस्टेल (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.13)

होस्टल (पृ.सं.15)

मूल उपन्यास का शब्द 'होस्टेल' अंग्रेजी शब्द है वैसे ही अनूदित रूप 'होस्टेल' ही है। मूलतः हिंदी भाषा में 'होस्टेल'का अर्थ होता है-'छात्रावास' लेकिन अनुवादक ने छात्रावास शब्द का प्रयोग न करने हुए अनूदित कृति में भी 'होस्टेल' शब्द से ही अनुवाद किया है।

13.प्रायव्हसी (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.14)

प्राईवेसी (पृ.सं.16)

मूल में तथा अनूदित कृति में प्रयुक्त शब्द अंग्रेजी का ही है। प्रायव्हसी का अर्थ है- गोपनीयता या निजी है। लेकिन अनुवादक ने मूल में जो शब्द प्रयुक्त किया गया है वैसे ही अनुवाद में भी शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद किया है।

14.फ्रेश (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.14)

फ्रेश (पृ.सं.16)

15.इमेज (मराठी उपन्यास-बहुजन-पृ. सं. 11)

इमेज (अनु. पृ. सं. 15 )

इमेज मूल उपन्यास में प्रयोग किया हुआ शब्द जो कि विदेशी भाषा अंग्रेजी का है जबकि इसका अर्थ प्रभाव होता है परन्तु अनुवादक ने मूल उपन्यास को प्रभावशाली बनाने हेतु शाब्दिक अनुवाद किया है।

17. प्लीज (मराठी उपन्यास-बहुजन-पृ. सं.16 )

प्लीज (अनु. पृ. सं. 18)

'प्लीज' मूल उपन्यास में उद्घाटित शब्द अंग्रेजी का है। अनूदित रूप प्लीज ही यहां पर लिया गया है, क्योकि अनुवादनीयता के स्तर पर लोकमानस को देखते हुए अनुवादक ने शाब्दिक अनुवाद करके हिन्दी भाषा को स्पष्ट बना दिया है।

18.चेंज (मराठी उपन्यास-बहुजन-पृ.सं.16)

चेंज (अनु. पृ. सं. 19)

'चेंज' मूल उपन्यास में प्रयोग किया शब्द अंग्रेजी का है।। यहाँ अनूदित कृति में भी चेंज का प्रयोग किया हुआ है। हालांकि चेंज मतलब बदल होता है किन्तु अनुवाद के स्तर पर मूल उपन्यास के भाव को सामने रखकर अनूदित हिन्दी उपन्यास को सरल बनाने का प्रयास किया है।

19.स्कालरशिप (मराठी उपन्यास-त्रिशंकू-पृ.सं.14)

स्कालरशिप (पृ.सं.15)

मूल उपन्यास में प्रयुक्त ‘स्कालरशिप’ शब्द का अनुवाद अनुवादक ने अनूदित कृति में भी ‘स्कालरशिप’ शब्द के रूप में ही किया है। मूलतः मूल में तथा अनूदित कृति में प्रयुक्त शब्द अंग्रेजी का ही है । स्कालरशिप का अर्थ यह है- शिष्यवृत्ति । लेकिन अनुवादक ने मूल में जो शब्द प्रयुक्त किया गया है वैसे ही अनुवाद में भी शब्दानुवाद किया है।

20.ओल्ड (मराठी उपन्यास-त्रिशंकू-पृ.सं.21)

ओल्ड (पृ.सं.22)

मूल में तथा अनूदित कृति में प्रयुक्त शब्द अंग्रेजी का ही है। ओल्ड का अर्थ है- कोई पुरानी वस्तु लेकिन अनुवादक ने मूल में जो शब्द प्रयुक्त किया गया है वैसे ही अनुवाद में भी शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद किया है।

21.थिंक (मराठी उपन्यास-त्रिशंकू-पृ.सं.21)

थिंक (पृ.सं.22)

‘थिंक’ अंग्रेजी विदेशी भाषा का शब्द है अनूदित कृति में भी ‘थिंक’ शब्द का प्रयोग ही मिलाता है। मूल उपन्यास में प्रयुक्त शब्द 'थिंक' जो कि अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग किया हुआ है क्योंकि हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा में अंग्रेजी भाषा का प्रभाव दिखाई पड़ता है इसी कारण अनुवादक ने उसी शब्द का प्रयोग किया है।

**3.3.3.5.अरबी तथा फारसी शब्दों का प्रयोग**

1. वाममार्ग (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ. सं. 52)

वाममार्ग (अनु.पृ. सं. 49 )

मूल में प्रयुक्त 'वाम' शब्द फारसी है अनूदित कृति में भी वाममार्ग शब्द का ही प्रयोग मिलता है। जिसका भावार्थ होता है-किसी की उपासना करना। यहां पर शाब्दिक अनुवाद किया गया है।

2. माल (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ. सं. 97)

माल (अनु. पृ. सं. 89)

'माल' फारसी भाषा का शब्द है, अनुवाद में माल शब्द का ही प्रयोग मिलता। अनूदित उपन्यासों में माल शब्द का प्रयोग करके शाब्दिक अनुवाद किया है। माल शब्द का उपन्यास में स्त्री की कोमलता के अश्लीलता के सन्दर्भ में प्रयुक्त किया गया है।

3.घटना (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.75)

संविधान (अनु.पृ.सं.70)

'घटना' मूल कृति में प्रयुक्त शब्द अरबी का शब्द है। अनुदित कृति में 'संविधान' शब्द से अनुवाद किया है। डॉ. बाबासाहब अंबेडकर के व्यक्तित्व तथा उनके कार्य की याद दिलाने वाला यह शब्द इस उपन्यास का एक महत्वपूर्ण अंग है।

4.पुढारी (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ. सं. 87)

नेतागण (अनु. पृ. सं. 80 )

‘पुढारी’ मूल में प्रयुक्त शब्द फारसी शब्द है जबकि अनूदित कृति में समाहित शब्द नेतागण संस्कृत का शब्द है। इसमें शाब्दिक अनुवाद किया गया है।

5.शांतता कमेटी (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ. सं. 132)

अमन कमेटी (अनु. पृ. सं. 132)

शांतता कमटी मूल उपन्यास हिंदू में लिया गया शब्द है। शांतता मराठी भाषा का शब्द तथा ‘कमेटी’ अंग्रेजी का शब्द है। अनुवाद में ‘अमन कमेटी’ शब्द का प्रयोग किया गया है। अतः अनूदित कृति में बड़ी सफलतापूर्वक ‘अमन कमेटी’ शब्द का प्रयोग किया हुआ है क्योंकि अमन अरबी भाषा का शब्द है और अरबी भाषा में अमन बहुत ही प्रसिद्ध है। इस तरह कह सकते हैं कि अनुवादनीयता के स्तर अमन कमेटी शब्द को लेकर हिंदू उपन्यास को रणसूभे जी ने रोचक तथा प्रभावशाली बना लिया है।

6. ताफा (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ. सं. 130)

काफिला (अनु. पृ. सं. 130)

‘ताफा’ मराठी बोली का शब्द है। मूल उपन्यास में प्रयुक्त शब्द ताफा का अनुवाद अनूदित कृति में काफिला शब्द से किया है। यह शब्द अरबी का है। हिन्दी परंपरा के अनुसार काफिला मतलब यात्रा ‘जुलूस’ होता परन्तु यहां पर ग्राम की भाषा के अनुसार ग्रामीण शैली में अनुवादक ने अनुवाद करके कृति को प्रभावी बनाया है। इसमें शाब्दिक अनुवाद मिलता है।

8.पांठिबा (मराठी उपन्यास-हिंदू- पृ. सं. 136)

समर्थन (अनु. पृ. सं. 136)

मूल उपन्यास में प्रयुक्त ‘पांठिबा’ शब्द मराठी का ही है। अनुवाद समर्थन शब्द से किया गया है। समर्थन फारसी का शब्द है।

9.लोकशाही (मराठी उपन्यास-बहुजन-पृ.सं.139)

जनतंत्र (अनु. पृ. सं. 127)

‘लोकशाही’ फारसी का शब्द है, जिसका अनुवाद ‘जनतंत्र’ नाम से मिलता है। जब कि यह एक संस्कृत का शब्द है। यहां पर शाब्दिक अनुवाद अनुवाद मिलता है।

10.घोषणा (मराठी उपन्यास-बहुजन-मूल पृ. सं. 181)

नारा (अनु. पृ. सं. 138)

मूल में प्रयुक्त शब्द घोषणा मराठी का ही शब्द है। अनुवाद नारा शब्द से किया है, जो कि ‘अरबी’ का शब्द है हिन्दी परंपरा में नारा शब्द अर्थ जोर का शब्द तेज आवाज बुलंद की जाने वाली सामूहिक आवाज जैसे- ‘हिंदू में हर-हर महादेव’ का नारा लगाना। इस तरह अनुवादक ने प्रभावशाली शाब्दिक अनुवाद किया है।

11.आमदार (मराठी उपन्यास-उपल्या-मूल पृ. सं. 176)

विधायक (अनु. पृ. सं. 124)

'आमदार' मूल में प्रयुक्त शब्द फारसी है। जो कि संपूर्ण तहसील का प्रतिनिधित्व करने वाला होता है। अनुवाद में 'विधायक' शब्द का प्रयोग मिलता है। हिन्दी का शब्द है। यहाँ पर शाब्दिक अनुवाद किया

12. सरकार (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.54)

सरकार (अनु.पृ.सं.55)

'सरकार' मूल में प्रयुक्त शब्द फारसी है। जो कि संपूर्ण देश का प्रतिनिधित्व करने वाला होता है। अनुवाद में 'सरकार' शब्द का प्रयोग मिलता है। यहाँ पर शाब्दिक अनुवाद किया

13.आराम (मराठी उपन्यास-त्रिशंकू- पृ.सं.32)

आराम (अनु-पृ.सं.31)

मूल उपन्यास में प्रयुक्त 'आराम' शब्द मराठी का ही है। अनुवाद में भी 'आराम' शब्द से किया गया है। जो कि आराम फारसी का शब्द है।

14.हकीकत (मराठी उपन्यास-त्रिशंकू-पृ.सं.45)

हकीकत (अनु.पृ.सं.44)

मूल उपन्यास में प्रयुक्त 'हकीकत' फारसी का है। अनुवाद में भी 'हकीकत' शब्द से ही अनूदित किया गया है। जिसका अर्थ होता है- यथार्थता या सच्चाई।

5. मूल शब्दवर्ग के लिए किसी और शब्दवर्ग के शब्द का प्रयोग

1. तत्सम शब्द के लिए तद्भव शब्द का प्रयोग

अक्रमक (मूल पृ. सं. 151)

आक्रमक (अनु. पृ. सं. 139)

'अक्रमक' शब्द संस्कृत का है, जिसका तद्भव रूप आक्रमक संस्कृत का ही रूप है इसका शाब्दिक अर्थ है। हल्ला करने वाला। इस प्रकार अनुवादक ने शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद किया है।

बुद्धि (हिंदू-पृ.सं.13)

अकल (पृ.सं.15)

'बुद्धि' शब्द संस्कृत का है, जिसका तद्भव रूप 'अकल' है। इसका अर्थ है- समझ। बुद्धि ही मनुष्य को नवीन परिस्थितियों को ठीक से समझने में सहायता करती है।

पौर्णिमा (त्रिशंकू-पृ.सं.12)

पूनम (पृ.सं.13)

'पौर्णिमा' शब्द मराठी संस्कृत का है, जिसका तद्भव रूप 'पूनम' है। इसका अर्थ है- चंद्रमास के शुक्ल पक्ष की अंतिम तिथि जिसमें चन्द्रमा अपने पूरे आकार में आता है उस दिन को पौर्णिमा कहा जाता है।

रात्री (त्रिशंकू-पृ.सं.15)

रात (अनु.पृ.सं.16)

'रात्री' शब्द संस्कृत का है, जिसका तद्भव रूप 'रात' है। इसका अर्थ है- समय का वह भाग जिसमें सूर्य का प्रकाश हम तक नहीं पहुंचता है उसे 'रात्रि' कहा जाता है।

नखशिखांत(उपल्या-पृ.सं.11)

नख से शिख तक (पृ.सं.13)

'नखशिखांत' शब्द संस्कृत का है, जिसका तद्भव रूप 'नख से शिख तक' है । इसका अर्थ है- पैर के नाखून से लेकर सिर के बालों तक के सब अंगो का वर्णन । इस उपन्यास में इस शब्द का प्रयोग स्त्री की कोमलता का वर्णन करने हेतु किया गया है ।

थोरले मेहुणे (मराठी उपन्यास हिंदू-पृ.सं.12)

बड़े साले (अनु.पृ.सं.14)

'हिंदू' उपन्यास में थोरले मेहुणे मराठी (संस्कृत ) का ही शब्द है । अनूदित कृति में बड़े साले का प्रयोग किया है बड़े साले का मतलब है, पत्नी का बड़ा भाई । यहां पर अनुवादक ने स्पष्ट अनुवाद करके कृति को प्रभावी बनाया है ।

बंधू (उपल्या-पृ.सं.17)

भाई (पृ.सं.18)

'बंधू' शब्द संस्कृत का है, जिसका तद्भव रूप 'भाई' है ।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि तत्सम शब्दों के लिए तद्भव शब्दों का प्रयोग इन उपन्यासों में इस प्रकार से किया गया है ।

**2.तद्भव शब्द के लिए तत्सम शब्द का प्रयोग**

राग (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.104)

क्रोध (अनु.पृ.सं.105)

मूल में प्रयुक्त ‘राग’ तद्भव शब्द है इसका तत्सम रूप ‘क्रोध’ है। इसका अर्थ है- गुस्सा होना। इस उपन्यास में इस शब्द का प्रयोग आन्दोलन के सन्दर्भ में किया गया है।

आंगोळ (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.75)

स्थान (अनु.पृ.सं.77)

मूल में प्रयुक्त ‘आंगोळ’ तद्भव (मराठी) शब्द है इसका तत्सम रूप ‘स्थान’ है।

पहाटे (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.75)

प्रात:काल (अनु.पृ.सं.77)

मूल में प्रयुक्त ‘पहाटे’ तद्भव (मराठी) शब्द है इसका तत्सम रूप ‘प्रात:काल’ है।

मुलगी (उपल्या-पृ.सं.13)

सुपुत्री (पृ.सं.16)

मूल में प्रयुक्त ‘मुलगी’ तद्भव (मराठी) शब्द है इसका तत्सम रूप ‘सुपुत्री’ है।

फुल (हिंदू-पृ.सं.25)

पुष्प (पृ.सं.26)

मूल में प्रयुक्त ‘फुल’ तद्भव (मराठी) शब्द है इसका तत्सम रूप ‘पुष्प’ है।

आठवणी (त्रिशंकू-पृ.सं.18)

स्मृतियाँ  (पृ.सं.19)

मूल में प्रयुक्त ‘आठवणी’ तद्भव (मराठी) शब्द है इसका तत्सम रूप ‘स्मृतियाँ’ है।

जागा (त्रिशंकू-पृ.सं.18)

स्थान (पृ.सं.19)

मूल में प्रयुक्त ‘जागा’ तद्भव (मराठी) शब्द है इसका तत्सम रूप ‘स्थान’ है।

शंका (बहुजन-पृ.सं.14)

संदेह (पृ.सं.15)

मूल में प्रयुक्त ‘शंका’ तद्भव (मराठी) शब्द है इसका तत्सम रूप ‘संदेह’ है।

**3.तत्सम और तद्भव शब्द के लिए विदेशी शब्द प्रयोग**

भ्रम (उपल्या-पृ.सं.104)

गलत फहमी (पृ.सं.106)

स्तुति (उपल्या-पृ.सं.104)

तारीफ(पृ.सं.106)

उच्च प्रतीचा (हिंदू-पृ.सं.25)

दर्जेवाला (पृ.सं.26)

झाड़ (हिंदू-पृ.सं.25)

पेड़ (पृ.सं.26)

अनूदित कृतियों में तत्सम शब्द के लिए तद्भव शब्द का प्रयोग, तद्भव शब्द के लिए तत्सम शब्द का प्रयोग, तत्सम और तद्भव शब्द के लिए विदेशी शब्द प्रयोग से ऐसा ज्ञात होता है कि कुछ अनुवादकों की अपनी भाषा शैली होती है और वे कभी-कभी मूल पाठ की शब्दस्तरीय विशेषता का अधिक ध्यान न रखते हुए वे अपनी शैली में ही अनुवाद कर देते है।

**मराठी शब्द के लिए अन्य शब्द का प्रयोग**

1. नागवं (मराठी उपन्यास हिंदू- पृ. सं. 17 )

   नंगा (अनु. पृ. सं. 19)

मूल उपन्यास में प्रयुक्त 'नागव' शब्द 'कोकणी' मराठी बोली का शब्द है। जब कि अनुवाद में 'नंगा' इसका शाब्दिक अनुवाद किया है। उपन्यास में प्रयुक्त गोपीचंद के भोगवादी स्वरूप का दर्शन यहाँ इस शब्द से मिलता है। यह अश्लील शब्द के रूप में प्रयुक्त है।

2. करकचून (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ. सं. 17)

   छेड़छाड़ (अनु. पृ. सं. 20)

मूल उपन्यास में प्रयुक्त 'करकचून' यह मराठी बोली का शब्द है। अनूदित कृति में 'छेड़छाड़' शब्द जो कि हिन्दी में प्रचलित शब्द है अर्थात यह हिन्दी भाषा का शब्द है।

3. बांडगुळ (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.28)

परगाछा (अनु. पृ. सं. 30)

मूल कृति में प्रयुक्त ‘बांडगुळ’ मराठी का शब्द है। अनूदित कृति में ‘परगाछा’ शब्द का प्रयोग किया गया है कि जब कि मराठी में प्रयुक्त ‘बाडगूळ’ एक प्रकार का कीड़ा है, जो कि किसानों का मित्र कहलाता है। बांडगूळ से खेती के लिए सेंद्रिय खत का निर्माण किया जाता है, किन्तु यहाँ पर मिलिन्द कांबले से संबंधित भावानुवाद करके ‘परगाछा’ शब्द का प्रयोग मिलता है।

4. धंदा (मराठी उपन्यास-हिंदू- पृ. सं. 74)

धंधा (अनु. पृ. सं. 69)

मूल में प्रयुक्त ‘धंदा’ मराठी भाषा का शब्द प्रयोग किया है। मात्र ‘धंधा’ शब्द का अर्थ है कि व्यवसाय, कारोबार किन्तु अनुवादक ने अनुदित कृति में उसी अर्थ में वेश्या के संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग किया है। जो कि यह शब्द अश्लीलता को स्पष्ट करता है।

5. गावकुसाबाहेर (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ. सं. 87 )

गाँव के बाहर की बस्ती (अनु. पृ. सं. 80 )

इस उपन्यास में प्रयोग किया हुआ शब्द ‘गांवकुसाबाहेर’ मराठी बोली का शब्द है। जब कि हिन्दी परंपराओं के अनुसार अनूदित कृति में कोई शाब्दिक अर्थ मालूम नहीं पड़ता। इसलिए यहां पर अनुवाद की सीमाओं के अनुसार अनुवादक ने कुशलता के साथ भावानुवाद किया है। जिससे स्पष्ट होता है कि गाँव से बाहर रहने वाले लोगों की बस्ती यानी अछूतो की बस्ती।

6.ओकारीची भरनी (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.21)

वामन का ज्वार (अनु.पृ.सं.23)

मूल में प्रयुक्त 'ओकारीची भरनी' शब्द मराठी बोली का शब्द है। जब कि अनुवाद में 'वामन का ज्वार' इसका शाब्दिक अनुवाद किया है। उपन्यास में प्रयुक्त गौतम के बदन से पसीने की बदबू का वर्णन इस शब्द से मिलता है।

7. मांग (उपल्या-पृ.सं. 44 )

मातंग (अनु. पृ. सं. 41 )

मूल उपन्यास में प्रयुक्त 'मांग' शब्द मराठी के एक जाति का नाम है, जो कि दलितों में भी सबसे निचले श्रेणी में आती है। यह शब्द संस्कृत का है किन्तु अनुवाद में भी मातंग तत्सम का ही रूप है। यहाँ पर शाब्दिक अनुवाद मिलता है।

**निष्कर्ष**

सारांश रूप में अगर कहा जाये तो ऐतिहासिक आधार पर शब्दों का वर्गीकरण 1. तत्सम 2. तद्भव 3. देशज एवं 4.विदेशी आदि स्तर पर किया गया है। भाषा को वातावरण और पात्रानुकूल रूप देने के प्रयास में तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी आदि शब्दों का प्रयोग इस तरह से किया गया है साथ ही साथ उपरोक्त उदाहरणों को ध्यान में लेते हुए कहा जा सकता है कि मूल कृति में जिस शब्दवर्ग का प्रयोग किया गया है, उससे अलग शब्दवर्ग का भी प्रयोग अनुवाद में किया गया हैं। अनुवादक की शैली भी इसका एक कारण हो सकती है। अनुवादकों की अपनी एक

भाषा शैली होती है। मूल पाठ की शब्दस्तरीय विशेषता का अधिक ध्यान न रखने के कारण कभी-कभी वे अपनी शैली में अनुवाद कर देते हैं।

# चतुर्थ अध्याय

## मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन : 'वाक्य' के स्तर पर

# चतुर्थ अध्याय

## मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन : 'वाक्य' के स्तर पर

जब भी हमें अपने मन की बात दूसरों तक पहुंचानी होती है या किसी से बातचीत करनी होती है तो हम वाक्यों का सहारा लेकर ही बोलते हैं, वैसे तो वाक्य विभिन्न शब्दों के सुसंगत योग से बनता है परन्तु वाक्य में आएं हुए सभी घटक परस्पर मिलकर एक पूरा विचार या संदेश प्रकट करते हैं। वाक्य छोटा हो या बड़ा किसी न किसी विचार या भाव का पूर्णतः व्यक्त करने की क्षमता रखता है। इस भाषा की वह लघुत्तम इकाई जिनके माध्यम से वक्ता अपने भावों एवं विचारों को संप्रेषित करता है, वह 'वाक्य' कहलाता है। इन्हीं वाक्यों के रूप में ही लेखक अपने विचारों, भावों को हम पढ़ सकते हैं। भावों, विचारों को शब्दों की सुसंगत व्यवस्था में बैठना ही 'वाक्य' है, जिसका उद्देश्य वाचकों या श्रोता को विषय संबंधित अर्थपूर्ण संदेश पहुँचाना है।

### 4.1 वाक्य की परिभाषा एवं महत्त्व

भाषा का प्रमुख लक्ष्य विचारों का संप्रेषण है। इस दृष्टि से वाक्य का विशेष महत्व है क्योंकि वाक्य पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति की क्षमता रखता है। वैसे तो शब्द भी अपने आप में सार्थक होते हैं परंतु किसी भाव की अभिव्यक्ति तभी हो पाती है जब सार्थक शब्दों को एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। आधुनिक भाषा-वैज्ञानिक वाक्य को भाषा की सार्थक इकाई मानते हैं रूपिमों व स्वनिमों का

विवेचन वे वाक्य के बाद करते हैं । पाणिनि ने अपनी पुस्तक 'अष्टाध्यायी' में भाषा का आरंभ वाक्य से ही माना है ।

भारतीय एवं पश्चिमी भाषावैज्ञानिकों ने वाक्य को भिन्न-भिन्न तरीके से परिभाषित किया हैं-

1.पतंजलि के अनुसार- "जिसमें एक क्रिया हो उसे वाक्य कहते हैं ।"[66]

2.भर्तृहरि के अनुसार "वाक्य वह है जिसके अवयव परस्पर विश्लेषण करने पर साकांक्ष हों, जो दूसरे वाक्य के शब्दों की आकांक्षा न रखता हो, जो क्रिया केंद्रित हो, जो एक अर्थ देनेवाला हो तथा कभी कभी सगुण (विशेषणयुक्त) भी हो ।"[67]

3.गार्डिनर के अनुसार- "ऐसा शब्द या शब्द-समूह जो एक बोधगम्य मंतव्य प्रकट करता है ।"

4.चॉम्स्की के अनुसार- "मानव मस्तिष्क में अवस्थित किसी अमूर्त संकल्पना का व्यक्त रूप वाक्य है ।"

5.डॉ.भोलानाथ तिवारी के अनुसार- "सार्थक पद समूह जो एक भाव पूर्णता से अभिव्यक्त कर दे, वह वाक्य है ।"[68]

6.कामताप्रसाद गुरु के अनुसार- "एक विचार पूर्णता से प्रकट करनेवाले शब्दसमूह को वाक्य कहते हैं ।"[69]

---

[66]'हिंदी वाक्य रचना का विकास',महेशानंद,पृ.सं.24

[67]'हिंदी वाक्य रचना का विकास',महेशानंद ,पृ. सं.24

[68]'भाषा विज्ञान',डॉ.भोलानाथ तिवारी,पृ.सं.221

[69]'हिंदी व्याकरण',कामता प्रसाद गुरु,पृ.सं377.

7.कपिल देव द्विवेदी के अनुसार- "पूर्ण अर्थ की बोधक सार्थक लघुतम इकाई को वाक्य कहते हैं। यह भाषण या विचारों का एक अंग होता है।"[70]

इन परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वाक्य व्याकरण की दृष्टि से भाषा की सबसे बड़ी इकाई है जो एक या एक से अधिक शब्दों से मिलकर बना होता है तथा जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण या अपूर्ण भी हो सकता है, परंतु व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण होता है। वाक्य एक पद का भी हो सकता है और एक से अधिक पदों का भी। इस संदर्भ में अल्पांग वाक्य की अवधारणा सामने आई है। सूरजभान सिंह के अनुसार "अल्पांग वाक्य व्याकरणिक या बाह्य संरचनात्मक स्तर पर अपूर्ण होते हैं, लेकिन भाव संप्रेषण की दृष्टि से अपने आप में पूर्ण होते हैं।"[71] उदाहरण के लिए यदि कोई विद्यार्थी कक्षा में अनुमति लेता है कि क्या मैं अंदर आ सकता हूँ। तो शिक्षक कहता है- 'हाँ' या 'आओ' यहाँ 'हाँ' या 'आओ' शब्द मात्र के प्रयोग से ही श्रोता इसका अर्थ ग्रहण करता है कि 'तुम अंदर आ सकते हो।' यहाँ यह बोधगम्यता संदर्भ के कारण ही संभव हो पाता है। अतः यह आवश्यक नहीं कि एक वाक्य से संपूर्ण अर्थ की प्रतीति हो जाए। कोई भी वाक्य तात्विक रूप से पूर्ण अर्थ का बोध नहीं करता है। एक वाक्य से संपूर्ण अर्थ की प्रतीति हो भी सकती है और नहीं भी यह विचार व्यक्त करने का एक अंश हो सकता है। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से पूछता है कि तुम्हारा नाम क्या है? इस वाक्य से वक्ता के संपूर्ण अर्थ की प्रतीति हो रही है कि वक्ता श्रोता का नाम जानना चाहता है परंतु कुछ ऐसे भी होते हैं जिनसे संपूर्ण अर्थ की प्रतीति नहीं होती, वक्ता को अपना मंतव्य

[70]'भाषा विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र'कपिलदेव द्विवेदी,पृ.सं.299

[71]'हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण'सूरजभान सिंह,पृ.सं.55

प्रकट करने के लिए एक से अधिक वाक्यों का प्रयोग करना पड़ता है। यही कारण है कि आधुनिक भाषा विज्ञान में प्रोक्ति की अवधारणा सामने आई है।

## 4.2 वाक्य की संकल्पना

मनुष्य के विचारों को पूर्णता से प्रकट करनेवाले पदसमूह को 'वाक्य' कहते हैं। वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित रूप है। यदि शब्द भाषा की प्रारम्भिक अवस्था है, तो वाक्य, उसका विकास है। सभ्यता के विकास के साथ ही वाक्यों के विकास की वृद्धि होती गई है, क्योंकि मनुष्य के भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति वाक्यों में ही होती है। शब्द तो साधन है, जो वाक्य की संरचना में सहायक होते हैं। वाक्य वह सार्थक ध्वनि है, जिसके माध्यम से लेखक लिखकर तथा वक्ता बोलकर अपने भाव या विचार पाठक या श्रोता पर प्रकट करता है। वाक्य की उपयोगिता व्याकरण में तो है ही, सर्वसाधारण के दैनिक जीवन में भी हैं। अतः सामान्य जीवन में वाक्य का विशेष महत्व है।

सर्वसाधारण की अपेक्षा शिक्षितों की वाक्य संरचना में एक विशेषता रहती है। शिक्षितों की वाक्य-रचना और वाक्य-प्रयोग में एक प्रकार का क्रम और व्यवस्था रहती हैं, जो व्याकरण के नियमों से अनुशासित होती है। शिक्षित व्यक्ति वाक्य का प्रयोग करते समय व्याकरण के सामान्य नियमों से परिचित रहता है। साधारण व्यक्ति जैसा चाहता है वैसे शब्दों और वाक्यों का प्रयोग कर लेता है। व्याकरण में वाक्य-संरचना का अपना विधान है। उसके सजाने और सँवारने के अपने नियम हैं किन्तु,

भाव की अभिव्यक्ति में जो वाक्य जितना अधिक सहायक होगा, वह उतना ही प्रभाव डालनेवाला होगा। स्पष्टता वाक्य संरचना की एक बड़ी विशेषता है।

मानव जीवन के प्रयोगजन सिद्धि के लिए भाषा एक सार्थक व्यवस्था हैं जो भाषा ध्वनि, शब्द, पद या रूप और वाक्य आदि इकाईयां समाहित होती हैं। इन इकाईयों में निश्चित और नियमबद्ध संबंध होते हैं। इन सभी सम्बन्धों को सामूहिक रूप से भाषा की संरचना कहा जाता है। संरचना की उक्त इकाईयों में वाक्य नामक इकाई परिपूर्ण अर्थात् अर्थपूर्ण घटक है। भाषा का मूल उद्देश्य विचारों और भावों का संवहन करना होता है। विचारों की संवाहिका भाषा तब बनती है जब वाक्यों का गठन होता है। कुछ विद्वान् मानते हैं कि वाक्य अकेला विचारों का संवहन नहीं कर सकता। अत: कई वाक्यों के गठन से विचारों का प्रकटीकरण होता है इसे ही कुछ विद्वानों ने 'प्रोक्ति' नाम से संबोधित किया है परंतु आधुनिक भाषाविज्ञान में प्रोक्ति का भी उतना ही महत्व है जितना अन्य इकाईयों का है।

आचार्य विश्वनाथ ने वाक्य संकल्पना को स्पष्ट करते हुए कहा कि वाक्यार्थ की अन्विति के लिए योग्यता, आकांक्षा और आसक्ति को आवश्यक माना है अत: अनेक भाषा विद्वानों ने वाक्य और वाक्यार्थ को महत्त्व देकर वाक्य की संकल्पना को स्पष्ट करने की कोशिश की है। अत: इसके सही स्वरुप को पहचानने एवं जानने के लिए डॉ भोलानाथ तिवारी के इस कथन को भी जानना जरुरी है जैसे उन्होंने कहा कि "वाक्य भाषा की वह सहज इकाई है जिसमें एक या अधिक शब्द होते हैं तथा जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण या अपूर्ण, व्याकरणिक दृष्टि से अपने विशिष्ट संदर्भ में अवश्य पूर्ण होती है, साथ ही उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कम से कम एक

समापिका क्रिया अवश्य होती है ।"[72] वाक्य को स्पष्ट करने वाले डॉ भोलानाथ तिवारी का यह कथन सही स्वरुप का परिचय देता है, इस विचार से कई बातें सामने आती हैं जैसे कि वाक्य भाषा की संयोजिका है क्योंकि भाषा की लघुत्तम इकाई ध्वनि और महत्तम इकाई वाक्य है । ध्वनि, शब्द, रूप आदि कृत्रिम है तो वाक्य सहज है क्योंकि भाषा विश्लेषण के बाद इसकी खोज हुई है या मनुष्य इसके प्रति सतर्क रहा है । जैसे ध्वनियों से शब्दों का निर्माण किया जाता है उदाहरण ललिता- ल+अ +ल +ई +त +अ ।

ललिता इस शब्द में छ: ध्वनियां हैं । इस प्रकार कई ध्वनियों के योग से कृत्रिम शब्दों का निर्माण किया जाता है । अत: ऐसे ही दो या दो से अधिक शब्दों से वाक्य का गठन होता है । जैसे "ललिता ने थोड़ी देर होने के बाद अपने आपको आगे सरका लिया।"[73] इस वाक्य में एक शब्द भी है और एक से अधिक भी अर्थात् भाषा में एक से लेकर कई शब्द हो सकते हैं वाक्य एक शब्द का भी होता है उदाहरण के लिए 'आयुष्मान भव:' इस शब्द से भी हमें अर्थ बोध हो रहा है । अर्थात् किसी को आशीर्वाद देने के लिए हम एक शब्द का प्रयोग करते हैं जो सार्थक अर्थ प्रस्तुत करता हैं।

[72] 'भाषा विज्ञान' डॉ.भोलानाथ तिवारी, पृ.सं. 221
[73] 'बहुजन' शरणकुमार लिंबाले, पृ.सं.126

## 4.3 मराठी एवं हिंदी की वाक्य संरचना

मराठी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की वाक्य रचना प्रायः एक जैसी ही है। दोनों भाषाओं की वाक्य संरचना में विषमताओं की अपेक्षा समानताएं ही अधिक मात्रा में मिलती हैं। एक संपूर्ण विचार जहां व्यक्त होता है, वह वाक्य माना जा सकता है। पूरा साहित्य वाक्यों से भरा हुआ है। मराठी एवं हिंदी दोनों भाषाओं के वाक्यों में शब्दों का स्थान निश्चित है। वाक्य में प्रयोग किए बिना शब्द का कोई निश्चित अर्थ स्पष्ट नहीं होता। वाक्य तभी बनता है, जब अर्थवान शब्दों को ऐसे क्रम में रखा जाए कि उन शब्दों से पूरे विचार या भाव ग्रहण हों। मराठी-हिंदी भाषाओं में शब्दों का एक निश्चित स्थान स्वीकार किया है। इसे ध्यान में रखकर वाक्य रचना की जाती है।

ऊपर लिखित विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि मराठी एवं हिंदी भाषा में कर्ता-कर्म-क्रिया तीनों का स्थान वाक्य में निश्चित किया गया है। दोनों भाषाओं में कर्ता पहले आता है, उसके बाद कर्म और अंत में क्रिया आती है। उदाहरणार्थ –

मराठी- प्रशांत पेरू खातो.

हिंदी- प्रशांत अमरूद खाता है।

ऊपर लिखित वाक्य में प्रशांत कर्ता, पेरू- कर्म और अंत में खाता-क्रिया है। अगर लिखित वाक्य में शब्दों के क्रम को बदल दिया जाए तो अर्थ स्पष्ट

नहीं हो पाएगा। इससे यह स्पष्ट होता है कि वाक्य में शब्दों का अपना एक निश्चित स्थान है। यह देखा जा सकता है कि शब्द की चर्चा करने के लिए भी वाक्य की आवश्यकता होती है। वाक्य में प्रयोग किए जाने पर ही शब्द पद बनते हैं। अतः वाक्य को भाषा की मुख्य एवं सार्थक इकाई माना जाता है। वैसे शब्द भी अपने आप में अर्थवान होते हैं, किंतु वाक्य तभी बनता है जब अर्थवान शब्दों को ऐसे क्रम से रखा जाए कि उससे पूरे विचार या भाव ग्रहण हो।

वाक्य पदों का समूह है किंतु वह ऐसे पदों का समूह है, जिनमें परस्पर आकांक्षा, योग्यता और आशक्ति के गुण होते हैं। असंबद्ध पदों के समूह को वाक्य नहीं कहते जैसे फूल, खाना, जल पदों का समूह तो है किंतु वाक्य नहीं है।

"वाक्य अर्थ प्रकट करने में समर्थ है कि नहीं, इसका पता लगाने के लिए पुराने आचार्यों ने तीन शब्द दिए हैं योग्यता, आकांक्षा और आसक्ति।"[74] नीचे दिए गए उदाहरण को देख सकते हैं-

1. प्रशांत पौधों को सींच रहा है।

ऊपर लिखित यह एक वाक्य है, क्योंकि उसके पदों में परस्पर आकांक्षा है। केवल 'प्रशांत' कहने से श्रोता के मन में अन्य पदों की आकांक्षा बनी रहती है। इसी प्रकार केवल 'पौधों को' या 'सींच रहा है' कहने से भी अन्य पदों की

[74]'केद्रीय हिंदी व्याकरण', डॉ.गोपाल शर्मा,पृ.सं.136

आकांक्षा श्रोता के मन में उठती है । प्रशांत पौधों को सींच रहा है? यह सुनने पर अर्थ पूर्ण हो जाता है और श्रोता के मन में अन्य पद की आकांक्षा नहीं उठती। इसीलिए वाक्य को निराकांक्षी और अर्थ की दृष्टि से पूर्ण माना जाता है । आकांक्षा के अलावा पद के अर्थों में परस्पर मिलने की योग्यता भी होनी चाहिए। जैसे- 'प्रशांत आग से पौधों को सींच रहा है ।' यह वाक्य नहीं है,क्योंकि आग में सोचने की योग्यता नहीं है । वाक्य में प्रयुक्त पदों का उच्चारण बिना रुकावट अविलंब होना चाहिए । इसे आसक्ति का गुण कहते हैं । एक पद का उच्चारण अभी किया जाए और अन्य पदों का उच्चारण एक घंटे बाद किया जाए तो इससे वाक्य के अर्थ की प्राप्ति नहीं होती ।

ऊपर लिखित विश्लेषण से संक्षेप में वाक्य के बारे में यह कहा जा सकता हैं-

1. वाक्य शब्दों की वह इकाई है, जो रचना की दृष्टि से अपने आप में स्वतंत्र है।

2. वाक्य किसी विचार,भाव या मंतव्य को पूर्णतया प्रकट करता है और इसमें पूर्ण अर्थ देने की शक्ति होती है । वाक्य में कम-से-कम एक क्रिया अवश्य होती है ।

## 4.4 वाक्य के आवश्यक घटक

भारतीय विद्वानों ने वाक्य और वाक्यार्थ दोनों को महत्त्व देकर वाक्य की आवश्यकताओं को महत्त्व दिया है। आचार्य विश्वनाथ ने वाक्य की अन्विति के लिए योग्यता आकांक्षा और आसक्ति को आवश्यक माना है। जैसे- "जब विभिन्न पद किसी क्रिया पद से अन्वित होकर एक विचार खंड की पूर्ण तथा संगत रूप में व्यक्त करें तो उसे 'वाक्य' कहते हैं।[75]" ऐसे वाक्य की अन्विति के लिए क्रमशः सार्थकता, योग्यता , आकांक्षा और अन्विति की आवश्कता होती है।

### 4.4.1. सार्थकता

'सार्थकता' से आशय यह है कि वाक्य के शब्द सार्थक होने चाहिए, अतः सार्थकता भाषा की मूलभूत आवश्यकता है। सार्थकता के बिना वाक्य का कोई अर्थ नहीं है। जैसे-'बिना प्राण का शरीर।'

### 4.4.2.योग्यता

'योग्यता' से आशय यह है कि शब्दों की आपस में संगति हो। शब्दों में प्रसंगानुकूल भाव का बोध करने की योग्यता हो अर्थात पदों के परस्पर अन्वय में किसी प्रकार की बाधा का न होना ही योग्यता है। यह बाधा दो प्रकार की होती है-

1 अर्थ की दृष्टि से

2 व्याकरणिक दृष्टि से

---

[75]'भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा',डॉ लक्ष्मीकांत पाण्डेय, पृ.सं.121

**1.अर्थ की दृष्टि से:-**

'अर्थ' की दृष्टि से बाधा उत्पन्न होना, जैसे कि किसी वाक्य में प्रयुक्त पदों में किसी अर्थ के प्रकाशन की योग्यता नहीं होती, उदाहरण के तौर पर हम देख सकते हैं, लड़की आग से पेड़ को सींचती है, आदमी पहाड़ ढोता है, घर आकाश में उड़ रहा है आदि। यह बातें संगत नहीं होती हैं क्योंकि कोई भी वाक्य व्याकरण की दृष्टि से ठीक हो किन्तु अर्थ की दृष्टि से अयोग्य होता तो वाक्य नहीं कहलाएगा।

**2. व्याकरणिक दृष्टि से**

'वाक्य' यदि अर्थ की दृष्टि से ठीक हो और व्याकरणिक दृष्टि से नहीं हो तो शब्द समुदाय को वाक्य नहीं कहा जाएगा अर्थात् कर्ता, कर्म, क्रिया, लिंग, वचन आदि स्तरों पर वाक्य में उचित रूप से अन्वित होना चाहिए। यदि उसमें अन्विति नहीं है तो वह वाक्य में असंगतियां आ जाती हैं और वाक्य व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध या अयोग्य माना जाएगा। जैसे राम जाती है और सीता खाना खाता है। प्रथम वाक्य में राम पुल्लिंग है, कर्ता के अनुसार क्रिया होनी चाहिए किन्तु इस वाक्य में कर्ता (राम ) पुल्लिंग है तो क्रिया स्त्रीलिंग है। इसलिए प्रस्तुत वाक्य व्याकरण की दृष्टि से अयोग्य है। अयोग्य पदों का प्रयोग वाक्यों में नहीं किया जाना चाहिए इसलिए वाक्य के प्रमुख तत्वों में योग्यता का महत्वपूर्ण स्थान है।

**4.4.3.आकांक्षा**

अर्थ की पूर्णत: का नाम आकांक्षा है अर्थात् जानने की इच्छा। इस अर्थ की पूर्णत: के लिए अन्य पदों की अपेक्षा यह जिज्ञासा का बना रहना ही आकांक्षा

कहलाता है। जैसे सरोवर शब्द से श्रोता पूर्ण अभिप्राय को नहीं समझ पाता है। फलत: वह उसके संबंध में कुछ और सुनना चाहता है जिससे उसका पूर्ण अर्थ का ग्रहण कर सके। आकांक्षा वाक्य का मूल आधार है जिससे वाक्यार्थ और श्रोता की जिज्ञासा की पूर्ति एक साथ होती है। वाक्य को जब वक्ता या साहित्यकार प्रस्तुत करता है तो उसके पहले शब्द के बाद अगले शब्द के प्रति जिज्ञासा का होना ही आकांक्षा है। एक पद के बाद दूसरे और तीसरे पद तक आकांक्षा का जिज्ञासा का उदय क्रिया तक बना रहता है। क्रिया तक पहुंचते ही यह स्थिति समाप्त हो जाती है और अर्थ का बोध होता है। वास्तव में भाषा में विभिन्न शब्द या पद अनेक अर्थ की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। वाक्य के द्वारा ही वह सार्थक होते हैं और अपने अर्थ को अभिव्यक्त कर पाते हैं। जैसे –

"आजकल क्या लिख रहे हो ?"

"मैंने लिखना बंद कर दिया है।"

क्यों?

"आजकल पैंथर का काम कर रहा हूँ।"

"काम तो करना ही होगा, लेकिन कविता भी लिखनी चाहिए।"

"कुछ अंतराल चाहता हूँ।"[76]

---

[76]'नरवानर',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.54

### 4.4.4.आसक्ति

इसके लिए सानिध्य शब्द का भी प्रयोग किया जाता है इसका अर्थ है समीपता या निकट होना। वाक्य में पदों के आपसी संबंध तथा अर्थ को स्पष्ट करने के लिए व्यवस्था का होना अति आवश्यक होता है। एक पद या वाक्य को सुनने के पश्चात उच्चरित अन्य पद सुनने के समय में संबंध ज्ञान का बना रहना सन्निधि कहलाता है। वाक्य के सभी पदों का उच्चारण एक ही समय में क्रमश: होना चाहिए जिससे वे एक दूसरे के निकल रहें जैसे लड़का बहुत सुंदर है। लड़का उच्चारण के बाद कुछ समय बीत जाने पर बहुत और उसके कुछ समय बाद सुंदर है का अगर उच्चारण करेंगे तो उसमें आसक्ति यानी निकटता या समीपता नहीं रहेगी और उसे वाक्य नहीं कहा जाएगा। अर्थात उससे अर्थ बोध नहीं होता। इसलिए पदक्रम की समीपता भी वाक्य के लिए आवश्यक मानी जाती है। जैसे- "हमें तो लड़ना ही पड़ेगा। उसके लिए मोर्चाबंदी भी करनी होगी। मोर्चाबंदी के मौके पर बहुजन को छोड़ा नहीं जा सकता।"[77]

### 4.4.5.अन्विति

'अन्विति' से तात्पर्य है कि व्याकरण की दृष्टि से एकरूपता। प्रत्येक भाषा में व्याकरणिक भिन्नता होती है। हम एक भाषा के व्याकरण के आधार पर दूसरी भाषा की वाक्य रचना नहीं कर सकते हैं। अन्विति के अंतर्गत लिंग, पुरुष, वचन, कारक आदि आते हैं।

[77]'नरवानर',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.52

इस प्रकार वाक्य के घटक या प्रमुख तत्व के आधार पर सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा और आसक्ति महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

## 4.5 वाक्य के प्रकार

हर भाषा में वाक्य रचना की अपनी व्यवस्था होती है। संसार के सभी भाषा-भाषी अपने-अपने ढंग से अपने भाव या विचारों को व्यक्त करते हैं। संसार की समस्त भाषाओं पर विचार करने पर सामान्यत: दो प्रकार के वाक्य दिखाई पड़ते हैं –

1.रचना के आधार पर

2.अर्थ के आधार पर

### 4.5.1.रचना के आधार पर मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों में वाक्य व्यवस्था

रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार होते हैं -1. सरल या साधारण वाक्य 2. मिश्र वाक्य 3. संयुक्त वाक्य

#### 4.5.1.1 सरल वाक्य

"जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय रहता है, उसे 'साधारण वाक्य' कहते हैं।"[78] अर्थात जिस वाक्य में एक क्रिया होती है और एक कर्ता होता है उसे ही सरल या साधारण वाक्य कहा जाता है। जैसे-

1."माझ्या मनाचं महानिर्वाण होवो." (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.9)

[78]'हिंदी व्याकरण'कामताप्रसाद गुरु,पृ.सं.431

“मेरे मन का महानिर्वाण हो जाए।” (अनु.पृ.सं.13)

मूल कृति में लेखक ने सरल वाक्य का प्रयोग किया है। ठीक उसी तरह अनुवादक ने भी सरल वाक्य में अनूदित किया है।

2.‘बायको बोंब ठोकेल माझ्या नावान.’ (मराठी उपन्यास-हिंदू- पृ.सं.17)

‘पत्नी मेरे नाम पर बोंव मारेगी मैं बोला।’(अनु.पृ.सं.19 )

मूल कृति में सामाजिक शैली का प्रयोग किया गया है। अनूदित कृति में वैसे ही रूपांतरित किया है किन्तु मूल कृति में ‘बोंब’ अंग्रेजी शब्द का प्रयोग किया गया है। अनुवाद में भी वही शब्द प्रस्तुत किया गया है। लक्ष्य भाषा के अनुसार मुंह पर उलटी हथेली रखकर जो आवाज निकाली जाती है उसे ‘बोंब’ कहा जाता है परन्तु अनुवाद में शाब्दिक अनुवाद मिलता है। जब कि वह बेढंग का अनुवाद लगता है।

4. ‘हिजडयाच्या बायकोसारखं आहे आपलं राजकारणं.’ (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.13)

‘हिजड़े की औरत की तरह है, हमारी राजनीति।’(अनु.पृ.सं-16)

मूल लेखक ने अपने विचार दलित नेता के बारे में उद्घाटित किए अनुवादक ने भी मुहावरेदार शैली में लेखक की भावना को अनूदित कृति में प्रकट किया है।

5.‘अचलपूरला निसर्गाची देणगी लाभली होती.’(मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.19)

‘अचलपुर को प्राकृतिक सौन्दर्य प्राप्त था।’ (अनु.पृ.सं-21)

उपर्युक्त मूल के अनुसार वाक्य के अनुवाद में लक्ष्य भाषा के शैली के अनुसार अनुवाद सफल हुआ है क्योंकि 'देणगी' के लिए 'प्राप्त' सही शब्द का प्रयोग किया गया है।

6. 'पिपंळपानाच्या सळसळीतून ढोलकीचा ताल ऐकू होता.' (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.47)

'पीपल के घने पेड से ढोलक की ताल सुनाई देती है।' (अनु.पृ.सं.45)

अनुवाद मे शाब्दिक अनुवाद मिलता है किन्तु हिन्दी भाषा के अनुसार सामाजिक शैली का प्रयोग नहीं मिलता। चूँकि 'ढोलक' के लिए 'डफली' हिन्दी में प्रयोग किया जाता है। अनुवाद में मूल के प्रति पूर्ण अर्थ स्पष्ट नहीं होता है। मूल शब्द का ही पर्याय के रूप में लेकर अनुवादक ने 'ढोलक' शब्द प्रयोग किया।

7.'श्रीपतरावाचां वृद्ध देह संतापाने थरथरत होता.' (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ. सं. 64)

'श्रीपतराव की बूढी देह थरथराने लगी।' (अनु.पृ.सं.59)

मूल में तात्या की कांबले द्वारा हत्या होने के बाद कांबले परिवार के परिस्थिति का वर्णन किया है। उपरोक्त अनुवाद में मूल में से 'संतापाने' इस शब्द को अनुवाद में छोड़ दिया है जिसका अर्थ है –'क्रोध'। यहाँ पर भावानुवाद किया गया है।

8. 'स्वच्छ प्रतिनिधि सज्जन प्रतिनिधि असे सदानंद कांबळेच्या निवडणूक प्रचाराचे घोष वाक्य होते.' (मराठी उपन्यास-हिंदू- पृ. सं. 130)

'सज्जन प्रतिनिधि भ्रष्टाचार मुक्त प्रतिनिधि सदानंद कांबले जी के चुनाव प्रचार का यही घोष वाक्य था।' (अनु.पृ.सं.119)

उपन्यासकार ने सदानंद कांबले की छाया को भगवान रूप में दिखाया इसलिए वह विधायक बनता है। मूल में स्वच्छ प्रतिनिधि के सज्जन प्रतिनिधि यह चुनाव प्रचार का घोष वाक्य है जो कि उसकी प्रतिष्ठा को प्रयुक्त करता है। अनुवाद में यहाँ पर शाब्दिक तथा भावानुवाद दोनों का प्रयोग मिलता है।

9. 'तुला प्रसाद द्यायचाय आत ये.' (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.137)

'तुझे प्रसाद चाहिए भीतर आ।' (अनु.पृ.सं.125)

मूल कृति के वाक्य में प्रसाद देने की क्रिया है। मतलब खुद देना चाहता है बल्कि अनुवाद में 'अगर आपको चाहिये तो भीतर आ' मतलब इसका अर्थ बदला हुआ दिखायी देता है। बाकी सब शाब्दिक अनुवाद है।

10.'तिच सशोभित राहण नीटनेटक वागण मोकळ-चाकळ बोलण हयामुळे तिच्या विषयी अफवांची भरमार असायची.' (मराठी उपन्यास-हिंदू- पृ.सं.11)

'उसका ठीक-ठाक रहना सबके साथ सहज रूप से बातचीत करना उसके संपूर्ण व्यक्तित्व में स्थित अनौपचारिकता इस संबंध में अफवाहे भी भरपुर रहती।' (अनु.पृ.सं.15)

अनुवादक ने अनुवाद में भावात्मक अनुवाद शैली का प्रयोग किया है। उपरोक्त गद्यांश में अतिरिक्त जोड़ने का प्रयास किया है। इस उपन्यास की कथावस्तु

को ध्यान में रखकर अतिरिक्त जोड़ने का प्रयास किया गया हो। शायद रमा बाबर के संदर्भ में योग्य हो।

11.'हिंदू धर्मातली आश्रमव्यवस्था मला खुपच चांगली वाटते.'(मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.22)

'हिंदू धर्म की आश्रम व्यवस्था मुझे अच्छी लगती है।'(अनु-पृ.सं.24)

मूल कृति में लेखक ने सरल वाक्य का प्रयोग किया है। ठीक उसी तरह अनुवादक ने भी सरल वाक्य में अनूदित किया है।

12. 'आपली संघटना आपल्या होस्टलपुरती मर्यादित आहे.'(मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.42)

'अपना संगठन हॉस्टल तक ही सीमित है।' (अनु-पृ.सं.44)

यहाँ पर दलित पैंथर स्थापना की बात हो रही है। इनका जो संगठन है उसे आगे लेके जाने की कोशिश करते हैं। जो दलित पैंथर के माध्यम से संभव है क्योंकि पैंथर की स्थापना अगर करेंगे तो बड़ा समर्थन मिलेगा और इनके पीछे एक बड़ी शक्ति कड़ी होगी। इस माध्यम से अपनी समस्याओं के लिए राज्य स्तर पर आवाज उठा सकेंगे।

13.'आमच्या इतिहासात आंबेडकरी-युगाला आरंभ झाला होता. (उपल्या-पृ.सं.92)

हमारे इतिहास के अम्बेडकर युग का आरंभ हो चुका था। (अनु-पृ.सं.92)

उपर्युक्त वाक्य में दलित साहित्य का धीरे-धीरे प्रकाशन में आना दलित आन्दोलन के लिए एक अच्छा संकेत था। कविता-संग्रह, कथा संग्रह आदि प्रकाशित होने लगे। इन सबके कारन लोगों में जागरूकता आने लगी और लोग उस व्यवस्था के खिलाफ बोलने लगे। अम्बेडकर के विचारों पर चलने लगे।

14.'मी संघाच्या व्यासपीठावर गेलो, तरी मी माझेच विचार मांडले आहेत.' (उपल्या-पृ.सं.96)

'मैं संघ के मंच पर गया जरुर लेकिन मैंने वहां अपने ही विचार प्रस्तुत किए।' (अनु-पृ.सं.96)

उपर्युक्त वाक्य में प्रो.राहुल बनसोडे और प्रवीण कोकिल के बीच कुछ बहस चलती है। प्रवीण कोकिल पूछता है कि तू संघ के मंच पर क्यों गया था? तुझे हिंदुत्ववादी इस्तेमाल कर रहे है। तब राहुल कहता है मुझे किस मंच पर जाना है और किस मंच पर नहीं इसे मैं ही तय करूँगा। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम लोग इस बात की शिकायत करोगे कि हिंदुत्ववादियों ने हमें नहीं बुलाया और उन्होंने बुलाया तो भी शिकायत करोगे। आखिर हम चाहते क्या है ?

15.'प्रा.राहुल बनसोडेचं सुखी जीवन माझपुढं उदध्वस्त झालेल मी पाहिल होत.'(उपल्या-पृ.सं.120)

'प्रो. राहुल बनसोडे के सुखी जीवन को ध्वस्त होते हुए मैंने देखा था। (अनु-पृ.सं.120)

मूल कृति में लेखक ने सरल वाक्य का प्रयोग किया है। अनुवादक ने यहाँ पर शब्दानुवाद किया है। राहुल भष्टाचार के विरोधी व्यक्ति हैं, लेकिन लोग कहते है कि इनकी नौकरी चली गयी इसलिए बाबासाहब का पुतला खड़ा कर रहे हैं। गाँव-गाँव जाकर पैसा जमा करते है और खा जाते हैं।

16.'वैशाली पंडित आपल्या नेहमीच्या सवयीप्रमाने आफिस सुरु व्हायच्या दहा मिनिटं आधी हजर झाली.'(त्रिशंकू-पृ.सं.57)

'वैशाली पंडित हर दिन की तरह आफिस शुरू होने से दस मिनट पहले हाजिर हो गई।' (अनु-पृ.सं.75)

उपर्युक्त मूल के अनुसार वाक्य के अनुवाद में लक्ष्य भाषा के अनुसार अनुवाद किया गया है।

17'आपल्या वैयक्तिक बाबीत नागेशनं ओलाव्यानं रस दाखवावा याचंच तिला अप्रूप वाटलं होतं.'(त्रिशंकू-पृ-सं.38)

'अपने व्यक्तिगत जीवन में नागेश रूचि दिखाए ऐसा उसे लग रहा था।(अनु-पृ.सं.58)

मूल कृति के अनुसार वाक्य के अनुवाद में लक्ष्य भाषा के अनुसार अनुवाद करने की कोशिश की है। मूल में 'ओलाव्यानं' शब्द का अनुवाद छोड़ दिया गया। यहाँ शाब्दिक अनुवाद किया गया है।

### 4.5.1.2.मिश्र वाक्य

"जिस वाक्य में मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के सिवा एक या अधिक समापिका क्रियाएँ रहती हैं, उसे 'मिश्र वाक्य' कहते है।"[79] जैसे-

1.'वर्तमान पत्रातून तथा कामाला सचित्र प्रसिद्धी मिळत होती. घरात तो एकटाच कमवत होता त्याचा गावात पान पटीचा खोका होता.' (मराठी उपन्यास हिंदू-पृ.सं.42)

'समाचार पत्रों में इस काम को प्रसिद्धि मिल रही थी घर मे वह अकेला ही कमाई करता था। गाँव में इसकी पान की गद्दी थी।'(अनु.पृ.सं.40)

उपरोक्त वाक्य में शाब्दिक अनुवाद किया गया है। मूल के शब्द 'सचित्र' का अनुवाद में छोड़ दिया है। जिससे पाठक को समझने मे बड़ी कठिनाई होती है। 'पान पटीचा खोका' का अनुवाद 'पान की गददी' प्रस्तुत है। जब कि लक्ष्य भाषा के अनुसार 'पान का ठेला' होता है।

2.'धर्माविरूद्ध वागण-या दलिताला मारण हा गुन्हा नाही ही त्यांची समजूत धुळीला मिळाली होती गावकरीही विचलीत झाले होते.' (मराठी उपन्यास-हिंदू.पृ.सं.44)

---

[79]'हिंदी व्याकरण',कामताप्रसाद गुरु,पृ.सं.431

[79]'नरवानर',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.32

[79]'नरवानर',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.120

'धर्म के विरोध मे आचरण करने वाले दलित को मारना अपराध नहीं होता अब तक की उसकी यह धारणा गलत साबित हुई थी। गांव वाले भी विचलित हो चुके थे। (अनु. पृ.सं.41)

लेखक ने पात्रों द्वारा इस उपन्यास मे मनोविश्लेषणात्मक वर्णन किया है। जिससे दलितों में परिवर्तन दिखायी देता है। सवर्ण बरसों से दलितों पर अन्याय कर रहे हैं। उनकी यह विचारधारा अब असंभव लग रही है। यही इस गद्यांश में मूल तथा अनूदित कृति में दिखाई पड़ता है।

3.'तुम्ही चळवळीसाठी खूप त्याग केला असेल लोक तुमची थुंकी डोलत असतील पण मला हे शक्य नाही मी मुतायला जाताना ही तुम्हाला विचारावे अशी तुमची धारणा असेल पण मी माझ व्यक्ति स्वातंत्र्य कोणा कडेही गहाण टाकणार नाही.'(हिंदू-पृ.सं.135)

'आप लोगो ने आंदोलन के लिए काफी त्याग-वाग किया होगा। लोग आपका थूक झेलते होंगे पर मेरे लिए यह संभव नहीं। पेशाब तक के लिए मैं आपसे पूछकर जाँऊ ऐसी अगर आपकी धारणा है तो फिर यह स्पष्ट कर दूं, मैं अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता किसी के भी पास गिरवी रखने को तैयार नहीं हूँ (अनु.पृ.सं.123)

उपर्युक्त वाक्य में स्वत: लेखक मिलिन्द कांबले दलित परिवर्तन होता दिखाई पडता है। वह अलग विचार का पात्र है। इस उपन्यास में उद्घाटित होता है कि वह अपने बुद्धि से आंदोलन करता है। अनुवाद में भी मूल की शैली को अपनाते हुए अनुवाद किया है। यहाँ पर शाब्दिक अनुवाद किया गया है।

4.‘झोपड्या जळत होत्या फ़क्त दलितांच्या.’ (उपल्या-पृ.सं.74)

‘झोपड़ियाँ जल रही थी,पर सिर्फ दलितों की।’ (अनु-पृ.सं.75)

अनुवादक ने मूल लेखक की भावना को संवेदनशीलता के साथ वर्णनात्मक शैली में अनुवाद किया है। प्रमुखतः से शाब्दिक अनुवाद किया है। जो कि मूल भाव स्पष्ट हो रहा हैं।

5.‘मी रूम-पाटर्नर बदलण्यासाठी खुप प्रयत्न केला.पण ते शक्य झालं नाही.हे कॉलेज आर्य समाजाच आहे.’(उपल्या-पृ.सं.31)

‘मैंने रूप पाटर्नर बदलने की बहुत कोशिश की। लेकिन संभव नहीं हुआ। क्योंकि कॉलेज आर्य समाज का था।’ (अनु-पृ.सं.32)

मूल में हॉस्टल में जो स्थिति है उस परिस्थिति का वर्णन किया है। कॉलेज आर्य समाज का है और यहाँ पर सवर्ण, दलित, अमीर और गरीब सब एक साथ रहते हैं। पहले जैसा जमाना अब नहीं रहा है। वैसे ही अनुवाद में भी मूल के भाव को सुरक्षित रखते हुए भावानुवाद किया गया है।

6.‘मला करिअरकडही बघाव लागणार आहे. गार्गुडेला नोकरी मिळाली. तो गेला. तेंव्हापासून मी गंभीर झालोय. चळचळ मला काय नोकरी देणार नाही. मला तुमच्यासारख पूर्ण वेळ देता येणार नाही.मी कोणावर नाराज नाही. मला अध्यक्षही व्हायचं नाही.’ (उपल्या-पृ.सं.49)

‘मुझे अपना करियर भी देखना है। गौतम को नौकरी मिल गई। वह चला गया। तब से मैं कुछ गम्भीर हो गया हूँ। आन्दोलन तो मुझे कोई नौकरी देनेवाला नहीं। मैं तुम

लोगों की तरह पूरा वक्त तो नहीं दे पाऊँगा । मैं किसी से नाराज नहीं हूँ । न ही मैं अध्यक्ष बनना चाहता हूँ ।' (अनु-पृ.सं.51)

दलित पैंथर की स्थापना करने के लिए ईश्वर , दयानंद, रोहितदास और गोविन्द अपना पूरा समय पैंथर को समर्पित कर देते है और संगठन का काम मन लगाकर करने लगे । कार्यकर्त्ताओं की पूरी एक फौज खड़ी हो गई । गाँव-देहातों में पैंथर की छावनियाँ स्थापित हो गई । लेकिन इसमें सब कार्यकर्ताओं का बहुत समय चला जाता है । दयानंद को अपनी नौकरी की चिंता पड़ती है इसलिए वह धीरे-धीरे संगठन से दूर होने लगता है और अपने कैरियर पर ध्यान देने लगता है । उपर्युक्त वाक्य में भावानुवाद किया गया हैं ।

7.'आपण कितीही व्यापक भूमिका घेतली, तरी जाती अंताच्या लढ्यात इतर जाती हिरिरीनं भाग घेतील, असं वाटत नाही. उलट, जातीय दंगलीत आपल्या झोपड्या पेटवायला बहुजन समाजातीलच माणसं पुढं असतात.' (उपल्य-पृ.सं.50)

'हम अपनी भूमिका को कितना ही व्यापक क्यों न बनाएँ, मुझे नहीं लगता कि जातियों के अन्तर की इस लड़ाई में अन्य जातियाँ दिलोजान से शामिल होंगी । बल्कि जातीय दंगों में तो दलितों की झोंपड़ियां जलाने के लिए बहुजन समाज के लोग ही आगे आते हैं ।'(अनु-पृ.सं.51)

उपर्युक्त वाक्य में भावानुवाद किया गया है । संगठन में सबके समस्याओं को दूर करने की कोशिश करते है । किन्तु किसी एक जाति के आधार पर हम कोई भी लड़ाई नहीं जीत सकेंगे । हमें जाति का आधार छोड़ना पडेगा और आर्थिक आधार

पर सबको इकट्ठा करना पड़ेगा । तभी हम कोई भी लड़ाई कर सकते है ऐसा कार्यकर्ताओं को लगने लगा ।

8.‘सुगावला आदर्श गाव म्हणून पुरस्कार मिळालेला. तिथं साक्षरतेचा प्रसार झाला होता. दारूबंदी झाली होती. वृक्षारोपणाचा कार्यक्रम झाला होता. सवर्ण आणि दलितागुण्या गोविंदानं राहत होते. पण नामांतराच्या आंदोलनामुळं गावातील वातावरण दूषित होऊ लागलं.’(उपल्या-पृ.सं.75)

‘सुगाँव आदर्श गाँव के रूप में पुरस्कार प्राप्त गाँव था । वहाँ साक्षरता का अच्छा प्रसार हुआ था । शराबबन्दी हो गई थी । वृक्षारोपण के कार्यक्रम सफल हो चुके थे । सवर्ण और दलित मिल-जुलकर रहते थे । लेकिन नामान्तर के आन्दोलन के कारण गाँव का वातावरण दूषित हो गया । (अनु-पृ.सं.76)

मूल कृति का भाव को स्पष्ट करने के लिए अनुवादक ने भावानुवाद किया है । ‘दलित मुक्ति सेना’ ने नामांतर के लिए लांग मार्च का ऐलान करते है इसलिए माहौल गर्म हो जाना है । चारों ओर लांग मार्च की तैयारियाँ होने लगी । प्रगतिशील सवर्ण भी शामिल हो रहे है इसलिए संगठन के लोग विरोध कर रहे थे । दलित और सवर्णों में तनाव पैदा हो गया ।

9.‘आज साहेब मंत्रालयातच आहेत. संध्याकाळी ठाण्याला जायचे आहे. तिथं त्यांचा सत्कार ठेवले आहे.’(उपल्या-पृ.सं.103)

‘साहब आज मंत्रालय में ही रहेंगे । शाम को ठाणे जाना है । वहाँ उसके सरकारी समारोह का आयोजन है ।’ (अनु-पृ.सं.102)

उपर्युक्त वाक्य में रोहितदास के मंत्री बनने के बाद का वर्णन किया गया है। एक आम कार्यकर्ता मंत्री बन गया है। वह आम आदमी की समस्याएँ जानता है। आन्दोलन से निकलकर मंत्री बना है। अब तक के नामधारी रिपब्लिकन मंत्रियों की अपेक्षा वह अवश्य ही कुछ हमारे लिए अच्छा काम करेगा। ऐसी अपेक्षा दलित समाज कर रहा था।

10.'आपण नोकरी करण्याची घाई केली. लग्नाची घाई केली. अजून शिकायला हवं होतं. चांगल्या नोकरीसाठी प्रयत्न करायला हवा होता. आपण खूप अडकलोय्. बुडणं...केवळ बुडणंच हाती आहे.' (उपल्या-पृ.सं.113)

'नौकरी करने में भी जल्दबाजी की मैंने। फिर शादी करने में जल्दबाजी की। और पढ़ना चाहिए था। अच्छी नौकरी के लिए कोशिश करनी चाहिए थी। मैं बेहद उलझ गया हूँ।

डूबना ... सिर्फ डूबना ही अब मेरे हाथ में है। (अनु-113)

उपर्युक्त वाक्य में मूल कृति के भाव को ध्यान में रखते हुए अनुवादक ने शब्दानुवाद तथा भावानुवाद करने की कोशिश की है।

11.'तुला जवळचा कोण. मी, की माणिकचंद ? माणिकचंद बरोबर तू डायरेक्ट बोलू नकोश. मला मध्यस्थ म्हणून घे. तो तुला फसवेल. गोत्यात आणे.' (उपल्या-पृ.सं.115)

‘तुम्हारे लिए नजदीक कौन है, मैं या माणिकचंद ?तुम माणिकचंद के साथ डायरेक्ट बात मत करो। मुझे बीच में रहने दो।वह तुम्हें धोखा देगा। आफत में उलझा देगा।’ (अनु-पृ.सं.115)

मूल कृति में पंडित कानडे अपने दोस्त को समझाता हैं। वह बोलता है कि दोस्त होने के नाते साफ-साफ बोल रहा हूँ। वह तुम्हें फसायेगा क्योंकि मैं माणिकचंद को अच्छी तरह जानता हूँ। वह अच्छा इन्सान नहीं है।

12. ‘आफिसमध्ये परतल्यावर नागेश कांबले बराच वेळ राहून राहून वैशालीच्या या भेटीचा विचार करीत होता.’(त्रिशंकू-पृ.सं.82)

‘आफिस में आने के बाद नागेश कांबले बहुत देर बाद वैशाली के मुलाकात के बारे में सोच रहा था।’ (अनु-पृ.सं.85)

उपर्युक्त मूल और अनूदित दोनों मिश्र वाक्य है। अनुवादक ने समतुल्यता के आधार पर मूल वाक्य का अनुवाद किया है।

13. ‘बरोबर आहे. तुम्ही असंच बोलणार. तुम्ही दलित ब्राम्हण होऊन बसले. आम्ही मात्र अजून दलितच राहिलो.’(त्रिशंकू-पृ.सं.89)

‘सही हैं। आप ऐसे ही बातें करेंगे। आप दलित ब्राहमण हो गए और हम वैसे ही दलित रह गए।’ (अनु-पृ.सं.92)

उपर्युक्त वाक्य में अनुवादक ने भावानुवाद किया है। मूल कृति में दिखाया है कि कैसे जाति के अंतर्गत भी अपने मानने वाले लोग भी समय आने पर धोखा दे देते है। इसका ही वर्णन किया गया है।

14. 'मूल कांतीचे चक्र अर्धेच फिरल. आसासह चक्र पूर्ण फिरल्याशिवाय खरी क्रांतीच  होऊ शकत नाही ते चक्र आम्हीच फिरवू.' (त्रिशंकू-पृ.सं.50)

'क्रांति-चक्र आधा ही घूमा है, उसके पूरे हुए बिना सच्ची क्रांति नहीं हो सकती। अब यह चक्र हम पूरा करेंगे। (अनु.पृ.सं.51)

उपर्युक्त वाक्य यह मिश्र वाक्य हैं । स्रोत भाषा में क्रांति लाने की बात है, जिससे दलित समाज का उद्दार हो और उन्हें समानता का दर्जा मिल सके । अनुवादक भावानुवाद का सहारा लेकर अनूदित किया  है। क्रांति-चक्र जब पूरा होगा तभी जाति में परिवर्तन आयगा और इसको पूरा करने के लिए हमें संघटित होकर आवाज उठानी होगी ।  अनुवादक ने समाज की स्थिति एवं समय को उजागर किया है जो आज भी उतना ही सही है ।

**4.5.1.3.संयुक्त वाक्य**

"जिस वाक्य में साधारण या सरल अथवा मिश्र वाक्यों का मेल रहता हैं, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं । संयुक्त वाक्यों को समानाधिकरण उपवाक्य कहते हैं , क्योंकि वे एक दूसरे के आश्रित नहीं रहते ।"[80]

अर्थात् संयुक्त वाक्य में अनेक प्रधान उपवाक्य होते हैं जिनके साथ अनेक आश्रित उपवाक्य भी रहते हैं । जैसे-

1.'अगदी ओढून ताणून शिवशक्ति आणि भीमशक्ति एकत्र आवळण्याचा प्रयत्न केला होता.' (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.10)

[80]'कामताप्रसाद गुरु,'हिंदी व्याकरण',पृ.सं.431

‘खूब खींचतान कर मैं शिवशक्ति और भीमशक्ति को जोड़ने का उन्हें इकट्टे लाने का प्रयत्न कर रहा था।’ (अनु. पृ.सं.14)

अनुवादक ने मूल लेखक की भावना को संवेदनशीलता के साथ वर्णनात्मक शैली में अनुवाद किया गया है। प्रमुखतः शाब्दिक अनुवाद किया है। मूल कृति में ‘आवळण्याचा’ इसका अनुवाद भाव को दृष्टि में रखकर उसका भावानुवाद किया है।

2.‘रोहित कांबले आणि कबीर कोर्टाच्या आवारात वडाच्या झाडाखाली बसले होते त्याच्यात चर्चा चालू होती.’ (मराठी उपन्यास-हिंदू- पृ.सं. 110)

‘रोहित कांबले और कबीर कांबले कोर्ट परिसर में वड के पेड़ के नीचे बैठे थे। उनमें चर्चा चल रही थी।’ (अनु. पृ. सं. 99)

उपरोक्त मूल वाक्य संयुक्त वाक्य है। अनुवादक ने भावानुवाद का सहारा लेकर अनुवाद किया है। लेकिन मूल में ‘वडाच्या झाडाखाली’ के लिए अनुवादक ने वही शब्द का प्रयोग किया है। जो कि पढ़ने में सही नहीं लग रहा हैं।

3.‘आपण धर्म बदला पहिजे काशिनाथ पोळकेच बोलण कबीर कांबळेला पुनःपुन्हा आठवत होत. केवळ तात्या कांबळेन आपला धर्म बदलला होता तात्या कांबळेन आपली पत्नी सविता कांबळे आणि मुलगा रोहित कांबळे हयांचा धर्म बदलला होता तात्या कांबळेची शेवटची इच्छा होती की सर्वांनीच बौद्ध धर्माचा स्वीकार केला पाहिजे.’ (हिंदू-पृ. सं. 89)

'अकेले तात्या कांबले ने अपना धर्म बदला। तात्या कांबले की अंतिम इच्छा यह थी, कि बस्ती के सभी लोग बौद्ध धर्म स्वीकार करें।' (अनु.पृ.सं.82)

उपन्यासकार ने मूल में तात्या के संपूर्ण परिवार का धर्म बदलने के संदर्भ का उल्लेख किया है किन्तु अनुवाद में सिर्फ तात्या कांबले का ही नाम मिलता है। तात्या के पूरे परिवार के लोंगो का नाम भी मूल में दिया गया है किन्तु अनुवादक ने बाकी नाम छोड़ दिया।

4.'माझ्या शरीरात वीर्याचा समुद्र उफाळून येवो

मैथुनाच्या वेडान माझ्या मस्तकात असंख्य वादळ उठो

माझ्या शिश्नाला आजन्म कडापन प्राप्त होवो

तिच्या शरीरात गारांचा पाउस पडो,

हिमवर्षा होवों आणि तिचा माझा चिखल होवो. (हिंदू-पृ.सं.104)

'मेरे शरीर में वीर्य का समुद्र खौल उठे। मैथुन के आवेग में मेरे मस्तिष्क में असंख्य आँधिया उठे, मेरे शिश्न को आजन्म कडापन प्राप्त हो जाए ,उसके शरीर मे ओलो की बारिश हो जाने दे, हिमवर्षा हो और हम दोनो एक दूसरे में समा जाए।' (अनु.पृ.सं. 95)

उपर्युक्त गद्यांश मे काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। अनुवाद में अनुवादक ने शाब्दिक और भावानुवाद का प्रयोग किया है। इस गद्यांश में माणिकचंद के भोगवादी स्वभाव को दर्शाया गया है।

5.'द्रौपदीन खराटा पायरीजवळ ठेवला डोक्यावर पदर घेतला आणि भक्तिभावनं पायरीच दर्शन घेउन मंदिराच्या पायरया चढू लागली विष्णु पुजारी तित्याकडे अधाशासाररवा पाहात होता द्रौपदी भीत- भीत मंदिरात जात होती.' (हिंदू-पृ.सं.138)

'द्वौपदी ने झाड़ू सीढी के पास रखी। सिर पर आंचल ओढ़ लिया और भक्तिभाव से सीढी का दर्शन लेकर मंदिर की सीढियाँ चढने लगी। विष्णु पुजारी उसकी ओर भूखे आदमी की तरह देख रहा था । द्रौपदी डरते-डरते मंदिर में जा रही थी।' (अनु.पृ.सं.125)

मूल कृति में 'अधाशासारखा' शब्द के लिए 'भूखे आदमी की तरह' अनूदित किया गया। जो सही नहीं हैं। इसके लिए यहाँ पर हिन्दी शैली के अनुसार 'हवस' या 'भोगवादी' सही है किन्तु अनुवादक ने अर्थ को दृष्टि में रखकर अनुवाद नहीं किया है इसलिए पाठक को सही अर्थ समझने में कठिनाई हो सकती है।

6.'आज मला खूप अस्वस्थ वाटत होत. त्यात माझं आणि लक्ष्मीचं भांडन झालं.'(उपल्या-पृ.सं.121)

'आज मैं बहुत बेचैन महसूस कर रहा था। फिर मेरा और लक्ष्मी का झगड़ा भी हो गया।'(अनु-120)

मूल कृति में बाबासाहेब अम्बेडकर की मूर्ति के लिए चंदा इकट्टा करने के लिए राहुल गाँव-गाँव घूम रहे थे। लेकिन लोग कहते हैं कि इनकी नौकरी चली गई

इसलिए बाबासाहब का पुतला खड़ा कर रहे हैं पैसा जमा करके खा जाते हैं। इस संदर्भ में यह वाक्य उपन्यास में आया है। जिसका भावानुवाद किया गया है।

7.'समता सैनिक दल चे कार्यकर्ते रोहितदास आणि मिलिंद ची धुलाई केली होती.त्यासाठी छात्रावासचे पैंथर कार्यकर्ता क्षब्ध झाले होते.' (उपल्या-पृ.सं.142)

'समता सैनिक दल के कार्यकर्ताओं ने रोहितादास और मिलिन्द की धुलाई की थी, इससे छात्रावास के पैंथर कार्यकर्त्ता क्षब्ध हो गये थे।' (अनु-पृ.सं.143)

उपर्युक्त वाक्य में मूल कृति में जो स्थिति है उस स्थिति को अच्छी तरह उजागर करने के किये अनुवादक ने भावानुवाद किया है।

8.'फोन खाली ठेवला आणि वैशालीला वाटलं, आपण जायला हवं होतं ताईंकडे. शनिवारची संध्याकाळ आपण कशी काढली हे आठवूनही तिच्या अंगावर काटा येत होता. तिनं जायचं ठरवलंही होतं; पण ताई घरी असतील की नाही याची खात्री नव्हती. गेलो असतो तर बरं झालं असतं.'(त्रिशंकू-पृ.सं.61)

'फ़ोन नीचे रख दिया और वैशाली को लग रहा था कि जाना चाहिए था दीदी के पास। शनिवार की रात काटना मुश्किल हो गया था। उसने सोचा भी था कि मैं जाऊँगी लेकिन दीदी घर पर होगी या नहीं इसकी उसे कोई जानकारी नहीं थी।' (अनु-पृ.सं.65)

मूल कृति में जो भाव है उसे ध्यान में रखते हुए शब्दानुवाद एवं भावानुवाद करने की कोशिश की गई है।

9.'नागनाथ बलशेटवार आणि अनंत कलशट्टीला अचलपूरमधून बाहेर काढलं होतं. सदानंद कांबळे मंत्री झाल्यानंतर बलशेटवार आणि कलशट्टीचे दिवस फिरले होते. ते गावाबाहेर येऊन झोपडी टाकून राहत होते. लोकांनी त्यांच्यावर बहिष्कारच टाकला होता. तुरुंगातल्या जगण्यापेक्षा तुरुंगाबाहेरचं जगणं त्यांना असह्य झालं होतं. साध्या साध्या गोष्टीसाठी त्यांना अचलपूरऐवजी धरणगावला जावं लागत होतं. सदानंद कांबळे मंत्री झाल्यामुळे गाव त्यांच्या पाठीशी उभा होता.' (बहुजन-पृ.सं.16)

'नागनाथ बलशेटवार और  अनंत कलशट्टी को अचलपूर गाँव से बाहर निकाल दिया गया । सदानंद कांबळे मंत्री बनने के बाद बलशेटवार और कलशट्टीचे के बुरे दिन आ गए । वो गाँव के बाहर एक झोपड़ी डालकर रहने लगे क्योंकि गाँव के लोगों ने उन्हें बहिष्कृत कर दिए ।' (अनु-पृ.सं.18)

उपर्युक्त वाक्य में अनुवादक ने सही अर्थ का ग्रहण करकर अनुवाद किया है जो सटीक अनुवाद लग रहा है ।

10'पोलीस येऊन गेल्यानंतरच वस्तीत जायचं असं मनाशी पक्कं करून तो सिगारेटचे झुरके घेऊ लागला होता. पोलीस कधी येतील आणि कलशट्टीला उचलून नेतील ह्याची तो वाट पाहत होता.' (बहुजन-पृ.सं.17)

'पोलिस आखर चले जाने के बाद बस्ती में जायेंगे ऐसा उन्होंने सोचा था और सिगरेट पीने लगा । पोलिस कब आएगी और कब कलशट्टीला को उठाकर ले जाएगी इसी के इंतज़ार में बैठा था । (अनु-पृ.सं.18)

उपर्युक्त दोनों वाक्य  संयुक्त वाक्य है । अनुवादक ने यहाँ मूल भाव एवं स्थिति को ध्यान रखते हुए भावानुवाद करने की कोशिश की है । मूल कृति में दंगे होने के बाद की स्थिति का वर्णन किया गया है ।

**4.5.2.अर्थ के दृष्टि से**

अर्थ के अनुसार वाक्य के आठ भेद माने जाते हैं ।

जैसे-

**1.विधि वाचक वाक्य :-**

ऐसे वाक्य जिनमें किसी भी कार्य के होने का या किसी के अस्तित्व का पता चलता है या बोध होता है, उन वाक्य को 'विधानवाचक वाक्य' कहते हैं। विधानवाचक वाक्य को दूसरे शब्दों में विधि वाचक वाक्य भी कहा जाता है । ऐसे वाक्य जिनमें किसी भी कार्य के होने का या किसी के अस्तित्व का पता चलता है या बोध होता है, उन वाक्य को विधानवाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे- "द्रोपदी अभी सोयी नहीं थी ।"[81]

"नाथू को पलटन में भर्ती हुए, सोलह वर्ष बीत चुके थे।"[82]

"और साऊली खिलखिला उठी, पर उसका कंठ- स्वर व्यथा से बोझिल था।"[83]

---

[81]'त्रिशंकु',अरुण साधू,पृ.सं.12

[82]'नरवानर',शरणकुमार कुमार लिंबाले,पृ.सं.22

[83]वही से

**2.निषेधवाचक वाक्य :**

ऐसे वाक्य जिसमें किसी भी कार्य के निषेध का बोध होता हो, उन वाक्यों को 'निषेधवाचक वाक्य' कहा जाता है।

जैसे- "खैर, यह तो तय है कि कांवली अभी भीतर से नहीं टूटी"[84]

"तुम अगर मुझमें अभी भी अपना लालच देखती हो, तो कुछ गलत नहीं करती, रमना।"

"लक्ष्मी धम से एक किनारे बैठ गई और उसे लगा, दम फूल आया है, बोल नहीं पाएगी।"[85]

**3.आज्ञावाचक वाक्य**

वह वाक्य जिनमें आदेश, आज्ञा या अनुमति का पता चलता हो, उन वाक्यों को 'आज्ञावाचक वाक्य' कहते हैं।

जैसे- 'रिक्शा अपने ही डेरे में खड़ा कर लेना"

"रिक्शावाला खडा होगा, उसे निबटा दो।"

"रात को लौटे, तो सीधे अपने घर चले जाना, हमको जगाने की जरूरत नहीं।"

---

[84]'हिंदू',शरणकुमार कुमार लिंबाले,पृ.सं.35

**4. प्रश्नार्थक वाक्य :**

ऐसे वाक्य जिनमें किसी प्रश्न का बोध हो, उन्हें 'प्रश्नवाचक वाक्य' कहा जाता है। 'प्रश्नवाचक वाक्य' के नाम से ही पता चलता है कि इस वाक्य में प्रश्नों का बोध होने वाला है।

इन वाक्यों के माध्यम से प्रश्न पूछकर वस्तु या किसी अन्य के बारे में जानकारी जानने की कोशिश की जाती है।

जैसे- "मेरे अंतिम संस्कार पर आओगे?"[86]

"आप लोग पाठ्यक्रम की पुस्तके क्यों नहीं पड़ते?"[87]

**5. विस्मयादिबोधक वाक्य :**

जिन वाक्यों में आश्चर्य, घृणा, अत्याधिक खुशी, शोक का बोध होता हो, उन वाक्य को 'विस्मयादिबोधक वाक्य' कहा जाता है। इसके अलावा इन वाक्यों में विस्मय शब्द होते हैं और इन शब्दों के पीछे (!) विस्मयसूचक लगता है और इसी से इन वाक्य की पहचान बनती है। मतलब यह है कि इसी सूचक चिन्ह के आधार पर इन वाक्यों को आसानी से पहचाना जाता है।

जैसे-"कितनी झोपड़ियाँ जल गई ! कितने लोग मर गए ! फिर भी कुछ नहीं हुआ।"[88]

[86]'नरवानर'शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.92

[87]नरवानर',शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.30

[88] 'नरवानर'शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.75

**6. इच्छाबोधक वाक्य :**

‘इच्छावाचक वाक्य’ जिसमें हमें वक्ता की कोई इच्छा, आकांक्षा या कामना आदि का पता चलता है, उन वाक्यों को ‘इच्छाबोधक वाक्य’ कहते हैं।

जैसे-“याकूब को आन्दोलन में शामिल होने की इच्छा हुई।”

**7.संदेहसूचक वाक्य :**

जिन वाक्यों में किसी भी प्रकार की संभावना और संदेह का बोध हो, उन वाक्यों को ‘संदेहसूचक वाक्य’ कहते हैं।

जैसे- “भीमा साढे नौ, पौने दस तक सिनेमा से वापस लौटेगा।”[89]

“शायद आज पुलिस स्टेशन जाना पड़ेगा।”[90]

**8. संकेतवाचक वाक्य :-**

वह वाक्य जिनमें एक क्रिया या दूसरी क्रिया पर पूरी तरह से निर्भर हो, उन वाक्य को ‘संकेतवाचक वाक्य’ कहा जाता है।

जैसे- “अच्छे से प्रैक्टिस करते, तो मैडल मिल जाता।”[91]

“अच्छी तैयारी की होती, तो सिलेक्शन हो जाता।”[92]

---

[89]‘त्रिशंकू’अरुण साधू,पृ.सं.22

[90]‘बहुजन’शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.32

[91]‘नरवानर’शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.34

[92]‘नरवानर’,शरणकुमार लिंबाले,पृ.सं.45

## 4.6. मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों में मुहावरों का प्रयोग

कहानियों और उपन्यासों में मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग के कारण रचना आकर्षक बन जाती है। उनका अनुवाद करना बहुत मुश्किल हो जाता है। इस स्थिति में अनुवादक को लक्ष्य भाषा में वैसा ही अर्थ देने वाले मुहावरों का चयन करना पड़ता है। जो मूल पाठ को न्याय मिले। वैसे कुछ उदाहरण हम नीचे देख सकते हैं जिसका प्रयोग इन उपन्यासों में हुआ है-

1.‘इकडे आड तिकडे विहीर’ (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.81)

‘इधर कुआँ उधर खाई’ (अनु.पृ.सं.75)

2.‘घरान्याला कालिमा फासने’ (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.92)

‘खानदान पर कोलंतार पोता’ (अनु.पृ.सं.85)

3.‘मुंह में राम बगल में छुरी’ (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.54)

‘मुंह में राम बगल में छुरी’ (अनु.पृ.सं.65)

4.‘तळपायाची आग मस्तकाला जाने’ (मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.45)

‘अत्यंत क्रोधित होना’ (अनु.पृ.सं.44)

5.‘अंगाचा लाही होने’(मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.54)

‘आग बबुला होना’(अनु.पृ.सं.53)

6. ‘जळत राहून माशाशी वैर’(मराठी उपन्यास-त्रिशंकू-पृ.सं.79)

‘ पानी में रहकर मगर से बैर ’ (अनु-पृ.सं.103)

7. ‘कच्च्या गुरुचे चेले नव्हते.’ (मराठी उपन्यास-त्रिशंकू-पृ.सं.97)

‘कच्ची गोलियां खेलनेवाले थोड़े ही थे’(अनु-पृ.सं.125)

8.‘भंडारा फुकंने’(मराठी उपन्यास-त्रिशंकू-पृ.सं.30)

जादू-टोना करना (अनु.पृ.सं.31)

9. ‘सळो की पळो करणे’(मराठी उपन्यास-बहुजन-पृ.सं.34)

‘तक़लीफ देना’ (अनु.पृ.सं.35)

कुछ ऐसे मुहावरे भी हैं जिनका समानान्तर मुहावरा हिंदी में नहीं मिल पाया इसलिए उनका भावानुवाद किया गया हैं। जैसे-

‘चेडा घालून वेडा करने’(मराठी उपन्यास-त्रिशंकू-पृ.सं.64)

जादू-टोना करना (अनु.पृ.सं.65)

‘अंगात कापरे भरने’(मराठी उपन्यास-उपल्या-पृ.सं.54)

शरीर में थरथरी छूटना। (अनु.पृ.सं.55)

‘जाति संगती माती खावी’(मराठी उपन्यास-बहुजन-पृ.सं.64)

अपने जाति वालों के साथ ही रहना।(अनु.पृ.सं.65)

**निष्कर्ष**

उपर्युक्त मूल्यांकन के निष्कर्ष में यह कह सकते हैं कि किसी भी भाषा की मूल इकाई 'वाक्य' होती है उसी के अनुसार वाक्य का आधार लिए बिना साहित्यकार के साहित्य का भाषिक अध्ययन सटीक नहीं होता। अनूदित उपन्यासों में अनुवादक ने सरल, मिश्र, संयुक्त वाक्य का भावानुवाद तथा शब्दानुवाद किया है। अनुवादक ने अनुवाद करते समय कुछ उदाहरणों में अपनी ओर से जोड़ा है तो कुछ उदाहरणों में अपनी ओर से वाक्य को छोड़ दिया है। मुहावरों का अनुवाद करते समय अनुवादक ने ज्यादातर भावानुवाद किया है, क्योंकि मुहावरों का अनुवाद करना कठिन कार्य है। प्रस्तुत अध्याय में इस तरह वाक्य स्तर पर भाषिक अध्ययन करने की कोशिश की गई है। अतः इसके माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि इन उपन्यासों की भाषा सशक्त एवं परिमार्जित है। इनके उपन्यासों में शब्दों के अर्थ तथा स्पष्टीकरण का प्रयोग करके में क्लिष्टता को सरल बनाने की हर संभव कोशिश की है।

# पंचम अध्याय

## मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन :

## ‘प्रोक्ति’ स्तर पर

# पंचम अध्याय

## मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन : 'प्रोक्ति' स्तर पर

'वाक्य' को भाषा की आधारभूत और सब से बड़ी इकाई माना जाता है। वास्तव में भाषा का मूल व्यापार संप्रेषणीयता है। संप्रेषणीयता का अभिप्राय है वक्ता का मंतव्य इस मंतव्य को भाषिक अभिव्यक्ति देना और स्रोता द्वारा वक्ता के इस मंतव्य को समझाना संप्रेषणीयता का साध्य है। इस प्रकार की संप्रेषण केवल वाक्य द्वारा संभव नहीं हो सकता। इसीलिए आधुनिक भाषाविज्ञान वाक्य को भाषा की महत्तम इकाई नहीं मानता। वह संप्रेषणीयता के लिए एक ऐसी इकाई की आवश्यकता की बात करता है जो वाक्य से ऊपर का स्तर हो। वक्ता के संदेश तथा श्रोता तक उस संदेश को संप्रेषित करनेवाले भाषिक व्यापार को भाषाविज्ञान वाक्योपरि स्तर की सार्थक इकाई को 'प्रोक्ति' या 'पाठ' की संज्ञा प्रदान करता है। वाक्योपरि स्तर की इस इकाई को मान्यता से व्याकरण की एक नई संकल्पना सामने आयी, जिस का अध्ययन आज दो रूपों में किया जा रहा हैं -1. एक प्रोक्ति-विश्लेषण और 2. पाठ विश्लेषण आदि।

'प्रोक्ति एवं पाठ' के स्वरूप को लेकर भाषा विद्वानों में कई मत रहे हैं। संबद्ध एवं तर्कसंगत रूप से अन्वित वाक्यों को पाठ के अंतर्गत माना गया है और उनके अध्ययन को 'पाठ विश्लेषण' कहा गया है। दूसरी ओर सामाजिक अर्थों,

कार्यव्यापारों और वाक्यों के बीच के संबंधों को 'प्रोक्ति' कहा गया है। इसके अध्ययन को 'प्रोक्ति विश्लेषण' कहा गया है। वस्तुतः 'प्रोक्ति एवं पाठ' इन दोनों में कोई विशेष अंतर नहीं है। जीवन में वास्तविक प्रयोग के संदर्भ में भाषा अपने आप सुनियोजित ताने-बाने जैसी बुनी होती है और उससे होने वाला संप्रेषण व्याकरणिक तथा कोशगत अर्थ से ऊपर के स्तर का होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि यदि व्याकरणिक संरचना की दृष्टि से वाक्य भाषा की महत्तम इकाई है तो संप्रेषणीयता की दृष्टि से प्रोक्ति भाषा की महत्तम इकाई है।

भाषा एक बहुस्तरीय संरचना है और इसका हर स्तर एक दूसरे से अधिक्रमित संबंधों के आधार पर जुड़ा है। यह स्वनिम से आरम्भ होकर प्रोक्ति के स्तर तक पहुंचती है।

जैसे – 1.स्वनिम 2.रूपिम

3.शब्द 4.पदबंध

5.उपवाक्य 6.वाक्य

7.प्रोक्ति

स्वनिम : भाषा की लघुतम संरचनात्मक इकाई है।

रूपिम : भाषा की लघुतम अर्थवान इकाई है।

वाक्य : व्याकरणिक संरचना के स्तर पर भाषा की सबसे बड़ी इकाई है।

प्रोक्ति : संप्रेषण के स्तर पर भाषा की मूल इकाई है।

अत: यह मानना ठीक होगा कि प्रोक्ति एक वाक्योपरि इकाई है। यहाँ 'वाक्योपरि' का तात्पर्य वाक्यों की एक व्यवस्थित कड़ी से है। जैसे वाक्य शब्दों की कड़ी है वैसे ही प्रोक्ति वाक्यों की कड़ी है। शब्दों की हर कड़ी वाक्य नहीं होती वैसे ही वाक्यों की हर कड़ी प्रोक्ति नहीं हो सकती। प्रोक्ति के अंतर्गत वाक्यों में परस्पर रूपात्मक संसक्तता का होना आवश्यक है अर्थात् वाक्यों का अनुक्रम विषय के अनुरूप होता है। इस तार्किक संसक्ति तथा अर्थ संगति के कारण प्रोक्ति भाषिक व्यवहार की स्वायत्त व स्वतंत्र इकाई मानी जाती है।

भाषा एक प्रकार की सामाजिक संस्था है। हमारे सामाजिक व्यवहार भाषा के ही माध्यम से संपन्न होते हैं, जिसमें वक्ता और श्रोता के बीच संवाद या वार्तालाप होता है। यह अनेक प्रकार का हो सकता है। जैसे- दो व्यक्तियों का परस्पर संभाषण अथवा एक व्यक्ति बोले और बहुत लोग सुनें जैसे कक्षा में अध्यापक और छात्रगण अथवा किसी संत का आध्यात्मिक प्रवचन और सामने बैठे हजारों श्रोतागण अथवा चुनावी सभा में प्रत्याशी का भाषण या कई लोग मिलकर किसी एक व्यक्ति से पूछताछ कर रहे हों। भाषिक व्यवहार के घटित होने में कई बातें शामिल रहती हैं।

ध्वनि, शब्द, रूप, पदबंध तथा वाक्य आदि की दृष्टि से 'प्रोक्ति' की अपेक्षा छोटे होते हैं। इसलिए प्रोक्ति का स्वतंत्र रूप से अध्ययन करना आवश्यक है। वस्तुत: प्रोक्ति अर्थ की पूर्णता के कारण छोटी भी हो सकती है, साथ ही अनेक वाक्यों के संयोग से आकार में बड़ी भी हो सकती है। अत: प्रोक्ति अनेक अर्थो को प्रकट करनेवाली एक भाषा संरचना की महत्त्वपूर्ण इकाई है जो भाषा वैज्ञानिक अध्ययन में आवश्यक है। काफी समय से वाक्य को ही महत्वपूर्ण तथा बड़ी इकाई

माना जाता रहा हैं परंतु आधुनिक-वैज्ञानिकों ने वाक्य से भी बड़ी इकाई की कल्पना की है। इसी संकल्पना का नाम 'प्रोक्ति' है।

भाषा को समाज के संदर्भ में परिभाषित करने वाले विद्वान् प्रोक्ति को भाषा की आधारभूत इकाई के रूप में लेते हैं क्योंकि उनके लिए भाषा का अर्थ है –'भाषा प्रयोग' और 'भाषा प्रयोग का अर्थ है- 'संप्रेषण की विभिन्न स्थितियाँ'। भाषा का प्रयोग हम सभी के लिए बड़ा ही सहज और स्वाभाविक है। अपने जीवन में विभिन्न क्रिया कलापों के लिए हम बिना किसी कठिनाई के भाषा का प्रयोग करते हैं लेकिन अनायास ही कोई यह प्रश्न पूछ ले कि 'भाषा क्या है?' तो उत्तर देना कठिन होगा क्योंकि यह प्रश्न एक ओर भाषा की संरचना से जुड़ा है तो दूसरी ओर भाषा प्रयोग से। पिछले कई दशकों के दौरान भाषा के क्षेत्र में अनेक अध्ययन तथा शोध कार्य किये गए। उनसे एक बाद बहुत ही स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आयी हैं और वह यह है कि भाषा संरचना की दृष्टि से जटिल तथा प्रयोग की दृष्टि से बहुआयामी। ये दोनों बाते एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। भाषा की संरचना को भाषा से अलग कर के देखना तर्क संगत न होगा। इस दृष्टिकोण फलस्वरूप भाषा को एक जीवंत तथ्य के रूप में देखा जाने लगा। एक ऐसे तथ्य के रूप में जो समाज में होनेवाले हर परिवर्तन के प्रति संवेदनशील है और समाज की घटनाओं के प्रति सजग। अत: भाषा केवल 'स्वनिमों का समूह' या अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र नहीं हैं वरन् वह मनुष्य की व्यक्तिगत और सामाजिक अस्मिता की परिचायक भी है। भाषा ही वह एक मात्र कड़ी है जिसने हमारे वर्तमान को हमारे प्राचीन मूल्यों और परंपराओं से जोड़ रखा हैं।

## 5.1 प्रोक्ति : अर्थ एवं परिभाषाएँ

'प्रोक्ति' शब्द दो शब्दों से बना हैं-'प्र'+'उक्ति' । उक्ति का अर्थ है- परिष्कृत अथवा श्रेष्ठ तथा उक्ति का अर्थ है- कथन। प्रोक्ति ऐसे सुसंघठित वाक्यों की इकाई है जिसके द्वारा वक्ता अपने मनोभावों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है।

'प्रोक्ति' को अंग्रेजी में 'डिसकोर्स' (Discourse) कहा जाता है। "स्टुडेंटस माँडर्न डिक्शनरी में 'डिसकोर्स' का अर्थ हैं- व्याख्यान, परिचर्चा, संभाषण तथा संवाद दिया गया हैं।"[93]

**परिभाषाएँ**

**1.डॉ.कृष्ण कुमार गोस्वामी :-**

"प्रोक्ति वाक्योपरिस्तर की एक ऐसी इकाई है जिसके कथ्य में आतंरिक संशक्ति (संयोजन) तथा वाक्यों में संर्दभपरक और तर्कपूर्ण अनुक्रम रहता है।"[94]

**2. डॉ.पाण्डेय शशिभूषण 'शिन्ताशु' :-**

" 'प्रोक्ति' एक पूर्ण सांदर्भिक कथन है, जिसका निवेश कई वाक्यों में होता है।"[95]

**3. डॉ.उषा सिंहल :-**

---

[93]'स्टडन्स माँडर्न डिक्सनरी',श्री नवलजी,दसवाँ संस्करण-१९९४,पृ.सं.262

[94]'शैक्षिक व्याकरण और हिंदी भाषा', डॉ.कृष्णकुमार गोस्वामी,पृ.सं.107

[95]'शैली और शैली विश्लेषण', डॉ.शशिभूषण'शीतांशु',पृ.सं.126

“प्रोक्ति से अभिप्राय तात्पर्य युक्त संसक्त वाक्यों की एक ऐसी व्यवस्थित कड़ी से है जिसमें बंधकर संप्रेष्य अपना सावयव रूप ग्रहण करता है।”[96]

**4. हैलिडे :-**

“प्रोक्ति भाषा की परिचालित होने वाली इकाई है। प्रोक्ति की निजी संरचना होती है। ऊपर से जैसा लगता है, यह वाक्यों के संयोजन भर से प्रचलित नहीं होती है, अपितु यह वाक्यों में कूटबद्ध होती है।”[97]

उपर्युक्त परिभाषाओं से ज्ञात होता है कि ‘प्रोक्ति’ का स्वरुप बहुआयामी है। भाषाविज्ञान में वाक्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा विज्ञान की सबसे बड़ी इकाई वाक्य को माना जाता है वाक्यों के आधार पर भाषा का अध्ययन किया जाता है परंतु संप्रेषण के लिए केवल वाक्यों से काम नहीं चलता है, बल्कि वाक्यों की सीमा को लांघकर भी जाना पड़ता है। जिसका अगला रूप प्रोक्ति है। वस्तुत: प्रोक्ति पाठ का पर्याय है और पाठ भाषा की बृहत्तर इकाई मानी जाती है।

वस्तुतः ‘प्रोक्ति’ पाठ का पर्याय है और ‘पाठ’ भाषा की बृहत्तर इकाई मानी जाती है। पाठ वाक्यों का केवल समूह मात्र नहीं होता है अपितु एक संदेश होता है जो प्रोक्ति के रूप में सिध्द होता है। भाषा का मुख्य प्रयोजन संप्रेषण होता है और पूर्ण संप्रेषण वाक्योपरि स्तर पर होता है इसी वाक्योपरि स्तर की सार्थक इकाई को पाठ या प्रोक्ति कहा जाता है और प्रोक्ति का निर्माण वाक्यों का सार्थक अनुक्रम करता है। कोई भी वाक्य अपना पूर्ण अर्थ प्रकट करता हो, तो वह प्रोक्ति कहलाता है। अत:

[96]‘शैली वैज्ञानिक और नाटक’, डॉ.उषा सिंहल,पृ.सं.25

[97]‘शैली वैज्ञानिक और नाटक’, डॉ.उषा सिंहल ,पृ.सं.25

अर्थ की पूर्णता के कारण वाक्य, अनुच्छेद या संपूर्ण कृति भी प्रोक्ति के नाम से अभिहित की जाती है। डॉ. उषा सिंहल के अनुसार 'प्रोक्ति' की संकल्पना का मूल आधार संलाप है। संलाप का अर्थ है कि प्रोक्ति में सम्बोधक या सम्बोध्य और पाठक या श्रोता का अस्तित्व सदा बना रहे। बहुत से विद्वान तो वाक्य को ही भाषिक संरचना की सबसे बड़ी इकाई स्वीकार करते हैं परन्तु हम इस तथ्य से परिचित हैं कि भाषा का काम न केवल एक के बाद एक वाक्य प्रस्तुत करना है बल्कि उसके माध्यम से कहे जाने वाले भाव को श्रोता तक पहुँचाना भी है, अर्थात् कही गई बात को संप्रेषित करना है। अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के लिए यह आवश्यक है कि श्रोता सामने हो। साथ ही जो बात वक्ता द्वारा कही जा रही है, वह श्रोता समझ ले तथा उसका प्रत्युत्तर भी देने में समर्थ हो। अपनी बात को सही तथा सार्थक ढंग से कहने, श्रोता द्वारा उसे ठीक से समझने, फिर उसका सही जवाब देने की प्रक्रिया में एक से अधिक वाक्य सामने आते हैं जो आपस में एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। इसी कारण दो लोगों के बीच संप्रेषण संभव भी हो पाता है। संप्रेषण की इस इकाई को ही 'प्रोक्ति' कहा जाता है।

जैसे- "मौसी, कैसे आई ?"

"नहीं आने को बोलता क्या?"

"ऐसी बात नहीं हैं। यूँ अचानक आ गई इसलिए पूछ रहा हूँ।"

"तो क्या तुझे पहले बताकर आना चाहिए ?"

"मौसी के लिए चाय बनाओ।"

“मौसी, गठरी में क्या है?”

“सगौती की मटकी लाई हूँ।”

“मैं हँसने लगा। मौसी ने गठरी खोल दी।” (नरवानर पृ.सं.92)

इस प्रकार उसमें विचारों के आदान-प्रदान का होना आवश्यक है। इस पूरी प्रक्रिया का एक साथ अध्ययन करने के लिए हमें वाक्य से ऊपर की इकाई की कल्पना करनी पड़ेगी, जिसका संबंध संलाप (वार्तालाप) से हो। इसी के विषय में आगे विस्तार से देखेंगे कि वाक्य से ऊपर की इकाई, जिसे विद्वानों ने ‘प्रोक्ति’ नाम दिया है संप्रेषण के लिए किस प्रकार उपयोगी है? उसके कौन-कौन से ऐसे अभिलक्षण हैं, जो उसे वाक्य से ऊपर के स्तर की इकाई बनाते हैं? प्रोक्ति के कितने रूप या भेद हैं, जिनमें हमारी भाषिक अभिव्यक्तियाँ विभिन्न अर्थ पाती हैं?

इन सभी बिंदुओं पर आगे विस्तार से चर्चा की जाएगी तथा प्रोक्ति (discourse), संलाप (dialogue) तथा एकालाप (monologue) जैसी संकल्पनाओं को स्पष्ट किया जाएगा।

## 5.2 प्रोक्ति की संकल्पना

जैसा कि विचारों के आदान-प्रदान में एक प्रक्रिया जुड़ी रहती है अर्थात् वक्ता द्वारा अपने विचारों को प्रकट करना तथा श्रोता द्वारा उसे सही अर्थ में समझकर उसका जवाब देना। भाषा का काम केवल शब्दों या वाक्यों का बोलना मात्र नहीं है बल्कि सार्थक अभिव्यक्ति के लिए बातचीत करना है। बातचीत तभी संभव है जब

श्रोता वक्ता के संदेश को समझे, जो संदर्भ में अधिक स्पष्ट होता है। यहाँ संदर्भ से तात्पर्य है -

कौन किससे बोल रहा है, किस समय बोल रहा है, कहाँ बोल रहा है, किस कारण बोल रहा है आदि।

उदाहरण के

लिए एक वाक्य देख सकते हैं-

'पाँच बज गए हैं।'

इसका सामान्य अर्थ समय की जानकारी देना है लेकिन यदि इसे एक संदर्भ में रखकर देखा जाए, तो इसका अर्थ भिन्न हो जाता है। जैसे-

(पति किसी मित्र से बातचीत व्यस्त है)

पत्नी : सुनिए, पाँच बज गए हैं।

पति : बस, अभी चलते हैं।

यहाँ पत्नी वास्तव में यह कहना चाहती है कि 'देर हो रही है' अर्थात् यह संदेश वह अप्रत्यक्ष कथन के रूप में पति को दे रही है। पति इस संदेश को ग्रहण कर उसका जवाब उस संदेश के अनुकूल ही दे रहा है। यहाँ अन्य संभावित प्रत्युत्तर भी हो सकते हैं। जैसे-

पत्नी : सुनिए, पाँच बज गए।

पति : तो मैं क्या करूँ? (संदर्भ को ठीक से न समझने पर)

यहाँ यह स्पष्ट है कि विचारों का आदान-प्रदान तभी हो सकता है जब वक्ता तथा श्रोता दोनों को संदर्भ की जानकारी हो, अन्यथा अटपटे एवं अस्वाभाविक उत्तर ही एक दूसरे को मिलेंगे। इसी संदर्भ में यह भी उल्लेख करना ज़रूरी है कि संदेश चाहे लिखकर दिया जाए या बोलकर, इसका अपना एक 'कोड' होता है, एक शैली होती है। जब हम किसी से बातचीत करते हैं तो आमतौर पर पूरे वाक्यों का कम प्रयोग करते हैं। इसका कारण यह है कि हर अगला वाक्य अपने पहले वाक्य से जुड़ा होता है। बातचीत करते समय बहुत से अंश अनुमान के आधार पर छोड़ दिए जाते हैं क्योंकि वहाँ उसका संदर्भ होता है। उदाहरण के लिए -

'शर्मा जी, आप कल आए नहीं ?'

'जी, मैं मुंबई चला गया था।'

'क्यों?'

'कुछ काम था।'

'अच्छा।'

'आप मुंबई क्यों चले गए थे' का अर्थ यहाँ तीसरा वाक्य देखिए। इसमें 'क्यों' वास्तव में 'आप मुंबई क्यों चले गए थे ? इसी प्रकार 'कुछ काम था' में 'मुझे' वाक्य के प्रारंभ में अनुमानित किया जा सकता है।

इसके विपरीत सामान्य कथन में शैली बदल जाती है। वहाँ सभी वाक्यों का अपने में पूरा होना आवश्यक होता है। जैसे-

1. मैं आज रात को देर से आऊंगा।

2. मैं रात को खाना नहीं खाऊंगा।

3. मैं रात को पढ़ाई करूंगा। आदि।

हम इन्हीं वाक्यों को कथन के रूप में इस प्रकार नहीं कह सकते हैं -

1) देर से।

2) नहीं खाऊँगा।

3) करूँगा।

इस रूप में इनका पूरा अर्थ स्पष्ट नहीं होता। किसी संदर्भ में लाकर इस प्रकार की अभिव्यक्तियाँ सही अर्थ दे सकती हैं लेकिन संदर्भ से कट कर नहीं। अब इन्हीं अभिव्यक्तियों को एक संदर्भ में लाकर देखिए

'तुम रात को कब आओगे ?'

'देर से'

'क्या खाना खाकर खाओगे ?'

'नहीं खाऊँगा।'

इन विवेचनों के आधार पर प्रोक्ति की संकल्पना को इस प्रकार समझा सकता हैं।

'प्रोक्ति' किसी संदेश को संप्रेषित करने वाली वाक्य से ऊपर की वह इकाई है जिसका आधार संलाप होता है। विचारों के आदान-प्रदान के लिए यह एक से अधिक वाक्यों की कड़ी के रूप में सामने आता है क्योंकि सभी वाक्य एक दूसरे से

जुड़ने पर ही एक विशेष संदर्भ में सार्थकता पाते हैं अर्थात् उन सबके बीच एक व्यवस्था का होना आवश्यक होता है।

## 5.3 प्रोक्ति के अभिलक्षण

**1)** जिस प्रकार वाक्य शब्दों के समूह से बनता है, उस प्रकार प्रोक्ति वाक्यों के समूह से बनती है। इसीलिए इसे वाक्य से ऊपर की इकाई माना गया है।

**2)** सभी वाक्यों का आपस में संबंध होना आवश्यक है। यदि वाक्यों के बीच पूर्वापर संबंध नहीं है तो उसे प्रोक्ति का उदाहरण नहीं माना जा सकता।

**3)** वक्ता या लेखक द्वारा बोला गया वाक्य सार्थक होना चाहिए जिसका अर्थ या भाव ग्रहण कर श्रोता या पाठक उत्तर दे सके। निरर्थक वाक्यों का प्रोक्ति में स्थान नहीं होता। अर्थात् जिस अभिव्यक्ति से विचारों का आदान-प्रदान न हो, उसे प्रोक्ति नहीं माना जा सकता।

**4)** प्रोक्ति का स्वरूप उसके आकार से निर्धारित नहीं होता, बल्कि उसके प्रकार्य से निर्धारित होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रोक्ति अपने आप में पूर्ण होती है। इसका संबंध एक शब्द, एक वाक्य, पूरी एक घटना, प्रसंग या पूरे जीवनवृत्त से हो सकता है।

**5)** प्रोक्ति की संरचना का आधार संलाप होता है। इसीलिए संलाप को प्रोक्ति की सार्थक इकाई स्वीकार किया जाता है।

**6)** प्रोक्ति में संप्रेषणीयता का तत्व विद्यमान रहता है, जो संदर्भ (context) की माँग करता है। यहीं संदर्भ वक्ता या लेखक और श्रोता या पाठक के कथन या संदेश को एक दसरे से जोड़ता है।

7) संप्रेषण की इकाई होने के कारण प्रोक्ति संदेश को श्रोता तक केवल पहुँचाती ही नहीं, बल्कि श्रोता की प्रतिक्रिया को वक्ता तक भी पहुँचाती है। इसके कारण ही संलाप की स्थिति बन पाती है। वास्तव में संप्रेषण का सशक्त और स्वाभाविक माध्यम संलाप है।

8) प्रोक्ति के माध्यम से विचारों को विभिन्न रूपों में तथा तर्क संगत ढंग से अभिव्यक्त

किया जा सकता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि 'भाषिक संप्रेषण' की महत्वपूर्ण इकाई प्रोक्ति हैं।

## 5.4.प्रोक्ति के प्रकार

प्रोक्ति को अनेक आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है। विधा के आधार पर उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक, एकांकी, खंडकाव्य, महाकाव्य, मुक्तक गीत आदि। इन सबमें संवादितता, एकालाप, वर्णनात्मक आदि दृष्टियों से अंतर होगा। संबद्ध व्यक्ति या व्यक्तियों के आधार पर संलाप, एकालाप कथन के आधार पर प्रोक्ति के प्रत्यक्ष कथन (Direct speech) एवं अप्रत्यक्ष कथन (Indirect Speech) भेद होते हैं। कथन की प्रकृति के आधार पर विवरणात्मक, व्याख्यात्मक,

मूल्यांकनपरक तथा मिश्र भेद हैं, इसके अतिरिक्त कथन शैली एवं स्थान की दृष्टि से संसक्ति के आधार पर भी प्रोक्ति को वर्गीकृत किया जा सकता है। जिनमें से कुछ मुख्य आधार तथा अनेक आधार पर हो सकने वाले प्रोक्ति के प्रकार संक्षेप में देख सकते हैं-

1.प्रोक्ति क्या है, अथवा किस विधा का अंश है, इसके आधार पर उपन्यास, कहानी, नाटक, एकाकी खंडकाव्य, महाकाव्य, मुक्तक, गीत, निबंध आदि भेद हो सकते हैं। कहना न होगा कि इन सब में संवादिता, एकालापता, वर्णनात्मकता आदि दृष्टियों से अंतर होगा जो तत्वतः प्रोक्ति की प्रकृति से संबद्ध है।

2.संबद्ध व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के आधार पर मुख्यतः संलाप (दो व्यक्तियों में बातचीत) तथा एकालाप ( एक ही व्यक्ति अकेले में बोलता है। वह वक्ता भी होता है श्रोता भी) दो भेद होते हैं। संलाप गत्यात्मक प्रोक्ति में जल्दी जल्दी वक्ता श्रोता बनता है तथा श्रोता वक्ता। अर्थात वक्ता श्रोता की भूमिका बदलती रहती है।

3.कथन के आधार पर इस आधार पर प्रोक्ति के प्रत्यक्ष कथन ( डाइरेक्ट स्पीच) एवं अप्रत्यक्ष कथन (इनडाइरेक्ट स्पीच) भेद होते हैं। 'राम-मैं तुम्हारा नाम जानता चाहता हूँ? मोहन-मुझे मोहन कहते हैं, प्रत्यक्ष कथन है तो 'राम ने मोहन से पूछा कि उसका नाम क्या है और मोहन में उत्तर में कहा कि उसका नाम मोहन है' अप्रत्यक्ष कथन।

4.कथन की प्रोक्ति के आधार पर इस आधार पर विवरणात्मक (जिसमें विवरण हो), व्याख्यात्मक (जिसमें व्याख्या हो) मूल्याकनपरक (जिसमे मुल्याकन हो) तथा मिश्र

( जिसमें इन दोनों में कोई दो या तीना हो) भेद हो सकते हैं। प्रोक्ति की प्रकृति के आधार पर आश्चर्यसूचक, प्रश्नसूचक, सूचनापरक अनेक भेद भी विभिन्न संदर्भों में माने जा सकते हैं।

5. प्रोक्ति में स्थान की दृष्टि में संसक्ति के आधार पर प्रोक्ति के विभिन्न घटकों में स्थान की दृष्टि में संसक्ति दो प्रकार की होती है। 1. स्थानिक (लोकल) संसक्ति तथा 2) सार्वजनिक (ग्लोबल) संसक्ति। संसक्ति का अर्थ होता है पूरी तरह आपस में मिल कर एक इकाई बन जाना।

1. स्थानिक संसक्ति इसमें संसक्ति स्थान-विशेष पर होती है। इसके अंतर्गत अनेक प्रकार की संसक्तिया आती हैं जिनमें से कुछ मुख्य ये हैं-

1. सांकेतिक संसक्ति- इसमें सर्वनाम तुम, तुम्हारा, वह उसका आदि जो पीछे की किसी संज्ञा के लिए आते है अथवा निर्देशको - यह वह, इसी कारण उसी कारण आदि के आधार संसक्ति होती है।

2. शाब्दिक संमक्ति- इसके कई अभेद है- पुनरावृत्ति संसक्ति इसमें पुनरावृति जैसे- संसार घूम रहा है। चन्द्रमा घूम रहा है आदि।

3. संयोजनी संसक्ति- संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्य इसके उदाहरण होते हैं। कई वाक्यों को एक में मिलाना भी यही है। जैसे- 'राम गया, मोहन गया, श्याम गया' का 'राम, मोहन और श्याम गए।'

4. समुच्चयबोधी संसक्ति- इसमें और तथा एवं, या, अथवा, परंतु, किंतु, लेकिन, पर, कि आदि का प्रयोग होता है।

5. वैरामिक संसक्ति-यह विराम चिह्ना से होती है।

उपर्युक्त प्रोक्ति के प्रकार सभी विधाओं में देखे जाते हैं जो कि प्रोक्ति का वास्तविक एवं पूर्ण अर्थ स्पष्ट करने में सहायक होते है । मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का प्रोक्ति को अभिव्यक्ति के आधार पर विश्लेषित किया जा रहा है जो निम्नानुसार देख सखते हैं-

**5.4.1.मराठी से हिंदी में अनूदित उपन्यासों में संलाप की व्यवस्था**

इस प्रकार की प्रोक्ति में दोनों पात्र सक्रिय होते हैं । वार्तालाप में एक से अधिक अर्थात कम से कम दो प्रतिभागियों का होना आवश्यक हैं – 1. वक्ता तथा 2. श्रोता । वार्तालाप में वक्ता तथा श्रोता परस्पर भावों या विचारों का आदान-प्रदान करते हैं । आदान-प्रदान के इस क्रम में दोनों की भूमिकाएँ परस्पर बदलती भी रहती हैं अर्थात् कभी वक्ता श्रोता बन जाता है तथा कभी श्रोता वक्ता बन जाता है । इस प्रकार दोनों के बीच उत्तर- प्रत्युत्तर की स्थिति बनी रहती है । निम्नलिखित रूप इस प्रकार के उदाहरण उपन्यासों के अंतर्गत देख सकते हैं । जैसे-

**1.**'साला रास्कल गागुर्डे भेटला पण बोलला नाही.

मला ही दिसला.

पी.एस.आय झाला म्हणजे आभाळाला हात पोहचले अस नाही हराम्यान आमचे पैसे बुडवले. एक दिवस हयाची वर्दी उतरवेन लिहून ठेव.' (मराठी उपन्यास-हिंदू. पृ. सं.14)

अनु. 'साला रास्कुल गांगुर्डे मिला था, पर बोला नहीं।

मुझे भी दिखलाई दिया।

पी.एस.आई हुआ इसका मतलब यह नहीं कि आकाश तक हाथ पहुँचे। हरामी ने हमारे पैसे डुबोंए। एक दिन उसकी वर्दी उतारूँगां। लिखकर रखों।' (अनु. पृ. सं. 18)

मूल कृति के प्रोक्ति में लेखक के द्वारा जो भाव व्यक्त होता है। उसी प्रकार का मूल भाव अनूदित कृति में रूपांतरित करने में अनुवादक शायद यहाँ पर असफल है, क्योंकि मूल कृति 'साला रास्कल गांगुर्डे भेटला पण बोलला नाही', अनुदित 'साला रास्कल गांगुर्डे मिला था पर बोला नहीं।' अनुवाद में भूतकाल का प्रयोग किया है। जब कि मूल में वर्तमानकाल में वाक्य है। इसी प्रकार 'आकाश तक हाथ पहुंचे' इसका अनुवाद भी मूल के अनुसार नहीं लगता है। इसका अर्थ यह होता है कि बहुत बड़ा अमीर बन गया है। उपर्युक्त गद्यांश में लगभग शाब्दिक अनुवाद किया है।

**2.** 'तो ज्या दिवशी मरेल त्या दिवशी मी पुरणपोळी खाईन आणि नारळ वाहिन असा नवस केला होता. पुरणपोळीचा नैवेध आणलाय रंजना मोरे. (मराठी उपन्यास-हिंदू पृ. सं. 68)

अनु. ‘वह जिस दिन मर जाएगा उस दिन मैं मीठी पुडियां खाऊँगी और शिव जी को नारियल चढाऊँगी ऐसी मनौती मैंने माँग ली थी। मीठी पुड़ियों का प्रसाद लेकर आई है ना रंजना मोरे। (अनु. पृ. सं. 63)

मूल कृति के प्रोक्ति में ग्रामीण महाराष्ट्र की संस्कृति का वर्णन सामाजिक शैली में किया है  किन्तु अनुवाद ने लक्ष्य भाषा को शैली के अनुसार मूल कृति की भावना रूपांतरित नहीं कर सके हैं क्योंकि महाराष्ट्र में पूरनपोली जो कि गूढ तथा चने की दाल मिलाकर गेहूँ के आटे के साथ रोटी बनाते है, अब संपूर्ण भारत में भी 'पूरणपोली' शब्द का प्रयोग होने लगा है किन्तु अनुवाद 'मिठी पुडिया' किया गया है। जिससे मूल का आशय अनुवाद में स्पष्ट नहीं हो पा रहा है।

**3.** ‘तुला प्रसाद द्यायचाय आत ये.’ (मराठी उपन्यास-हिंदू. पृ. सं. 137 )

‘तुझे प्रसाद चाहिए भीतर आ’ (अनु.पृ.सं.125)

इस प्रोक्ति में मूल में प्रसाद देने की क्रिया है। मतलब खुद देना चाहता है बल्कि अनुवाद में ‘तुझे प्रसाद चाहिए भीतर आ’ इसका अर्थ बदला हुआ दिखायी देता है। बाकी सब शाब्दिक अनुवाद है।

**4.**‘बायको बोंब ठोकेल माझ्या नावान मी म्हणाले.’ (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ.सं.17)

अनु.‘पत्नी मेरे नाम पर बोंव मारेगी मैं बोला।’ (अनु. पृ. सं. 19 )

मूल कृति के प्रोक्ति में सामाजिक शैली का प्रयोग किया गया है। अनुवादक ने भी अनूदित कृति मे वैसे ही रूपांतरित किया है किन्तु मूल कृति में बोंब अंग्रेजी शब्द का प्रयोग किया गया है। अनुवाद में भी वही शब्द प्रस्तुत किया गया है।

लक्ष्यभाषा के अनुसार मुंह पर उलटी हथेली रखकर जो आवाज निकाली जाती है उसे बोंब कहा जाता है परन्तु अनुवाद में शाब्दिक अनुवाद मिलता है। जब कि यह सही अनुवाद लगता है।

**5.** 'रश्मीच पंढ काय झाल?

तिला एड्स झाला आणखी काय होणार?

आपण ही तपासुन घेतल पाहिजे.'(हिंदू-पृ. सं. 19 )

अनु. 'रश्मि का आगे क्या हुआ?

उसे एडस हो गया। और क्या होने वाला था ?'

मूल कृति के वाक्य 'आपण ही तपासून घेतल पाहिजे' इस मूल कृति के वाक्य को छोड़ दिया है, जिससे अनुवाद में मूल भाव का ही अर्थ बदलने की अधिक संभावना है।

**6.** 'अहो पावणं जेवून जा, अहो पावण पुन्हा या मी भुईसपाट झालो होतो तात्या कांबळेला मारल.' (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ. सं. 21)

'आप हमारे पाहुन है। आप खाना खाकर ही जाइए फिर से आइए। मैं बेचैन था। तात्या कांबले को इन लोगों ने मार दिया है।' (अनु.पृ.22)

इस प्रोक्ति में 'पावण' शब्द का अनुवाद पाहुन किया है। जब कि हिन्दी भाषा के अनुसार मेहमान होता है। मूल गद्यांश में भी दिया है। इससे पात्र द्वारा पूर्व भाव लेखक का संदेश देने में असफल रहा है अनुवाद।

**7.** 'कावळेन तात्या कांबळेचा कांटा काढला. आता आपल्या पोराला पाटील करेल गोपीचंद।' (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ. सं. 21 )

'कांबले ने तात्या कांबले का कांटा निकाल दिया। अब वह अपने लड़के को पटेल बनाएगा। गोपीचंद बोला। (अनु.पृ.सं.23)

मूल प्रोक्ति में अचलपुर गांव में सवर्ण तथा अवर्ण का जातिगत युद्ध का वर्णन किया गया है। इसी संदर्भ मे कांटा शब्द का प्रयोग किया गया है किन्तु कांटा शब्द मारने के संदर्भ में अनुवाद में लिया है। जो कि हिन्दी भाषा संरचना के अनुसार सही नहीं इसमें अधिकतर शाब्दिक अनुवाद मिलता है।

**8.** 'ठीक आहे तू ये'

हळदी कुंकवाला बोलावल होत की विचारायला.' (मराठी उपन्यास-हिंदू-पृ. सं.74)

'ठीक है तू आ'

'कार्यक्रम में बुलाया था या यह सब पूछने को...'(अनु. पृ. सं. 69)

उपरोक्त प्रोक्ति में भावानुवाद किया है किन्तु मराठी संस्कृति को पूर्ण रूप से लक्ष्य भाषा में नहीं आ पाया हैं। दोनों भारतीय भाषाएँ हैं किन्तु दोनों के संस्कृति में भिन्नता है। इसलिए 'हळदी कुंकवाला' इस शब्द के लिए 'कार्यक्रम में' सही अनुवाद नहीं हैं। क्योंकि मूल में 'हळदी कुंकवाला' शब्द का सही अर्थ है जो सुहागिन महिलाओं के लिए साल में एक बार मनाने वाला त्यौहार है। जिसका सीधा भावानुवाद करने की कोशिश की है। जब यह कि अर्थपूर्ण अनुवाद नहीं लगता।

**8.**‘बरोबर आहे गायीला पवित्र माना आणि माणसाला अपवित्र माना विषारी नागला दूध पाजा आणि माणसाची हत्या करा। ही तुमची सहिष्णुता आहे पर्वीसारखी आता जातीयता कोठे आहे.’(मराठी उपन्यास-हिंदू- पृ. सं. 40 )

‘आपका कहना सही है। गाय को पवित्र मानों और मनुष्य को अपवित्र। जहरीले सांप को दूध पिलाओ और मनुष्य की हत्या करो। यह है आप लोगों की सहिष्णुता।’ (अनु. पृ. सं. 43)

लेखक उपरोक्त प्रोक्ति में सामाजिक न्याय और सहिष्णुता के बारे में गुरूजी जी से बातचीत द्वारा चित्रण किया। गुरूजी दलित कार्यकर्ता थे। कसबे एक शिक्षक या इन दोनो की बातचीत के समसामयिक जाति व्यवस्था का वर्णन मिलता है। अनुवाद में पूरी तरह से संपूर्ण भाव का अनुवादक ने सामाजिक शैली में अनुवाद किया है।

**9.** ‘आपल्याला सिव्हिलला निगावं लागेल.’

‘काय घडलंय ?’

‘अन्याय झालाय आमच्यावर...’

‘आपल्यावर अन्याय होणार नाही, तर कुणावर अन्याय होणार ? काय झालंय,

ते तरी सांग.’

‘सांग रे तू सांग...’

‘आमच्या गावात...’

‘कोणतं गावं ?’

‘बावी...’

‘सांग काय झालं ? पुढं बोल...’

‘आमच्या हरिजनवाड्यात...’

‘हरिजनवाडा नाही.भीमनगर म्हण.’ (मराठी उपन्यास-उपल्या.पृ.सं.50)

‘हमें सिविल अस्पताल जाना होगा।‘

‘क्या हो गया है ?’

‘हम पर जुल्म हुआ है...’

‘जुल्म हम पर नहीं होगा तो किस पर होगा ? यह तो बताइए कि हुआ क्या है ?’

‘बताओ रे, तुम बताओ।‘

‘हमारे गाँव में...।‘

‘कौन-सा गाँव ?’

‘बावी...’

‘बताओ क्या हुआ, आगे बोलो...?’

‘हमारे हरिजनवाड़े में...’

‘हरिजनवाड़ा नहीं भीमनगर कहो ।‘ (अनु.पृ.सं.52)

स्रोत भाषा की प्रोक्ति पूर्ण रूप से सुनियोजित है जिससे अर्थ और भाव स्पष्ट हो रहा है। उपर्युक्त संताप प्रोक्ति है। उक्त प्रोक्ति का अनुवादक ने अधिकतर शब्दानुवाद किया है जो मूल के भाव तथा अर्थ को पूर्णतः स्पष्ट कर रहा है।

**10.** 'जा की रे, पुढं बघून. बघतोस काय ?'

'तुम्ही काय करताय, ते...'

'बघून काय करणार आहेस ?'

'काही नाही...'

'तक्रार करायची असेल, तर तक्रार कर..'

मी पायर्या उतरून खाली आलो.

पंडित कनाडेनं माझ्यावर नजर रोखली होती.

'तुम्ही भित्तिपत्रक का काढलं ?' (मराठी उपन्यास-उपल्या.पृ.सं.34)

'चलो बढ़ो आगे, सामने देखो। पीछे क्या देख रहे हो ?"

"वही जो तुम लोग कर रहे हो।"

"देखकर क्या करोगे ?"

"कुछ नहीं।"

"शिकायत करना चाहते हो तो जरूर करो।" मैं सीढ़ियों से उतरकर नीचे चला आया।

पंडित मुझे घूर घूरकर देख रहा था।

“तुमने भित्तिपत्र क्यों निकाल लिया ?” (अनु.पृ.सं.36)

उपर्युक्त प्रोक्ति में आन्दोलन के समय का वर्णन किया गया है। गौतम, भीमा और पंडित नोटिस बोर्ड के पास रखते है। उनका इस तरह का रखना किसी का भी ध्यान आकर्षित कर सकता था। जब पंडित ने कॉलेज का भित्तिपत्र नोटिस बोर्ड से निकाल लेता है तब गौतम और भीमा देखते है कि कोई देख तो नहीं लिया। तब उपर्युक्त प्रोक्ति के माध्यम से बातचीत चली है।

11.‘तुम्ही पुनर्विवाह का करत नाही ?’

‘कसं शक्य आहे ?’

‘मी तुमच्याबरोबर विवाह करीन...’

ती माझ्याकडे पाहतच राहिली. निर्विकारपणे.

मी ओशाळलो.

‘पण मी अस्पृश्य आहे...’

‘चल. तुला वेड लागलंय्....’ (मराठी उपन्यास-उपल्या.पृ.सं.85)

‘आप फिर से शादी क्यों नहीं करती ?

‘यह कैसे संभव है ?

‘मैं आपके साथ शादी करूँगा।’

वह मेरी और देखती रह गई। निर्विकार। मैं झेंप गया।

‘लेकिन मैं अछूत हूं।’

रोहितदास ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे उठाते हुए कहा- चल, तू पागल तो नहीं हो गया है ?' (अनु-पृ.सं.86)

उपर्युक्त प्रोक्ति में शादी के संदर्भ में जो बातचीत हो रही हैं उसका वर्णन किया गया है। इस प्रकार से इन उदाहरणों के वार्तालाप में दो प्रतिभागी हैं जो उनके बीच हो रहे उत्तर-प्रत्युत्तर के कारण उनके बीच वक्ता श्रोता की भूमिकाओं की परस्पर अदला-बदली हो रही है।

'दलितांना मिळणारया सवलती, शिक्षणानं स्वाभिमानी झालेला दलित समाज, चळवळीत उभा राहिलेला बंडखोर तरुण, नोकरयामुळे सुखी जीवन जगणारा अस्पृश्य, धर्मातरामुळे हिंदूची नाकारलेली कामं, यामुळे हिंदू समाज डिवचला गेला होता. हजारों वर्ष आपल्या पायात कुत्र्या-मांजरासारखा वागणारा समाज आपल्या बरोबरीन वागतो आहे है कदापि मान्य न होणार सत्य होतं. अश्या भेसूर दहशतीत मला माझी जात चोरण भाग होतं.' (मराठी उपन्यास.बहुजन-पृ.सं.105-106)

'दलितों को मिलने वाली सुविधाएँ, शिक्षा के कारण उनमें उभरती अस्मिता व स्वाभिमान और इस नयी अस्मिता से जीने वाला दलित-समाज, आन्दोलनों के कारण उभरने वाला विद्रोही युवक, नौकरियों के कारण सुखी जीवन जीने वाला अछूत, धर्मातर के कारण थोपे गये कामों के प्रति उसकी अरुचि इन विविध कारणों में सवर्ण हिंदू चिढ गये थे। हजारों वर्षो से कुत्त-बिल्लियों की तरह उनके पैरों के निकट गुलाम बनकर जीता था अब यह समाज उनकी बराबरी करने की काशिश में

था। स्वभावत उसके इस परिवर्तन और अस्मिता को स्वीकार करने के लिए ये कतई तैयार नहीं थे । ऐसी स्थिति से मुझे अपनी जाति विपाला जरूरी लगा (अनु.पृ.सं.121)

उपरोक्त प्रोक्ति में शिक्षा से स्वाभिमान और अस्मिता से जीने वाला दलित समाज, जो बरसों से सवर्णों के पैरों के पास कुनै बिल्लियों की तरह गुलाम बनकर जीता था। वह अब सचेत  होकर अपने हक के लिए लड़ना सिख गया है । इनकी यह बदलती स्थिति सवर्ण लोगों से बरदाश नहीं हो रही है, उनके इस परिवर्तन और अस्मिता को स्वीकार करने के लिए व कतई तैयार नहीं है ।

'आज काही मोठे ऑफिसर तर 10-15 हजाराचे कुत्रे हौसेसाठी पाळतात. कुत्र्याचे सुद्धा मुके घेतात. हे मी स्वतः पाहिले म्हणून माला वाटते आमचे लोक पोट भरण्यासाठी शिकारीचे कुत्रे पाळतात आणि या मोठया अधिकारयांना पैसा जास्त झाल्यामुळे मुके घेण्यासाठी ते कुत्रे विकत आणतात.' (मराठी उपन्यास-त्रिशंकू.पृ.सं.181)

आज कुछ बड़े अधिकारी शौक से 10-15 रुपये हजार के कुत्ते पालते है । कुत्तों को चूमते है। इसे मैने अपनी आंखों से देखा है। एक और हमारे लोग पेट भरने हेतु शिकार के लिए शिकारी कुत्ते पालते है और ये तथाकथित बड़े अधिकारी रिश्वत का पैसा अधिक हो जाने के कारण चूमने के लिए कुत्ते खरीद लाते है। (अनु.पृ.सं.165)

इस प्रोक्ति में समाज के दो वर्गों का विश्लेषण दिखाई देता है | एक यह जो पेट की आग बुझाने के लिए मारा-मारा फिरता है, जो कुछ मिला उसी में अपना गुजारा करता है। दूसरा वर्ग वह जो अतिरिक्त संपत्ति का अपने मनोरंजन के लिए साधन का इंतजाम करता है। इन दोनों में काफी अंतर दिखाई देता है।

इस प्रकार से हम इन उपन्यासों में उदाहरणों के माध्यम से देख सकते है कि वार्तालाप में दो प्रतिभागी हैं जो उनके बीच हो रहे उत्तर-प्रत्युत्तर के कारण उनके बीच वक्ता श्रोता की भूमिकाओं की परस्पर अदला-बदली हो रही है।

**5.4.2.मराठी से हिंदी में अनूदित उपन्यासों में एकालाप की व्यवस्था**

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है इसमें वक्ता किसी संदर्भ विशेष में स्वयं से बातचीत करता है अर्थात् स्वयं से कुछ कहता है तथा स्वयं ही उसका उत्तर देता है। इस प्रकार एक ही व्यक्ति वक्ता तथा श्रोता की भूमिका निभाता है।

'एकालाप' को प्रोक्ति के अंतर्गत रखने का एक प्रमुख कारण यह है कि इसमें भी वक्ता तथा श्रोता की सत्ता बनी रहती है किन्तु जहाँ तक श्रोता का संबंध है वह अलग से वहाँ नहीं होता, बल्कि स्वयं वही व्यक्ति इस भूमिका को निभाता है।

'एकालाप' में एक ही व्यक्ति वक्ता तथा श्रोता दोनों की भूमिकाओं का निर्वाह करता है। प्रकार्य की दृष्टि से एकालाप भी एक तरह का वार्तालाप ही होता है क्योंकि इसमें भी वक्ता और श्रोता तो होते हैं चाहे वह एक ही व्यक्ति क्यों न हो। जब कभी कोई व्यक्ति भावावेश में अपने आप से कुछ कहने लगता है तो वह स्वयं ही

वक्ता भी होता है और स्वयं ही श्रोता भी होता है साथ ही वही प्रोक्ति को आगे बढ़ाता है। ऐसे ‘एकालाप’ प्रोक्ति के उदहारण निम्न रूप से देख सकते हैं। जैसे-

1.‘पाण्या तुझा रंग कसा?

ब्राम्हणाने हात लावला तर तीर्थासारखा महाराने हात लावला तर विटाळासारखा.’

(हिंदू- पृ. सं. 107)

पानी तेरा रंग कैसा?

ब्राम्हण का हाथ लग गया तो तीर्थ जैसा, दलितो का हाथ लग गया तो अपवित्र जैसा।

पानी तेरा रंग कैसा? (अनु. पृ. सं. 97)

इस प्रोक्ति में दलितों पर जो शोषण होता है उसे काव्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। अनुवाद में भावानुवाद का प्रयोग बहुत ही सटीक रूप से किया है। जिससे मूल कृति का भाव पूर्णरूप से अनूदित कृति में आ चुका है।

**2.**“माझ्या मनाचं महानिर्वाण होवो।

माझ्या मनातील तमाम वाममार्गाना संबोधी प्राप्त होवो

माझ्या मनात पापाचं भीषण जंगल का वाढतंय?

माझ्या मनात वावरणारी श्वापद कुढल्या अभयारण्यातून पळून आलीत? हया पाशवीप्रवृतीना माझाच देह का सुरक्षित वाटतोय? (मूल पृ.9-10)

“मेरे मन का महानिर्वाण हो जाए।

मेरे मन में स्थित तमाम वाममार्ग को संबोधि प्राप्त हो जाए।

मेरे मन मे पाप का भीषण जंगल क्यों बढ़ रहा है?

मेरे मन में विचरण करने वाले हिस्त्र पशु पता नहीं किस अभयारण्य से भाग कर आए हैं? इन हिस्त्र वृत्तियों को मेरी ही देह क्यों सुरक्षित मससूस होती है?" ( अनु पृ. 13)

स्रोत भाषा के प्रोक्ति का शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद किया है। हिन्दी में भाषा संरचना के 'वाममार्ग' का अनुवाद 'सही रास्ता' है जबकि अनुवादक ने इस अनुवाद अनुसार समसामयिक परंपरा के अनुसार चलती आ रही व्यवस्था का वर्णन किया है। पात्र के द्वारा मूल कृति में संबोधित, अभयारण्य, इसका अनुवाद, संबोधि, अभयराण्य जब कि मोक्ष प्राप्ति जंगल होता है। जिन से मूल लेखक के द्वारा संपूर्ण भाव तथा व्यंगार्थ प्रकट नहीं होता है। लेखक ने हिंदू में उद्धाटीत अवर्ण तथा सवर्ण को इक्ट्ठा लाने का प्रयास किया है। पात्र स्वयं मिलिन्द कांबले लेखक की भूमिका में।

**3.**'कार हायवे सोडून धरणगावच्या रस्त्याला लागली होती सूर्याचा लालबूंद गोळ डोंगराआड होत होता क्षितिजाने जणू कुंकू लावले होते थवे घरटयाकडे परतत होते रानातली माणसं घराकडे चालली होती खोडकर जनावरं चलताना मस्ती करत होती कामावरच्या स्त्रिया चेष्टामस्करी करत वाट उरकत होत्या जनावर राखणारी मुल कारकडे पाहून नमस्कार ठोकत होती अंधार पसरत होता कच्च्या रस्त्यावर गाडी नाचत होती साला रास्ता फार खराब आहे.' (हिंदू-पृ.सं.18)

‘कार हायवे छोड़कर धरणगांव की सड़क पर आ गई। सूर्य का लाल गोला पहाड की उस ओर जा रहा था। क्षितिज ने मानो लाल बिन्दी लगा ली थी। पक्षियों के समूह अपने घोसलों की ओर लौट रह थे खेत पर से लोग घरों की ओर निकले थे। शरारती पशु मस्ती कर रहे थे। मजदूर औरतें छेड़छाड़ करती घर की ओर निकली थी। गाय, भैंस की रखवाली करने वाले लड़के कार की ओर देखकर नमस्कार ठोंक रहे थे। साला सड़क बहुत ही खराब है।’ (अनु.पृ. सं. 20)

मूल प्रोक्ति में ग्रामीण क्षेत्र के परिवेश का वर्णन किया है जिसमें किसान तथा किसान की पत्नी और मजदूर लोग पूरा दिन काम करके शाम को घर की ओर निकलते समय का आंचलिक शब्दों वर्णन किया है किन्तु अनुवादक ने अनूदित कृति में सामान्य भाषा का प्रयोग करते हुए भावानुवाद प्रस्तुत किया। उपरोक्त गद्यांश में मूल ‘खोडकर जनावर चलताना मस्ती करत होती’ हिंदी ‘शरारती पशु मस्ती कर रहे थे’ इसमे मूल कृति का पूरे वाक्य का अनुवाद नहीं मिलता है, मूल गद्यांश के कुछ वाक्य को छोड़ भी दिया है। जैसे-‘कच्चा रस्त्यावर गाडी नाचत होती’ इसका अनुवाद हमें नहीं मिलता है। कई जगह मराठी भाषा के शब्दों को शब्द प्रतिशब्द वैसे ही हिन्दी में रूपांतरित किया है।

**4.**‘सारया शिवारावर चंदेरी मुलामा पसरला होता. कुत्री जीवतोड भुंकत होती कदाचित तात्या काबंळेचे खुनी लपण्यासाठी धावपाळ करत असतील किंवा दलित

आपला जीव मुठीत घेउन रानोमाळ पसार झाले असतील निसर्ग गूढ वाटत होता डोंगराळ भागामुळ मातीही भग्र आणि भेसूर वाटत होती.'(हिंदू-पृ.सं.23)

'संपूर्ण खेती पर चंद्रमा की चांदनी का प्रकाश फैला था। कुत्ते भौंक रहे थे। संभवतः तात्या कांबले का खूनी छिपने के लिए दौड़ रहा होगा अथवा दलित बस्ती के स्त्री पुरुष बच्चे अपनी रक्षा के लिए जंगल की ओर निकल गए होगें। प्रकृति रहस्यमयी लग रही थी।' (अनु.पृ.सं.24)

उपरोक्त प्रोक्ति में तात्या के हत्या के बाद का वर्णन जिस प्रकार किया है ठीक उस प्रकार का वर्णन अनूदित कृति में हमें नहीं मिलता हैं। अनुवाद में वर्णनात्मक शैली मिलती है। जब कि मूल मे सामाजिक शैली मिलती है। इसमें अनुवादक ने अपनी ओर से जोड़ने का प्रयास किया है। इसलिए पूरी तरह से मूल लेखक के भाव को स्पष्ट रूप से हिन्दी में रूपांतरित करने में सफल नहीं ही पाए।

**5.**'धर्माविरूद्ध वागण-या दलिताला मारण हा गुन्हा नाही ही त्यांची समजूत धुळीला मिळाली होती गावकरीही विचलीत झाले होते.' (हिंदू-पृ.सं.44)

'धर्म के विरोध मे आचरण करने वाले दलित को मारना अपराध नहीं होता अब तक की उसकी यह धारणा गलत साबित हुई थी। गांववाले भी विचलित हो चुके थे।' (अनु.पृ.सं.41)

लेखक ने पात्रों द्वारा इस उपन्यास मे मनोविश्लेषणात्मक वर्णन किया है। जिससे दलितों में परिवर्तन दिखायी देता है। सवर्ण से बरसों दलितों पर अन्याय कर

रहे हैं। उनकी यह विचारधारा अब असंभव लग रही है। यही इस गद्यांश में मूल तथा अनूदित कृति में दिखाई पड़ता है।

**6.**‘काळोख दलदली सारखा वाटत होता. लहू मांगाची आरोळी हळूहळ दूर जात होती.’ (हिंदू-पृ.सं.55)

‘अंधेरा दलदल की तरह लग रहा था लहूमागं की आवाज धीरे धीरे दूर जा रही थी।’ (अनु.पृ.सं.51)

इस प्रोक्ति के अनुवाद में सामाजिक शब्दों का प्रयोग करते हुए वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। मूल में ‘दलदल’ शब्द का जो प्रयोग है वही हिन्दी में भी प्रयोग किया है किन्तु हिन्दी के अनुसार ‘घना किचड़’ होता है। यहाँ पयार्यवाची मानकर अनुवादक अपनी सीमाओं की बंधन में रहकर ही शब्दों का प्रयोग किया है ऐसा प्रतीत होता है।

**7.**‘पिपंळपानाच्या सळसळीतून ढोलकीचा ताल ऐकू येत होता.’ (हिंदू-पृ.सं.47)

‘पीपल के घने पेड से ढोलक की ताल सुनाई देती है।’ (अनु.पृ.सं.45)

अनुवाद मे शाब्दिक अनुवाद मिलता है किन्तु हिन्दी भाषा के अनुसार सामाजिक शैली का प्रयोग नहीं मिलता क्योंकि ‘ढोलक’ के लिए ‘डफली’ हिन्दी में प्रयोग किया जाता है। अनुवाद में मूल के प्रति जो अर्थ है वह पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं हुआ है। मूल शब्द का ही पर्याय के रूप मे लेकर अनुवादक ने प्रयोग किया।

**8.**‘श्रीपतरावाचां वृद्ध देह संतापाने थरथरत होता.’ (हिंदू-पृ.सं.64)

‘श्रीपतराव की बूढी देह थरथराने लगी।’ (अनु.पृ.सं.59)

इस प्रोक्ति में तात्या कांबले द्वारा हत्या होने के बाद कांबले परीवार के परिस्थिति का वर्णन किया है । उपरोक्त अनुवाद में मूल कृति का 'संतापाने' इस शब्द को अनुवाद में छोड़ दिया है जिसका अर्थ होता है क्रोध होना । यहाँ पर पूर्ण रूप से भावानुवाद किया गया है ।

**9.**'कोणीच येत नाही हे लक्षात आल्यानंतर ते चहासाठी टपरीवर आले.' (हिंदू-पृ.सं.84)

'यह ध्यान में आने के बाद वे चाय के लिए एक गुमटी पर गए ।' (अनु.पृ.सं.79)

लेखक ने दलित कार्यकर्ताओं के संवादों का वर्णन इस प्रोक्ति के माध्याम से किया है । गांव में कहीं एक जगह का वर्णन मिलता है । मूल में 'टपरी' अनुवाद (गुमटी) जो कि लक्ष्य भाषा की संरचना के अनुसार सटीक नहीं लगता उसमें हिंदी में टपरी के लिए 'पानठेला' शब्द का प्रयोग होता है, शायद अनुवादक ने इसे पर्याय के रूप में रखते हुए शब्दानुवाद किया है ।

**10.**'मी मुलांसाठी काय कमवून ठेवलय ? उद्या मुलं ह्याच जाब विचारतील. त्यांना मी काय उत्तर देऊ? उद्याचं जगात त्यांच काय होणार आहे? माझी मुलं पुन्हा एकदा अस्पृश्यांची काम करू लागतील.त्यांच शिक्षणाच खर्च मी करू शकणार आहे ? त्यांना  नोकरी लावू शकणार आहे? त्यांच विवाह करू शकणार आहे? मी केवल त्यांना जन्म दिला, हेच माझ्या पित्रुत्वाच भांडवल ? (मराठी उपन्यास उपल्या-पृ.सं.136)

"मैंने अपनी सन्तति के लिए क्या कमाया है ? कल जब बच्चे मुझसे जवाब तलब करेंगे तब मैं उन्हें क्या जवाब दूँगा ? मेरे बच्चे फिर अछूतों का काम करने लगेंगे। क्या मैं उनकी शिक्षा का खर्च उठा सकूँगा ? उन्हें नौकरी दिलवा सकूँगा ? उनकी शादियाँ मना सकूँगा ? फिर क्या ? मैंने उन्हें जन्म दे दिया, क्या इतनी ही मेरी पितृत्व की पूँजी होगी ?" (अनु-पृ.सं.136)

स्रोत भाषा की प्रोक्ति पूर्ण रूप से सुनियोजित है जिससे अर्थ और भाव स्पष्ट हो रहा है। उपर्युक्त एकालाप प्रोक्ति है। उक्त प्रोक्ति का अनुवादक ने अधिकतर शब्दानुवाद एवं भावानुवाद किया है जो मूल के भाव तथा अर्थ को पूर्णतः स्पष्ट कर रहा है।

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि जो बात वक्ता कह रहा है वह स्वयं ही सुन रहा है। वास्तव में वह स्वयं को संबोधित करके खुद से ही प्रश्न कर रहा है। सब कुछ उसके ही अनुभव जगत से जुड़ा हुआ है। ऐसे वार्तालाप को एकालाप कहा जायेगा। प्रोक्ति की दृष्टि से यह सभी उपन्यास महत्वपूर्ण हैं। इन सभी उपन्यासों के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की प्रोक्तियाँ हैं।

**निष्कर्ष**

सारांश रूप में हम कह सकते हैं कि भाषा विज्ञान में व्याकरणिक स्तर की सबसे बड़ी इकाई वाक्य है। पश्चिमी भाषा वैज्ञानिकों ने भाषा प्रयोग के संदर्भ में यह अनुभव किया कि एक वाक्य में वास्तव में बात पूरी नहीं हो सकती। पूरी बात करने के लिए कई वाक्यों का प्रयोग करना पड़ता है। फ़र्दिना ड सस्यूर मानते है कि कहना

भाषा नहीं है बल्कि बातचीत है, यही बातचीत को डिसकोर्स कहते है। हैलिडे ने इसे टेक्स कहा है। डिसकोर्स के लिए हिंदी में प्रोक्ति का प्रयोग किया गया है। प्रोक्ति को संप्रेषण की वह इकाई माना जाता है, जिसके माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान होता है। यह आदान-प्रदान सार्थक संलाप के माध्यम से होता है। प्रोक्ति का निर्माण वाक्यों से मिलकर होता है, जो आपस में एक दूसरे से सम्बद्ध होते हैं। प्रोक्ति का स्वरूप उसके आकार द्वारा निर्धारित नहीं किया जाता, बल्कि उसके प्रकार्य द्वारा निर्धारित किया जाता है । इसका संबंध एक शब्द, एक वाक्य, पूरी घटना या पूरे प्रसंग से हो सकता है।

# उपसंहार

मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण निरंतर समाज के अन्य सदस्यों से विचारों और भावों का आदान-प्रदान करता है। इसके लिए भाषा की आवश्यकता पड़ती है। वस्तुतः भाषा ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा वह अपने सामाजिक प्रयोजनों की सिद्धि के लिए संदेश देता और प्राप्त करता है। प्रत्येक भाषा की अपनी-अपनी ध्वनियाँ, शब्द और व्याकरणिक संरचनाएँ होती हैं। भाषाओं की इन संरचनाओं में समानताएँ और असमानताएँ दोनों मिलती हैं।

हिंदी और मराठी के समाज, संस्कृति एवं भाषा में कुछ स्तर से एकरूपता दिखाई देती हो, लेकिन यह एकरूपता मूलतः उतनी समान नहीं है, जितनी कि वह दिखाई पड़ती है। इसमें संस्कृति के कुछ ऐसे सूक्ष्म बिंदु हैं, जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। इन भेदों का रहस्य भाषावैज्ञानिक जान सकते हैं या अनुवादक क्योंकि संस्कृति का संबंध जितना गहरा एक समाज से होता है उतना ही समाज से जुड़ी भाषा से भी होता है। इसी प्रकार मराठी एवं हिंदी भाषा परिवार, लिपि और सामाजिक स्तरों से भले ही समान नजर आते हो लेकिन जब हम इसका भाषिक दृष्टि से अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि इनकी संस्कृति और व्यवहार भिन्न-भिन्न हैं। खास तौर पर हम यह देख सकते हैं कि दोनों भाषाओं की संरचना का स्वर भी बिल्कुल भिन्न है। दोनो भाषा स्थिति, परिवेश, पर्यावरण, सामाजिक परिस्थिति, चिंतन तथा अर्थ-क्षेत्र की दृष्टि से भी एक दूसरे से काफी दूर है। इन दूरियों को निकटता में परिवर्तित करने का कार्य अनुवादक का होता है।

'अनुवाद' एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक भाषा के विचार, भावों और अर्थ को दूसरी भाषा में व्यक्त किया जाता है। अनुवाद करते समय भाषा की मूलकृति का कथ्य और शिल्प को सुरक्षित रखकर लक्ष्य भाषा में अवतरित करना आवश्यक होता है। सीधे शब्दों में कहे तो 'किसी भाषा में कही या लिखी गई बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन 'अनुवाद' कहलाता है।' यानी अनुवादक को अनुवाद करते समय स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों का ज्ञान होना आवश्यक है। इसी वजह से भाषा विज्ञान का सीधा संबंध भाषा के विज्ञान से अर्थात भाषा विज्ञान से होता है।

'विज्ञान' शब्द का सामान्य अर्थ है 'विशिष्ट ज्ञान'। यानी भाषा के सभी अंगों का अध्ययन-विश्लेषण कर तत्वों या नियमों को प्रतिपादित करना ही 'भाषा विज्ञान' है। भाषा अपने विचारों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। भाषा की अनुभूति एक जैसी हो सकती है पर उसकी अभिव्यक्ति अलग-अलग होती है। अभिव्यक्ति के विभिन्नता के कारण ही अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है। हर भाषा की अपनी-अपनी व्यवस्था होती है और वही भाषा को नियंत्रित करती है। जैसे उदाहारण के लिए हिंदी में दो लिंग हैं, तो मराठी और संस्कृत भाषा में तीन लिंग हैं। अनुवाद मूलतः दो भाषाओं की तुलना पर आधारित है यानी तुलनात्मक भाषा विज्ञान को सिद्धांतों के आधार पर दोनो भाषा यानि स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की जितनी सामग्री उपलब्ध होगी, उतना ही अनुवाद अच्छा होगा।

भाषा परंपरागत और अर्जित संपत्ति है। जिस प्रकार मनुष्य पारंपरिक विचार-विनिमय से लाभान्वित होता हैं । उसी प्रकार भाषा का विकास भी आदान-प्रदान से

होता है। अर्जन की प्रकृति के कारण भाषा का विकास और परिष्कार होता है। आज बहुभाषिकता की दुनिया में अनुवाद कार्य दो भिन्न भाषा भाषियों के बीच सेतु के समान है। आज संसार के विभिन्न भागों के लोग एक दूसरे के निकट आ रहे हैं तथा भाषाओं एवं राजनीति की सीमाओं को भूलकर एक दूसरे को समझने, जानने का प्रयत्न कर रहे हैं।

वैश्वीकरण के युग में अनुवाद की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गयी है जब से पश्चिमी देशों से परिचय हुआ है। सभी देशों की भाषा जनसामान्य तक पहुंचाने का एक ही माध्यम है- 'अनुवाद'। प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं है कि वह एक या दो से अधिक भाषाएं भली-भांति सीख सके इसलिए यह आवश्यक है कि उनके लिए वैज्ञानिक तथा तकनीकि साहित्य अपनी भाषा में उपलब्ध कराया जाए। अनुवाद और भाषाविज्ञान का सीधा संबंघ है। अनुवाद भाषांतरण की एक प्रक्रिया है, जिसमें स्त्रोत भाषा की विषय वस्तु को लक्ष्य भाषा में रूपांतरित किया जाता है। मशीनी अनुवाद तो भाषा-विज्ञान की देन है। आज सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते युग में अनुवाद का महत्व और बढ़ गया है। अत: अनुवाद करते समय भाषा विज्ञान की दृष्टि से अनुवाद को बहुत सावधानी रखनी होती है। अनुवाद करते समय मूल पाठ को महत्व देते हुए अनुवाद करना होता है। अनुवाद को लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति करते समय जहाँ मूल पाठ के भाव को सुरक्षित रखना होता है वहीं वाक्यविन्यास, लक्ष्य भाषा की संरचना, प्रकृति और प्रयोग के अनुरूप प्रस्तुत करना होता है। संपूर्ण अनुवाद में अनुवादक को स्त्रोत भाषा के शैली को सुरक्षित रखते हुए रचना के समग्र

प्रभाव को कायम रखना होता है। अभिव्यक्ति में मानकीकृत वर्तनी तथा शब्दावली की एकरूपता का ध्यान रखना होता है।

शोध-प्रबंध की आवश्यकता के अनुरूप प्रथम अध्याय में सबसे पहले मराठी उपन्यासों का परिचय और मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है तथा दूसरे उप-अध्याय में मूलकृति के लेखक या उपन्यासकार और अनुवादकों का परिचय दिया गया है।

उपन्यास मानवीय अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति का अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है। इसलिए दलित उपन्यासकारों ने अपने निजी जीवनानुभूतियों को उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया है। उपन्यास के माध्यम से लेखक दलित पात्रों के जीवन को समग्रता के साथ प्रस्तुत कर सकता है। उनके जीवन के सभी पहलुओं को वह उजागर कर सकता है। जिससे दलित वर्ग के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक तथा आर्थिक संदर्भों से जुड़े जीवन का चित्रण किया जा सकता है। इसलिए 'अम्बेडकरवाद'से प्रेरित दलित साहित्यकारों ने उपन्यासों का सृजन किया है। इन उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने दलित वर्ग के लोगों की पीड़ाएँ, यातनाएँ, अन्याय, अत्याचार, शोषण, उनका जीवन संघर्ष तथा उनमें निर्माण हुई चेतना का चित्रण किया है। ये उपन्यास व्यक्ति विशेष पर केंद्रित न होकर पूरे समाज पर केंद्रित हैं। इसमें व्यक्त पीड़ाएँ, दुःख आदि किसी एक व्यक्ति की न होकर वह पूरे समाज की हैं। देश और समाज की परिस्थितियों, परंपराओं और नीतियों के विरुद्ध विद्रोह करने के उद्देश्य से ही दलित उपन्यास लिखे गए हैं। इनमें समाज की विषमतावादी परिस्थितियों को केद्रित कर उनकी विद्रुपताओं का

चित्रण किया है। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी के विचारों से प्रेरित होकर आज दलित समाज के लोग शिक्षित हुए हैं। संगठित होकर अपने ऊपर होने वाले अन्याय, अत्याचार तथा शोषण का विरोध कर रहे हैं साथ ही अपने संवैधानिक अधिकारों के प्रति सजग हो गए हैं। वे अम्बेडकरवाद से प्रेरित स्वतंत्रता, समता, बंधुता तथा सामाजिक न्याय आदि सामाजिक मूल्यों को समझ रहे हैं। इसलिए वे समाज में समता तथा अधिकार पाना चाहते हैं, लेकिन उन्हें हर जगह संताप या अपमान को ही सहना पड़ रहा है। इस अपमान के विरुद्ध उनके मन में चेतना जागृत हो गई है। यही संताप, अपमान, आक्रोश, विद्रोह तथा चेतना दलित उपन्यासों का आधार है। दलित लेखक स्वयं भुक्तभोगी होने के कारण उन्होंने अपनी संवेदनाओं को उपन्यासों के माध्यम से चित्रित किया गया है। उन्होंने पात्रों में नई चेतना का निर्माण करने का प्रयास किया है। अतः यह संवेदना या चेतना दलित लेखकों तथा गैर दलित लेखकों के पात्रों को अलग करती है।

दूसरे अध्याय 'मराठी से हिंदी में अनुवाद की सामान्य समस्याएँ' है। अनुवाद एक भाषिक प्रक्रिया है। इसमें एक भाषा में की गयी अभिव्यक्ति दूसरी भाषा में बदल जाती है। यहां अभिव्यक्ति के बदलने का अर्थ 'भाषांतरण' है। अनुवाद में जिस भाषा से अनुवाद करते हैं उसे 'स्रोत भाषा' और जिस भाषा में अनुवाद करते हैं उसे 'लक्ष्य भाषा' कहा जाता है। प्रत्येक भाषा की अपनी संरचना होती है जिसमें ध्वनि, शब्द या पद, पदबंध, वाक्य, प्रोक्ति इकाईयाँ होती हैं। अनुवाद के लिए इन इकाइयों का ज्ञान होना आवश्यक है क्योंकि अनुवाद और भाषाविज्ञान में एक समान तत्व होता है।

अनुवाद के स्वरूप के संबंध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। कोई इसे कला मानता है, कोई विज्ञान, तो कोई शिल्प की श्रेणी में रखता है। ये तीनों आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के प्रचलित शब्द माने जाते हैं। अनुवाद को विज्ञान मानने वालों में विशेषकर 'नाइडा' कहते हैं कि 'विज्ञान किसी भी विषय का व्यवस्थित ज्ञान होता है। अतः इस संदर्भ में अनुवाद एक विज्ञान है, जो स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का ठीक से विवेचन करता है।'

कथा साहित्य में देश, काल, संस्कृति आदि विशेष रूप से रची-बसी होती है। प्रत्येक देश के कथा साहित्य में उस देश का जनजीवन, रूपायित होता है। अतः. संबंधित देशवासियों के आचार-विचार, जीवन-मूल्य, आस्थाएं, त्यौहार पर्व, मान्यताएं, सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्थान आदि का समावेश रहता है। ऐसे में लक्ष्य भाषा की परिस्थितियों के अनुसार अनुवादक सांस्कृतिक रूपांतर करने पर विवश हो जाता है। कथा साहित्य के अनुवादक को विभिन्न बोलियों के शब्द, विशिष्ट लहजे, आंचलिक रूप आदि अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। स्थानों, व्यक्तिगत नामों आदि से भी समस्या होती है।

इस प्रकार साहित्यिक अनुवाद बहु-स्तरीय और बहु-आयामी होता है। कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि रचनाओं के अनुवादक के भीतर दो भाषाओं की टकराहट, अनुवाद विशेष का व्यक्तित्व, उसकी संवेदना और भाषायी समझ, मूल रचना का सौंदर्यपरक वैशिष्ट्य तथा उनका सर्जनात्मक रूपांतरण आदि अपनी विशिष्ट भूमिका निभाते हैं। साहित्यिक अनुवाद बड़ा ही दुष्कर और जटिल

कार्य है, जिसके लिए असाधारण प्रतिभा, क्षमता और अभ्यास की अपेक्षा की जाती है।

साहित्यिक अनुवाद के क्रम में जो कठिनाइयाँ आती हैं, वे कई तरह की होती हैं। सबसे बड़ी कठिनाई तो मूल लेखन के भावों को दूसरी भाषा में सही-सही सम्प्रेषण करना है। पहले-पहले यह काम बहुत आसान लगता है, मगर वास्तव में ऐसा होता नहीं। भाव, भाषा का सहचर होता है और भाषा की लय, उसके प्रवाह, उसके मुहावरों और उसकी स्थानिकता से संचालित, स्थिर और अनुशासित होता है। इसलिए भावानुवाद के साथ-साथ अनिवार्य रूप से भाषा के स्तर पर भी कई कठिनाइयाँ जुड़ी होती हैं जिनसे अनुवादक को जूझना पड़ता है। भाषा भी किसी संस्कृति-विशेष की संतान होती है इसलिए उससे अनिवार्य रूप से जुड़ी होती है।

तृतीय अध्याय 'मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन: शब्द के स्तर पर' है। इस अध्याय के अंतर्गत शब्द को लिया है। शब्द के स्तर पर अध्ययन  में तत्सम, तद्भव, देशज और आगत आदि शब्दों का चयन कर उनके अनुवादों का अध्ययन किया गया है। भारतीय भाषाओं की वाक्य संरचना प्रायः समान है। इसलिए मराठी भाषा की सामग्री हिंदी भाषा में अनूदित करना अपेक्षाकृत सरल माना जाता है। फिर भी भाषाओं की पारिवारिक विशेषताएं या परंपरागत भंगिमाएं उनकी वाक्य संरचना में दिखाई देती है। वाक्य में कर्ता कर्म, क्रिया का विन्यास बुनियादी बिंदु हैं। यह दोनों भाषाओं में कुछ समानता और कुछ विषमता है। शब्दों के विषय में सभी भाषाएँ एक-सी नीति नहीं रखती व्याकरणिक संरचना की दृष्टि से वाक्य भाषा की सबसे बड़ी इकाई है लेकिन संदेश संप्रेषण की

दृष्टि से वाक्य से भी बड़ी एक इकाई है प्रोक्ति (Discourse) जो वक्ता के मंतव्य या विचार-बिंदु का प्रतिनिधित्व करती है और जो संदर्भ या प्रकरणयुक्त होता है। यह एक अल्पांग वाक्य भी हो सकता है। जैसे 'आओ' एक पूर्णांक वाक्य भी और एकाधिक वाक्यों का समूह भी 'प्रोक्ति' वह इकाई है जो वक्ता के अभिष्ट मंतव्य या संदेश को अपणी पूर्णता में श्रोता तक पहुंचाती है।

चतुर्थ अध्याय : 'मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन : वाक्य के स्तर पर' इसी अध्याय के अंतर्गत, उपन्यासों का वाक्य स्तर पर भाषिक अध्ययन प्रस्तुत किया है। जिसमें वाक्य की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए विभिन्न भाषा वैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाओं का उल्लेख किया गया है। जिससे वाक्य का स्वरूप स्पष्ट करने में सहायता मिली है। इसी चरण के अन्तर्गत वाक्य के आवश्यक घटकों का परिचय दिया गया है। वह परिचय देते समय उपन्यासों में प्रयुक्त वाक्यों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है। जैसे- वाक्य की सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, आसक्ति और अन्विती इन घटकों का सोदाहरण परिचय दिया है। इसी अध्याय के 'द्वितीय चरण' के अंतर्गत वाक्य के प्रकारों को रखा है। रचना के अनुसार वाक्य का वर्गीकरण करते समय सरल वाक्य, मिश्र वाक्य तथा संयुक्त वाक्यों के उदाहरण उक्त सभी उपन्यासों में से लिए गए है। इसी चरण में वाक्य का तीसरा प्रकार अर्थ के अनुसार जिसमें विधि वाक्य, निषेध वाक्य, आज्ञार्थक वाक्य, प्रश्नार्थक वाक्य, विस्मयादिबोधक वाक्य, इच्छा बोधक वाक्य, संदेश वाक्य इनके सरल, मिश्र एवं संयुक्त प्रकार के वाक्यों के अलग-अलग उदाहरणों के साथ परिचय

दिया है और इस वर्ग के अंतर्गत अंतिम अर्थ के अनुसार वाक्य का प्रकार संकेतार्थक वाक्य प्रकार के उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय : 'मराठी से हिंदी में अनूदित दलित उपन्यासों का भाषिक अध्ययन : प्रोक्ति के स्तर पर' अंतर्गत सर्वप्रथम प्रोक्ति का अर्थ एवं परिभाषाएँ को स्पष्ट किया गया है। अध्ययन की सुविधानुसार इस अध्याय को पाँच महत्वपूर्ण बिन्दुओं में विभक्त किया गया है। जिसमें प्रोक्ति की संकल्पना, प्रोक्ति के अभिलक्षण, संलाप और वार्तालाप की संकल्पना, प्रोक्ति के प्रकार और संलाप और एकालाप को उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया है।

शब्द, वाक्य और प्रोक्ति इन उदाहरणों से हम यह देख सकते हैं कि दलित उपन्यास एक विशिष्ट बोली में लिखी गई है। इन सभी उपन्यासों का अनुवादक ने किस तरह से अनुवाद किया है, क्या उसमें कोई कमिया रह गई हैं? या फिर उत्कृष्ट अनुवाद हुआ है? इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि इन दलित उपन्यासों का अनुवादक ने सटीक अनुवाद किया है। कई-कई जगह पर अनुवादकों ने भावानुवाद का सहारा लेकर कृति को सरल बनाने की कोशिश की है।

दलित उपन्यासों में जो सामाजिक परिस्थिति दिखाई देती है, उसमें अनुवाद की दृष्टि से नाते-रिश्ते की शब्दावली, मुहावरे, वर्जित शब्द और मिथक को लिया गया है साथ ही सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य जोकि संस्कृति से जुड़ा होता है, उसमें सांस्कृतिक शब्दावली और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को समर्पण के स्तर पर

तराशते हुए लिया गया है। सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का अनुवाद करते समय अनुवादक के सामने बहुत-सी कठिनाई आती हैं क्योंकि आंचलिकता से शब्द कोशों की सीमाओं का तीव्रता से एहसास होता है। ऐसी स्थिति में अनुवादक को दोनों भाषाओं के लोक समूह में जाकर जीवित भाषा की खोज करनी पड़ती है। यदि फिर भी सही विकल्प नहीं मिलता है तो लिप्यांतरण, घटना के स्तर पर विश्लेषण जैसी युक्तियों का प्रयोग करना पड़ता है । अनुवादक उस शब्द का यथावत लिप्यांतरण करता है तो उन्हें पाद टिप्पणी या व्याख्यात्मक टिप्पणी के सहारे शब्द का अर्थ स्पष्ट करना पड़ता है। इससे एक फायदा यह है कि पाठको को स्रोत भाषा की सामाजिक सांस्कृतिक वाले शब्दों को समझने में आसानी होती है।

मुहावरे, लोकोक्तियों का भावों और विचारों की अभिव्यक्ति सुस्पष्ट, सशक्त एवं प्रभावपूर्ण बनाने हेतु भाषा में विशेष महत्व होता है । इसमें संक्षिप्तता, सारगर्भिता, विदग्धता आदि गुण होते हैं। परंपरा, संस्कृति,  इतिहास आदि निम्म होने के कारण एक भाषा की मुहावरे लोकोक्ति के लिए दूसरी भाषा की समान अर्थ की अभिव्यंजक मुहावरे लोकोक्ति प्राप्त होना प्रायः असंभव हो जाता है। ऐसे में अनुवादक ने शब्दानुवाद, भावानुवाद और मुहावरे तथा लोकोक्ति के भाव को व्यक्त करने वाली नई मुहावरे-लोकोक्ति का सहारा लेकर अपना अनुवाद कार्य करने की कोशिश की है।

# संदर्भ ग्रंथ सूची

## आधार ग्रंथ

### 1. मराठी उपन्यास

| अ.क्र | पुस्तक का नाम | लेखक | प्रकाशन | संस्करण/वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1. | उपल्या | शरणकुमार लिंबाले | दिलीपराज प्रकाशन प्रा.लि.251क,शनिवार पेठ. पुणे-411 030 | 1998 |
| 2. | हिंदू | शरणकुमार लिंबाले | दिलीपराज प्रकाशन प्रा.लि.251क,शनिवार पेठ.पुणे-411 030 | 2003 |
| 3. | बहुजन | शरणकुमार लिंबाले | वाणी प्रकाशन नई दिल्ली | 2006 |
| 4. | त्रिशंकू | अरुण साधू | 225/3 पांडुरंग भुवन, शिवाजी पार्क-मुंबई-400 016 | 2006 |

### 2.हिंदी उपन्यास

| अ.क्र | पुस्तक का नाम | लेखक | प्रकाशन | संस्करण/वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1. | नरवानर | शरणकुमार लिंबाले | राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली-110 002 | 2010 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 2. | हिंदू | शरणकुमार लिंबाले | वाणी प्रकाशन नई दिल्ली | 2003 |
| 3. | बहुजन | शरणकुमार लिंबाले | वाणी प्रकाशन नई दिल्ली | 2006 |
| 4. | त्रिशंकु | अरुण साधू | 225/3 पांडुरंग भुवन, शिवाजी पार्क-मुंबई | 2006 |

## सहायक ग्रंथ



| अ.क्र | पुस्तक का नाम | लेखक | प्रकाशन | संस्करण/वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1. | अनुवाद विज्ञान | भोलानाथ तिवारी | किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली | 2011 |
| 2. | अनुवाद:सिधाद्त एवं प्रयोग | डॉ.आदिनाथ सोनटक्के | चंद्रलोक प्रकाशन कानपुर-208 011 | 1998 |
| 3. | अनुवाद क्या है | डॉ.भ.ह.राजूरकर, डॉ.राजमल बोरा | वाणी प्रकाशन दरियागंज,नई दिल्ली-110002 | 1996 |
| 4. | समग्र लेखक बाबूराव बागुल | डॉ.कृष्णा किरवले | प्रतिमा प्रकाशन महाराष्ट्र | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 5. | भाषा विज्ञान हिंदी भाषा और लिपि | राजकिशोर शर्मा | लोकभारती प्रकाशन,महात्मा गांधी मार्ग इलहाबाद 211001 | 2007 |
| 6. | वाक्य संरचना और विश्लेषण नइए प्रतिमान | बदरीनाथ कपूर | राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 7/31, असारी मार्ग, दरियागंज  नई दिल्ली | 2008 |
| 7. | आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना | डॉ.वासुदेवननंदन प्रसाद | 4271/3 अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली-110002 | 1993 |
| 8. | हिंदी शब्द-अर्थ-प्रयोग | डॉ.हरदेव बाहरी | लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद | 2007 |
| 9. | भाषाविज्ञान की भूमिका | देवेद्रनाथ शर्मा<br>दीप्ती शर्मा | राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 7/31, असारी मार्ग, दरियागंज  नई दिल्ली - 000211 | 1996 |
| 10. | उपन्यास की संरचना | प्रो.गोपालराय | राजकमल प्रकाशन नई | 2006 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | दिल्ली | |
| 11. | अनुवाद भाषाएँ-समस्याएँ | एन.ई.विश्वनाथ अय्यर | ज्ञान गंगा प्रकाशन दिल्ली | 1992 |
| 12. | हिंदी की वर्तनी तथा शब्द विश्लेषण | आचार्य किशोरीदास वाजपेयी | वाणी प्रकाशन नई दिल्ली | 2006 |
| 13. | हिंदी अनुवाद परंपरा-एक अनुशीलन | किशोरीलाल कलवार | नवभारत प्रकाशन दिल्ली | 2009 |
| 14. | मराठी का वर्णनात्मक व्याकरण | वि.भी.कोतले | राष्ट्रभाषा प्रकाशन वर्धा | 2007 |
| 15. | अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग | जी.गोपीनाथन | लोकभारती प्रकाशन इलहाबाद | 2001 |
| 16. | हिंदी व्याकरण | कामताप्रसाद गुरु | प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली | 2009 |
| 17. | हिंदी का भाषिक और सामाजिक परिदृश्य | कृष्णकुमार गोस्वामी | साहित्य सरकार नई दिल्ली | 2009 |
| 18. | हिंदी भाषा की शब्द रचना | भोलानाथ तिवारी | साहित्य सरकार नई दिल्ली | 2009 |
| 19. | हिंदी भाषा की वाक्य रचना | भोलानाथ तिवारी | साहित्य सरकार नई दिल्ली | 2009 |
| 20 | हिंदी भाषा की संरचना | भोलानाथ तिवारी | वाणी प्रकाशन नई दिल्ली | 2004 |
| 21. | मराठी भाषा का | भी.गो.देशपांडे | नंदकिशोर एंड | 1959 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | सरल परिचय | | ब्रदर्स वाराणसी | |
| 22. | भाषा अध्ययन विविध पक्ष | अंबादास देशमुख | अतुल प्रकाशन कानपुर | 1990 |
| 23. | शैली विज्ञान | नगेन्द्र | नेशनल बब्लिशिंग हॉउस दिल्ली | 1990 |
| 24. | अनुवाद प्रक्रिया और परिदृश्य | रीतारानी पालीवाल | वाणी प्रकाशन नई दिल्ली | 2004 |
| 25. | अनुवाद का समाजशास्त्र | सूर्यनारायण रणसुभे | अमित प्रकाशन गाजियाबाद | 2009 |
| 26. | अनुवाद क्या है | सं.डॉ.भ.ह.राजूरकर,राजमल वोरा | वाणी प्रकाशन नई दिल्ली | 2004 |
| 27. | अनुवाद सिद्धान्त और समस्याएँ | डॉ.कृष्णकुमार गोस्वामी, रवीद्रनाथ श्रीवास्तव | आलेख प्रकाशन दिल्ली | 1995 |
| 28. | भाषिक स्वरुप संरचना और कार्य | गोपाल सिंह | नवभारत प्रकाशन दिल्ली | 2009 |
| 29. | हिंदी भाषा संदर्भ और संरचना | सूरजभान सिंह | साहित्य सहकर नई दिल्ली | 2008 |
| 30. | हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण | सूरजभान सिंह | साहित्य सहकर नई दिल्ली | 2000 |
| 31. | भाषा आणि संस्कृति | ना.गो.कालेलकर | मौज प्रकाशन गृह गिरगांव मुम्बई | 1999 |
| 32. | तुमचे आमचे मराठी व्याकरण | श्रीपाद भागवत | विद्याभारती प्रकाशन लातूर | 2007 |

## मराठी-हिंदी कोश

| अ.क्र | पुस्तक का नाम | लेखक | प्रकाशन | संस्करण/वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1. | मराठी हिंदी शब्द कोश | श्री.ह.अ.भावे | वारदा प्रकाशन प्रा.ली.397/1,सेनापती बापट मार्ग,पुणे-16 | 2009 |
| 2. | हिंदी शब्द कोश | डॉ.हरदेव बाहारी | राजकमल एंड संस कश्मीरी गेट दिल्ली-06 | 2011 |
| 3. | हिंदी मुहावरे कोश | डॉ.भोलानाथ तिवारी | शब्दकार 2203 गली डकोतान,तुर्कमानगेट दिल्ली | 1985 |

- पत्रिकाएँ और वेब सामग्री :-
- दलित साहित्य रचना और विचार-संपादक डॉ.पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी अस्मितादर्श-अगस्त-1974-डॉ.गंगाधर
- डॉ रामगोपाल, पत्रिका, शोध भारती, अंक – 12-13 अप्रैल, 2001
- भाषा : केद्रीय हिंदी निदेशालय, 7 पश्चिमी खंड, राधाकुष्णपुरम नई दिल्ली
- अनुवाद भारतीय अनुवाद परिषद, 24 स्कूल लेन, बंगाली मार्केट नई दिल्ली

- http://mr.m.wikipedia.org/wiki/दलित साहित्य

# Akshara Multidisciplinary Research Journal

**Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal**

July 2021

**Special Issue 02 Vol.III**

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.54

TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services

**International Society for Research Activity (ISRA)**
**Journal-Impact-Factor (JIF)**

Digital Online Identifier-Database System

*Akshara Publication*

Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July 2021 Special Issue 02 Vol. III SJIF Impact- 5.54

# Editorial Board

**-: Chief & Executive Editor:–**

**Dr. Girish Shalik Koli**
Dongar Kathora
Tal.Yawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301
Mobile No: 09421682612
Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

**-:Co-Editors :–**

- **Dr. Sirojiddin Nurmatov,** Associate Professor, Tashkent Institute Of Oriental
- Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan
- **Dr.Vivek Mani Tripathi**, *Assistant Professor*, Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China
- **Dr.Maxim Demchenko** Associate Professor Moscow State Linguistic University, Institute Of International Relationships, Moscow,Russia
- **Dr.Chantharangsri Phrakhrusangkharak Yanakorn,** Assistance Professor Songkhla,Thailand
- **Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan,** Assistance Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan ,Yemen.
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** *Assistant Professor* (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- **Mr. Nilesh SamadhanGuruchal,** *Assistant Professor* (English)Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Shaikh Aafaq Anjum,** *Assistant Professor* (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- **Mr. Dipak Santosh Pawar,** *Assistant Professor* (Marathi)Dr. A.G.D. Bendale Mahila Mahavidyalya**,** Jalgaon [M. S.] India.

**AMRJ Disclaimer:**

***For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it.***

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July 2021 Special Issue 02 Vol. III

SJIF Impact- 5.54

# Index


| Sr.No | *Title of the Paper* & Author's Name | Pg.No |
|---|---|---|
| 1 | The Issue of Gender in Indian Literature-**U.T. Mahamadxodjaeva** | 06-08 |
| 2 | The matic Exploration of Rohinton Mistry works-**Gajanan N Janakwade** | 09-13 |
| 3 | An Empirical study of E-banking among the non professional student of Jalgaon City - **Dr. Pavitra Devidas Patil** | 14-19 |
| 4 | Social Exclusion of Scavengers in Mumbai **- Dr. Sonali Mandar Hajare** | 20-23 |
| 5 | Cognitive constructivism in education: the process of knowledge building- **Smt. Vaishali O. Shelar** | 24-29 |
| 6 | Effect of Working Mother on Child Socialization: An Sociological Analysis **Lovely / Dr. Ajit Singh Tomar** | 30-34 |
| 7 | The Noun Paradigms in Tamil- **Mrs. Kamola Ergasheva** | 35-39 |
| 8 | Flipped Classroom Innovative Instructional Strategy for Quality Enhancement of Teaching Practices - **Ms. Sadiya M. Farooque / Dr. Hemant D. Chitte** | 40-45 |
| 9 | The effective use of creative teaching strategies in Education for well orgaized and motivated classroom Environment- **Mr. Manohar Dilip Dalavi** | 46-49 |
| | हिंदी विभाग | |
| Sr.No | *Title of the Paper* & Author's Name | Pg.No |
| 10 | राग दरबारी' स्वातंत्र्योत्तर भारतीय ग्रामीण जीवन का जीवंतदस्तावेज- **डॉ. जिन्दर सिंह मुण्डा** | 50-54 |
| 11 | व्यावहारिक अनुवाद मे चुनौतियाँ- **अंचल सक्सेना / हृदयनारायन दुबे** | 55-57 |
| 12 | स्त्री विमर्श की सांस्कृतिक चुनौतियां**-अमन कुमार** | 58-62 |
| 13 | उपन्यासकार रामकरण शर्मा का संस्कृत साहित्य में अवदान (`सीमा` उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में) **- डॉ. प्रीति श्रीवास्तव** | 63-67 |
| 14 | यशपाल कृत `दिव्या` उपन्यास में नारी अस्मिता और जिजीविषा- **डॉ. संतोष कुमार अहिरवार** | 68-71 |
| 15 | हिन्दी कथा-साहित्य में किन्नर विमर्श- **डॉ. रमा विनोद सिंह** | 72-75 |
| 16 | 'बातन की ठाठ' कहानी के सवाल- **भरत** | 76-78 |
| 17 | दलित कहानियों का भाषिक विश्लेषण: वस्तु और भाषा के स्तर पर- **नम्रता सिंह** | 79-82 |
| 18 | मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में नारी चेतना- **प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर** | 83-85 |
| 19 | सकल भारतीय साहित्य एक है **- मरीना एक्का** | 86-88 |
| 20 | 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में चित्रित बुनकर समाज का यथार्थ- **शेख उस्मान सत्तारमियाँ** | 89-91 |
| 21 | कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी विमर्श-**डॉ . राखी. के. शाह** | 92-95 |
| 22 | गांधीजी के ग्रामोन्नति विचारों का समकालीन हिंदी साहित्य पर प्रभाव-**डॉ.चित्रा मिलिंद गोस्वामी** | 96-98 |
| 23 | डॉ. नरेंद्र मोहन की नाट्य-साधना-**डॉ.बाबासाहेब गव्हाणे** | 99-106 |
| 24 | सूर्यबाला के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ- **अस्मिता भगवान पाटील / डॉ. संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी** | 107-113 |
| 25 | डॉ. रामकुमार वर्मा के नाटकों में बौध्दविचारों से प्रभावित स्त्री चरित्र - **सौ. गायकवाड शितल अंकुश / प्रा. डॉ. कल्लशेट्टी एम.के.** | 114-115 |
| 26 | सिरमौर जनपद के वैवाहिक लोकगीत- **डॉ. नरेश कुमार** | 116-119 |
| 27 | हिंदी भाषा शिक्षण एवं साहित्य सर्जना पर कोविड-19 का प्रभाव-**डॉ. अरुण घोगरे** | 120-122 |
| 28 | हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श ('धार' उपन्यास के संदर्भ में)- **प्रा. डॉ. भारती बी. वळवी** | 123-126 |

E- ISSN 2582-5429

**Akshara Multidisciplinary Research Journal**

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July 2021 Special Issue 02 Vol. III

SJIF Impact- 5.54


| Sr.No | *Title of the Paper* & Author's Name | Pg.No |
|---|---|---|
| 29 | नरेन्द्र कोहली के 'दीक्षा' उपन्यास में सामाजिक यथार्थ-**डॉ.अमिता एल. टंडेल** | 127-131 |
| 30 | दुःख की बदली में कौंधती प्रखर अग्निशिखा-महादेवी वर्मा-**सुधा त्रिवेदी** | 132-136 |
| 31 | आदिवासी जीवन केन्द्रित कहानियों में यथार्थवादी चिंतन-**डॉ. सुरेश सिंह राठौड़** | 137-141 |
| 32 | धरती आबा नाटक का नाट्यशास्त्रीय अनुशीलन-**डॉ. अंशुमान वल्लभ मिश्र** | 142-145 |
| 33 | हिंदी उपन्यासों में आदिवासी नारी जीवन-**डॉ. अमृत खाडपे** | 146-148 |
| 34 | विष्णु प्रभाकर की कहानियों में समकालीन युग-बोध-**डॉ. लियाकत मियाभाई शेख** | 149-152 |
| 35 | महानगर की मैथिली` कहानी संग्रह में वैचारिक संघर्ष-**प्रा. डॉ. कल्पना पाटील** | 153-155 |
| 36 | हिंदी सिनेमा और हिंदी साहित्य में समन्वय की समस्या- **डॉ. सुरेश कानडे** | 156-158 |
| 37 | अनुवाद की भाषावैज्ञानिक समस्याएँ (मराठी-हिंदी के संदर्भ में )-**आरगे गोदावरी सुदर्शन** | 159-162 |
| 38 | `बहु जुठाई ` मानवीय संवेदनाओं को झकझोरती कहानी- **डॉ. अर्शिया सैय्यद अफसर अली** | 163-166 |
| 39 | झारखंड के साहित्य में राकेश कुमार सिंह का योगदान- **प्रेम प्रकाश** | 167-169 |
| | मराठी विभाग | |
| 40 | महापाषाण दफन संस्कृती- माहूरझरी- **डॉ.विशाखा संजय कांबळे** | 170-171 |
| 41 | विरांगना झलकारीबाई- **डॉ. जयदेवी पवार** | 172-175 |
| 42 | मानवतावादाचा आदर्श: पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर-**डॉ. संदीप वाकडे** | 176-178 |
| 43 | पंडित महादेवशास्त्री जोशी यांची आगळी प्रवास वर्णने- **डॉ. स्नेहा सुवास प्रभुमहांबरे** | 179-183 |
| 44 | भारतीय राजकारणात प्रादेशिक पक्षांची भूमिका : एक अध्ययन- **डॉ. अनिल सी. बनकर** | 184-187 |
| 45 | मानसिक स्वास्थ्य आणि कोरोना- **प्रा. डॉ. छाया व्ही. ठिंगळे** | 188-191 |
| 46 | थोर समाजसेवक, स्त्रीशिक्षण प्रसारक व स्त्रीदास्य विमोचक 'महर्षी धोंडो केशव कर्वे' **- प्रा. डॉ. सुषमा सतिश देशपांडे** | 192-193 |
| 47 | खानदेशातील आदिवासी लोकगीतातील वाङ:मयीन सौंदर्य- **प्रा. डॉ. हिरालाल सोमा पाटील** | 194-197 |
| 48 | कवी भंडारे यांची `मरणाच्या दारात तारणाऱ्या माणसाची` कृतज्ञता व्यक्त करणारी कविता... **-प्रा. डॉ. जितेंद्र शामसिंग गिरासे** | 198-201 |
| 49 | नाशिक जिल्हयातील लोकसंख्या वृध्दी व घनतेचे कालीक व अभिक्षेत्रहीय विश्लेषण (2001-2011) **- डॉ. सुषमा लक्ष्मीकांत दामोदरे / श्री. संजय रामचंद्र चिंचघरे** | 202-208 |
| 50 | राज्यपालांच्या विशेष जबाबदाऱ्या- **डॉ. अशोक बाबुराव जाधव** | 209-212 |
| 51 | आधुनिक काळातील शिक्षकाचे व्यक्तिमत्व समृद्धी आणि व्यावसायिक विकास विषयक अपेक्षा व बदलते संदर्भ- **डॉ. सुचेता ज्योतिनाथ संकपाळ / श्री. आण्णासाहेब सावळेराम चोथे** | 213-217 |
| 52 | समानतेवर आधारित समाज रचनेसाठी शिक्षणाची समान संधी देणे विषयक शिक्षण व्यवस्थेची उपाययोजनात्मक भूमिका- **संजय यशवंत बांबळे/ डॉ. यु. व्ही. बनाळे** | 218-223 |
| 53 | काव्यात्मक साहित्याला विशेष प्रभावात्मकता आणि सौंदर्य प्राप्त करून देण्यात अलंकाराची उपयोगिता- **श्रीमती संध्या पवार / डॉ. शैला चव्हाण** | 224-227 |
| 54 | जनता शिक्षण मंडळाचा एक वैशिष्टयेपूर्ण कार्यक्रम `स्मृतीदिन प्रार्थना` उपक्रमातील आत्म्याचे अमरत्त्व कथन- **प्रा. डॉ. नाना नारायण लांडगे** | 228-230 |
| 55 | स्त्रीवादी साहित्य व आधुनिक युगातील स्त्री- **रामचंद्र रतन माळीच** | 231-234 |
| 56 | **ڈاکٹرشیخآفاقانجم -اجے چند سکندرآبادی کی مثل خالق باری کا جائزہ** | 235-238 |
| 57 | दौसा जिले के नाथ संत श्री दुर्बलनाथ जी का चिन्तन- **अनिल कुमार गंगवाल** | 239-243 |

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July 2021 Special Issue 02 Vol. III
SJIF Impact- 5.54

37

# अनुवाद की भाषावैज्ञानिक समस्याएँ
## (मराठी-हिंदी के संदर्भ में )

**आरगे गोदावरी सुदर्शन**
शोधार्थी पीएच.डी.हिंदी (**CDAST**)
हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
मोबाइल नंबर- 9490085107 gmail –argegodu192@gmail.com

---

आज के दौर में मानव जीवन के लिए अनुवाद की उपयोगिता अत्यधिक बढ़ गई है। सभी देशों की भाषा जनसामान्य तक पहुँचाने का एक ही माध्यम है-'अनुवाद'। आज का मानव किसी भी देश, काल और भाषा विशेष की रचना को अत्यल्प समय में पढ़ने का आकांक्षी हो गया है। इसलिए अनुवाद की जरूरत मनुष्य के ज्ञान की भूख के समानान्तर बड़ी है। आज अनुवाद को द्धयम दर्जा के कार्य नहीं माना जाता बल्कि उसे श्रमसाध्य एवं महत्वपूर्ण कर्म के रूप में स्वीकारा जा चुका है। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद की उपयोगिता स्वयं सिध्द है।

मराठी से हिंदी में अनुवाद करते समय अनुवादक को सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थिति को व्यक्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। पाद-टिप्पणियों के द्वारा विस्तार से भाव प्रकट करने पर भी कुछ कमी जरूर रह जाती है। विशेषकर साहित्यिक अनुवाद करते समय ज्यादा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जैसे -

**व्याकरणगत समस्याएँ:-**

'लिंग' और 'वचन' को लेकर मराठी और हिंदी भाषा में काफी अलग-अलग ढंग के विचार है। लिपि बहुत ही साम्य होते हुए भी लिंग, वचन, वाक्यरचना, कारक, वर्तनी के नियमों के भिन्नता के कारण इन दो भाषाओं में काफी अंतर है। जैसे - **लिंग:-** मराठी में संस्कृत की तरह तीन लिंग हैं, तो हिंदी में केवल दो ही लिंग हैं। मराठी के कई नपुंसक लिंग शब्द ही नहीं, पुलिंग शब्द भी हिंदी में स्त्रीलिंग है। जैसे अग्नि, सरकार, आत्मा, देह, आवाज आदि। इसके विपरीत मराठी में कुछ स्त्रीलिंग शब्द हिंदी में पुलिंग है। जैसे- इंकलाब, मजा, छत्री आदि। साथ ही साथ कई मराठी के नपुंसक लिंग शब्द हिंदी में पुलिंग हो जाते हैं। जैसे झाड, रूप, ध्यान, कपडा आदि।

**वचन:-** दोनों भाषाओं के एक वचन से बहुवचन बनाने के लिए अलग-अलग नियम हैं। जैसे-

| मराठी | हिंदी |
|---|---|
| एकवचन | बहुवचन |
| कथा | कथाएँ |
| वक्ते | अनेक वक्ता |
| अनेक बालिका | बालिकाएँ |

**4.2.4 कारक:-** कारक को लेकर दोनों भाषाओं में काफी भिन्नता है। साथ-साथ अवयव, रिश्ते, संतान आदि मराठी के संबंध में कारक के रूप में लिए जाते हैं। हिंदी में 'के' का प्रयोग होता है। मराठी में कर्म कारक 'ला' का प्रयोग मिलता है।

उदा- रामराव के दो बेटे थे। (हिंदी)
रामरावला दोन मुले होती. (मराठी)

**शब्दार्थ एवं अर्थ भिन्नता:-** मराठी और हिंदी में बहुत सारे शब्द का रूप एक होते हुए भी अर्थ की दृष्टि से उसमें भिन्नताहै। इससे अनुवादक को काफी भ्रम पैदा होता है।अनुवाद करते समय ऐसे कुछ शब्द हैं जो शब्द एक ही रहता है लेकिन इन दोनों भाषाओं में अलग-अलग अर्थ के रूप में प्रयोग किया जाता है। जैसे-

समान शब्द | हिंदी अर्थ | मराठी अर्थ

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July 2021 Special Issue 02 Vol. III
SJIF Impact- 5.54

| | | |
|---|---|---|
| 1. खाली | नीचे | रिक्त |
| 2. खड़ा | स्थित | कंकड |
| 3. संसार | दुनिया | गृहस्थी |
| 4. शिक्षा | शिक्षण | दंड |
| 5. यात्रा | प्रवास | तीर्थ यात्रा |
| 6. जाडा | ठंड के दिन | मोटा |

ऐसे और भी कई शब्द हैं जो कि अर्थ की अलग-अलग छटाएँ दिखाते हैं। साथ-साथ साम्य अर्थ होते हुए भी वर्तनी में भिन्नता रहने वाले शब्द भी काफी हैं।

जैसे- जनावर-जानवर
पाणी-पानी
मदत-मदद
कागद-कागज आदि।

**वाक्यगत समस्याएँ:-** वाक्य भाषा की इकाई होती है। प्रत्येक भाषा का अपना एक वाक्य विन्यास रहता है। अनुवाद के कारण कुछ सीमा तक स्रोत भाषा की वाक्य रचना का प्रभाव लक्ष्य भाषा की वाक्य रचना पर पड़ना स्वाभाविकहै। अनुवाद करते समय शब्द के स्थान पर शब्द रख देने से रचना अव्यवस्थित और अनर्थकारी हो जाती है। इसलिए उन वाक्यों का भावानुवाद करना पड़ता है। उन वाक्यों का विवरण नीचे दिया जा रहा है-

मराठी:-1.'चिताग्निने त्याचे डोके दाढेखाली दाबताच आवाज आला, तसा त्याच्या जवळकीच्या माणसांनी आकांत केला'.

हिंदी:-1.'चिताग्नी से उसके सिर के फटने की आवाज आती है, ठीक उसी समय उसके नजदीकी रिश्तेदार आक्रोश व्यक्त करते हैं।'(काळोखाचे कैदी पृ.सं.29)

मराठी:-2. 'अंगाची सालडी निघू नये म्हणून खडे-गोटे त्याच्या निबर टाचेखालून सटासट सरकत होते'.

हिंदी:-2. 'शरीर का चमडा निकल न जाए इसलिए कंकर और पत्थर उसके एडयों के नीचे से खिसकने लगे थे।'(काळोखाचे कैदी पृ.सं.30)

मराठी:-3. 'हा महारडा गावची राखरांगोळी करू पाहतोय'.

हिंदी:-3. 'यह महार पूरे गाँव का सत्यानाश करना चाहता है।' (बोव्हाडा'पृ.सं.51)

मराठी:-4. 'जिन्याच्या बरगड्यावर आपली पोलादी पावले आदलीत तो तूफान होऊन वर चढून गेला आणि त्यानं आपल्या अजस्त्र मुठीचा दणका दाराला दिला.दारानं धसका घेतला. डार उघडलं गेलं'.

हिंदी:-4. 'सीढ़ियों के फसली पर फौलादी पैर रखते हुए तूफान की तरह ऊपर चला गया और उसने अपने विशाल मुट्ठी से दरवाजे को धक्का मारते ही वह दरवाजा खुल गया।'(मवाली पृ.सं.99)

मराठी:-5. 'भादराल्यामुले त्याच्या काल्या रंगाला लखलखीतपणा आला होता; आणि असा तो रेडा लोकांना प्रत्यक्ष मरणच वाटत होता.'

हिंदी:-5. 'बाल निकालने की वजह से उसका काला रंग चमकने लगा था और वह सांड लोगों को प्रत्यक्ष रूप में मौत ही नजर आ रहा था।'(दसऱ्याचा सांडपृ.सं.92)

**4.2.7 पारिभाषिक शब्दों की समस्याएँ :-**

पारिभाषिक, ग्रामीण तथा व्यावहारिक शब्दों का मराठी से हिंदी में अनुवाद करना काफी कठीन होता है। वैज्ञानिक, तकनीकी सामग्री को मराठी से हिंदी में अनूदित करते समय शब्दों के पर्याय ढूंढते, निश्चित अर्थ शब्दों का चयन करने और उसके निश्चय में अनेक समस्याएं खड़ी होती हैं।अनुवाद करते समय उन शब्दों के स्थान पर पर्यायवाची शब्दों को नहीं रख सकते क्योंकि

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July 2021 Special Issue 02 Vol. III SJIF Impact- 5.54

वह सही भाव व्यक्त नहीं कर पाएगा। इसलिए पाद-टिप्पणियाँ दी जाती हैं। कुछ जगहों के नाम भी हैं जिन्हें वैसे ही रखा जाता हैं और स्थानों के नामकरण की टिप्पणीयाँ दी जाती हैं। उदा-

1.कोंडवाडा- जानवरों को बांधकर रकने की जगह।

2.चावडी – गाँव के सभी लोग एकत्रित होने की जगह।

3.भेंडी- जगह का नाम

**सांस्कृतिक समस्याएँ:-** अपनी-अपनी भाषा के रीति-रिवाज तथा पहनावा अलग होने के कारण उनका अनुवाद करना मुश्किल हो जाता है। अनुवाद करते समय मूल कृति के कुछ ऐसे शब्द सामने आते हैं जिसका हिंदी में सही अर्थ देने वाला समानन्तर शब्द नहीं मिल पाता है। अनुवाद करते समय उन शब्दों के साथ पर्यायवाची शब्द को भी नहीं रख सकते हैं क्योंकि वह सही भाव व्यक्त नहीं करता है। इसलिए उन शब्दों को उसी तरह रखकर नीचे पाद टिपण्णीयाँ देनी पड़ती है। जिससे शब्दों के अर्थ को समझने में आसानी हो और साथ ही भाव भी व्यक्त हो। मराठी का‘पातळ’ जिसका हिंदी अर्थ केवल साडी ही होगा। ‘पातळ’ कुछ अधिक अर्थवत्ता रखती है जो महाराष्ट्र की एक वेशभूषा है। उसी प्रकार ‘पागोटे’ एक अलग ही मराठी शिरो भूषण है। जैसे- कुछ विशिष्ट रूढ़ी तथा रीति-रिवाज के वाचक शब्द होते है जैसे- साँग, पागोटे, लुगडे, पातळ, अंबाडा,सैलाचा बुचडा,कोल्हापुरी चप्पल आदि।

1) ‘पागोटे’- सिर को बंधने का विशेष कपड़ा।

2) ‘लुगडं’- साड़ी

3) ‘चोळी’- एक विशिष्ट प्रकारचा ब्लाउज

4) ‘साँग’- धारण करना

5) ‘सैलाचा बुचडा’- विशिष्ट प्रकार का झूटा

6) ‘कोल्हापुरी चप्पल’- चप्पल का एक प्रकार

**मुहावरों का प्रयोग:-** कहानियों या उपन्यासों में मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग के कारण रचना आकर्षक बन जाती है। उनका अनुवाद करना बहुत मुश्किल हो जाता है। इस स्थिति में अनुवादक को लक्ष्य भाषा में वैसा ही अर्थ देने वाले मुहावरों का चयन करना पड़ता है। जो मूल पाठ को न्याय मिले। वैसे कुछ उदाहरण हम नीचे देख सकते हैं जिसका प्रयोग इन कहानियों में हुआ है-

1. ‘तळपायाची आग मस्तकाला जाने’- अत्यंत क्रोधीत होना।

2.‘अंगाचा लाही होने’- आग बबुला होना।

3. ‘भंडारा फुकंने’- जादू-टोना करना

4. सळो की पळो करणे- तक़लिफ देना।

कुछ ऐसे मुहावरे भी हैं जिनका समानान्तर मुहावरा हिंदी में नहीं मिल पाया इसलिए उनका भावानुवाद करना पड़ा हैं। जैसे-

1. ‘चेडा घालून वेडा करने’- जादू-टोना करना

उदा- 1. बानूने त्याला खंडोबा अथवा चेडा घालून वेडा केला.(मराठी)

1.बानूने ही उसे खंडोबा अथवा जादू-टोना करके पागल बना दिया है। (हिंदी)

2. ‘अंगात कापरे भरने’ - शरीर में थरथरी छुटना।

उदा- 1. हवेतून उठून एखाद्या प्रचंड भूताने धराल्यासराखे त्याला वाटले आणि अंगात कापरे भरले. (मराठी)

1.हवा से उड़कर कोई एक प्रचंड भूत ने आकर उसे पकड़ लिया ऐसा उसे लग रहा था और उसके शरीर में थरथरी- सी छुट गयी। (हिंदी)

3. ‘जाति संगती माती खावी’(जेव्हा मी जात चोरली होती,पृ.सं.83)- अपने जाति वालों के साथ ही रहना।

उदा- 1. “भाई, जाति संगती माती खावी; पण पर-जतिसंगती हत्तीवरुण फिरू नये. (मराठी)

1. “भाई, जाति के साथ रहकर मिट्टी खानी चाहिए लेकिन गैर जाति के साथ रहकर हत्ती पर नहीं घूमाना चाहिए। (हिंदी)

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July 2021 Special Issue 02 Vol. III SJIF Impact- 5.54

वस्तुतः अनुवाद कार्य कठिन है पर असंभव नहीं। अनुवादक को मराठी और हिंदी दोनों की इन विशेषताओं को समझ लेना चाहिए। दोनों क्षेत्रों की संस्कृति, जीवन, समाज-व्यवस्था, चिंतनधारा की पहचान होनी चाहिए और शाब्दिक संरचना के सारे संदर्भो को सही अर्थ में ग्रहण करने की क्षमता भी। उपर्युक्त शब्द चयन की ओर हमेशा ध्यान रखना चाहिए।

अनुवाद करते समय अनुवादक को विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझना पड़ता है। उसमें एक महत्वपूर्ण समस्या मुहावरों के अनुवाद की है। सामान्य शब्दावली के माध्यम से की गयी अभिव्यक्ति की तुलना में मुहावरों के माध्यम से की गयी अभिव्यक्ति अधिक प्रभावशाली तथा व्यंजक होती है, उसका अनुवाद भी उतना ही कठीन होता है।

उपर्युक्त कठिनाइयों के बावजूद मराठी से हिंदी में उत्तम अनुवाद हुए हैं। ऐसे अनुवादकों के अनुवादों की संख्या दर्जनों में है।

**संदर्भ ग्रन्थ:-**

1. अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग-डॉ.आदिनाथ सोनटक्के ,चंद्रलोक प्रकाशन कानपुर-208011 वर्ष 1998
2. 'जेव्हा मी जात चोरली होती',बाबूराव बागुल,अक्षर प्रकाशन, मुंबई-400 016 वर्ष-1963
3. 'समग्र लेखक'- बाबूराव बागुल,डॉ.कृष्णा किरवले, प्रतिमा प्रकाशन महाराष्ट्र
4. 'मराठी हिंदी शब्द कोश'-श्री.ह.भावे वारदा प्रकाशन प्रा.ली.397/1, सेनापती बापट मार्ग, पुणे-16 वर्ष-2009
5. 'हिंदी मुहावरे कोश'-डॉ.भोलानाथ तिवारी, शब्दकार 2203 गली डकोतान,तुर्कमानगेट दिल्ली:1985

■ ■ ■

Impact Factor 7.149

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

# AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly e-Journal

VOL-IX ISSUE-I JAN 2022

Address
- Devgiri Nagar, Ambajogai Road, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
- (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
- aiirjpramod@gmail.com
- aayushijournal@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

VOL- IX ISSUE- I JANUARY 2022 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.331 ISSN 2349-638x


| Sr.No. | Author Name | Research Paper / Article Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 1 | Amol Laxman Shinde | Banking Sector and Employment Opportunities | 1 To 3 |
| 2 | Dr. S. D. Kuduk & Dhairyashil B. Khamkar | Reasons For Overrun Cost of State Highway Projects in Maharashtra | 4 To 6 |
| 3 | Dr. M.P. Gaur | Effect of Meditation on Anticipation Ability | 7 To 8 |
| 4 | Dr. Ruhi Sethi & Yasha Jangir | Measurement of Brand Equity: A Significant Aspect of Brand Equity Management | 9 To 11 |
| 5 | Dr.V. N. Patange | The Routing Protocols (ZRP, TORA) in Mobile Ad Hoc Networks: A Review | 12 To 17 |
| 6 | Milind Manohar Bharambe & Dr. Santosh Kaluram Khirade | Study of the Effectiveness of developed Digital Educational Material for Mathematics at the Upper Primary level | 18 To 20 |
| 7 | Mr. Mangesh Digambar Panchal | Multiculturalism in Indian Writings in English | 21 To 24 |
| 8 | Dr.Srikant | Unreeling Yippe Culture through the Lens of Amitav Gosh's the Golden Gate | 25 To 30 |
| 9 | Dr. S. D. Kuduk & Dhairyashil B. Khamkar | Causes of Biodiversity Loss Due to Highway Projects in India | 31 To 34 |
| 10 | Dr. Rani Somnath Sarode | Younger language learners and Technology | 35 To 37 |
| 11 | Dr. Sandeep. G. Tiwari | Democracy and National Integration in India | 38 To 42 |
| 12 | Dr. Dipali Dubey Watane | Rasayana And Its Importance; A Literally Review | 43 To 47 |
| 13 | Dr.Vinod S.Koravi | A Survey Study on Difficulties facing to follow diet plans for the control of obesity | 48 To 52 |

| Sr.No. | Author Name | Research Paper / Article Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 14 | Dr. Sharmila | Domestic violence against the women of Bangala tribe in Punjab a Sociological study | 53 To 55 |
| 15 | Dr. Ranjit Prataprao Patil | The Role of Medhya Rasayana in Manasa Roga | 56 To 58 |
| 16 | Dr. Mahamud Khan & Leelawati Kumari | Teacher Education Institutions in Patna: Supervisory Leadership | 59 To 62 |
| 17 | Dr. Ganraj Mane & Mr. Prashant R. Mahadik | One Point Lesson is the Best Continuous Improvement Tool in Manufacturing Industry | 63 To 64 |
| 18 | Sandeep Ambadas Lande | Knowledge Management System in College Library | 65 To 69 |
| 19 | अमनदीप सिंह<br>डॉ० कमलेश राठौड़ | चौधरी चरणसिंह कुशल राजनितिज्ञ के रूप में | 70 To 72 |
| 20 | गोदावरी सुदर्शन आरगे | 'उपल्या' और 'हिन्दू' मराठी दलित उपन्यासों में चित्रित 'आंबेडकरवाद' | 73 To 76 |
| 21 | प्रकाश चंद्र | स्त्री विमर्श और श्यौराज सिंह बेचैन | 77 To 80 |
| 22 | प्रशांत सरकार | भूमंडलीकरण के दौर में विचारधारा का प्रश्न और विश्वग्राम का सपना: | 81 To 83 |
| 23 | डॉ. संगीता रानी | मीरा के काव्य में स्त्री स्वर | 84 To 89 |
| 24 | नवीन सहु | पर्यावरण प्रदूषण एवं संरक्षण एक भौगोलिक अध्ययन | 90 To 96 |
| 25 | डॉ. श्योपत राम सहारण<br>गुरमित सिंह | साझा सम्पत्ति संसाधनो ( CPRs ) का भौगोलिक अध्ययन भादरा तहसील के सन्दर्भ में। | 97 To 101 |
| 26 | डॉ. सुनील कुमार<br>सोहन लाल | जनसंख्या वृद्धि और बदलता भूमि उपयोग जोधपुर नगर के सन्दर्भ में | 102 To 104 |

| Sr.No. | Author Name | Research Paper / Article Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 27 | डॉ.प्रा. एस.पी. घुगे | 'महाराष्ट्रातील पशुपालन' एक भौगोलिक अभ्यास | 105 To 107 |
| 28 | डॉ. एस. आर.कट्टीमनी | बदामीच्या चालुक्यांचे प्राचीन भारतीय इतिहासाच्या पुनर्लेखनातील महत्व | 108 To 111 |
| 29 | प्रा.डॉ. गोविंद नामदेव रावळेकर | आंबेडकरवादी कवयित्रींची कविता | 112 To 116 |
| 30 | डॉ. प्रकाश कांबळे | आर्थर शोपेनहॉवर : एक महान तत्त्ववेत्ता | 117 To 121 |
| 31 | डॉ. शशिकांत अन्नदाते | सर्वसमावेशक शिक्षणाचे स्वरूप आणि अध्ययन अक्षम बालकांचे शिक्षण | 122 To 124 |
| 32 | प्रा.प्रविण म. पाथरकर | भारतीय शिक्षण आयोग (१९६४-६६) मधील शिक्षक व शिक्षक प्रशिक्षण विषयक विचार: एक दृष्टीक्षेप | 125 To 128 |
| 33 | डॉ. श्रीमती पी.एल. शिरढोणकर<br>आशालता ज. होळकर | माध्यमिक शाळेतील विद्यार्थ्यांमध्ये भौगोलिक दृष्टीकोन विकसित करण्यासाठी राबविल्या जाणाऱ्या कृतियुक्त उपक्रमांचा अभ्यास/ एक दृष्टीक्षेप | 129 To 130 |
| 34 | प्रा. डॉ. लता पांडुरंग मोरे | सानिया यांच्या कादंबऱ्यामधील स्त्रीसंवेदना | 131 To 134 |
| 35 | स्वाती साबणे<br>डॉ.विद्यानंद खंडागळे | कोल्हापूर शहरातील माध्यमिक स्तरावरील गुणवत्तापूर्ण शाळांच्या व्यवस्थापनाचा अभ्यास | 135 To 140 |

# 'उपल्या' और 'हिन्दू' मराठी दलित उपन्यासों में चित्रित 'आंबेडकरवाद'

**गोदावरी सुदर्शन आरगे**
पी.एच.डी शोधार्थी
हैदराबाद विश्वविद्यालय,
हैदराबाद

उपन्यास मानवीय अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति का अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है। इसलिए दलित उपन्यासकारों ने अपने निजी जीवनानुभूतियों को उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया है। उपन्यास के माध्यम से लेखक दलित पात्रों के जीवन को समग्रता के साथ प्रस्तुत कर सकता है। उनके जीवन के सभी पहलुओं को वह उजागर कर सकता है। जिससे दलित वर्ग के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक तथा आर्थिक संदर्भों से जुड़े जीवन का चित्रण किया जा सकता है। इसलिए 'आंबेडकरवाद' से प्रेरित दलित साहित्यकारों ने उपन्यासों का सृजन किया है। इन उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने दलित वर्ग के लोगों की पीड़ाएँ, यातनाएँ, अन्याय, अत्याचार, शोषण, उनका जीवन संघर्ष तथा उनमें निर्माण हुई चेतना का चित्रण किया है। यह उपन्यास व्यक्ति विशेष पर केंद्रित न होकर पूरे समाज पर केंद्रित हैं। इसमें व्यक्त पीड़ाएँ, दु:ख आदि किसी एक व्यक्ति की न होकर वह पूरे समाज की हैं। देश और समाज की परिस्थितियों, परंपराओं और नीतियों के विरुद्ध विद्रोह करने के उद्देश्य से ही दलित उपन्यास लिखे गए हैं। इनमें समाज की विषमतावादी परिस्थितियों को केंद्रीत कर उनकी विद्रूपताओं का चित्रण किया है। प्रेमचंद मानते है कि, "मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।"[1]

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों से प्रेरित होकर आज दलित समाज के लोग शिक्षित हुए हैं। संगठित होकर अपने ऊपर होने वाले अन्याय, अत्याचार तथा शोषण का विरोध कर रहे हैं। साथ ही अपने संवैधानिक अधिकारों के प्रति सजग हो गए हैं। वे 'आंबेडकरवाद' से प्रेरित स्वतंत्रता, समता, बंधुता तथा सामाजिक न्याय आदि सामाजिक मूल्यों को समझ रहे हैं। इसलिए वे समाज में समता तथा अधिकार पाना चाहते हैं, लेकिन उन्हें हर जगह संताप या अपमान को ही सहना पड़ रहा है। इस अपमान के विरुद्ध उनके मन में चेतना जागृत हो गई है। यही संताप, अपमान, आक्रोश, विद्रोह तथा चेतना दलित उपन्यासों का आधार है। दलित लेखक स्वयं भुक्तभोगी होने के कारण उन्होंने अपनी संवदनाओं को उपन्यासों के माध्यम से चित्रित किया है। उन्होंने पात्रों में नई चेतना का निर्माण करने का प्रयास किया है। अत: यह संवेदना या चेतना दलित लेखकों तथा गैर दलित लेखकों के पात्रों को अलग करती हैं। "दलित साहित्य के मूल में बौद्ध चिंतन, ज्योतिबा फुले और आंबेडकर के विचार, नीग्रो साहित्य लेखन और अश्वेत महिला लेखन में दिखाई देता है और साथ ही साथ कबीर, रैदास जैसे संत कवि इनकी प्रेरणा हैं।"[2]

'आंबेडकरवाद' शब्द का उद्भव बाबासाहब के महापरिनिर्वाण के पश्चात उच्चारित किया गया है। 70 के दशक में दलित आंदोलनों के कारण भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में 'आंबेडकरवाद' नामक एक नई संकल्पना का उदय हुआ जो आगे जाकर सामाजिक तथा साहित्यिक क्षेत्र के साथ जुड़ गया है। आज यह शब्द राजनैतिक, सामाजिक क्षेत्र के साथ-साथ साहित्यिक क्षेत्र में भी रूढ़ हो गया है। यह एक व्यापक विचारधारा है, जो डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों को, तत्त्वज्ञान को दर्शाती है। इस विचारधारा में महात्मा गौतम बुद्ध, चार्वाक, संत कबीर, महात्मा ज्योतिबा फुले, छत्रपति शाहू महाराज तथा डॉ. बाबासाहब आंबेडकर आदि सभी के विचारों का समावेश है। यह इन सभी महापुरुषों के विचारों को समेटे हुए है, जिसके कारण इसका क्षेत्र व्यापक बन जाता है। बाबासाहब ने सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक आदि सभी

क्षेत्रों में व्यापक दृष्टि से अपने विचारों को प्रस्तुत किया है लेकिन उन्होंने कभी उसे किसी 'वाद' के रूप में प्रस्तुत नहीं किया। अत: यदि 'आंबेडकरवाद' को जानना है तो उनके ग्रंथों तथा भाषणों के माध्यम से ही इसे ढूंढा जा सकता है। बाबासाहब ने सन् 1916 में लिखे 'कास्टस् इन इंडिया देअर मेकॅनिझम,जेनिसिस ॲण्ड डेव्हलपमेंट' इस निबंध से लेकर उनके महापरिनिर्वाण के पश्चात प्रकाशित 'बुद्ध ॲण्ड धम्म' तक कई विषयों पर विद्वत्तापूर्ण विचारों को प्रकाशित किया है। उनके इन सभी विचारों को 'आंबेडकरवाद' कहा जा सकता है।

'आंबेडकरवाद' यह एक परिवर्तनशील विचार है। इसमें परंपरागत रूढ़ियों, विचारों तथा व्यवस्थाओं में परिवर्तन करने की क्षमता है। इसने सभी क्षेत्रों में परिवर्तन लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसने मनुष्य के विचारों में परिवर्तन किया है। हजारों वर्षों से भी हीन अवस्था में जीवन जीने वाले दलित लोगों में क्रांति की ज्वाला सुलगाई है। गुलामी का जीवन जीने वालों में स्वाभिमान की भावना जगाई, जिसके कारण वह गरीब, पीड़ित, शोषित दलित समाज आज उच्च शिक्षित हुआ है। संगठित होकर अपने ऊपर होने वाले अन्याय के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है। उसमें एक नई चेतना निर्माण हुई है, जो उसे धर्माधिष्ठित समाज व्यवस्था के विरुद्ध क्रांति तथा विद्रोह करने की प्रेरणा देती है। इसके लिए साहित्य का क्षेत्र भी अपवाद नहीं है। आंबेडकरवादी आंदोलनों का प्रतिबिंब हमें आज दलित साहित्य में दिखाई देता है। आबेडकरवाद ही दलित साहित्य की ऊर्जा है, चेतना है, जो मनुष्य के विचारों को व्यक्त करने के लिए स्वतंत्रता प्रदान करती है। इसलिए दलित साहित्य का प्राण 'आंबेडकरवाद' ही है।

'उपल्या' 1956 से 1996 तक के समय पर आधारित यह उपन्यास दरअसल आत्मचिंतन है। दलित विमर्श के संवेदनशील विस्फोटक सन्दर्भ का एक साहित्यिक विश्लेषण । लेखक शरणकुमार लिंबाले ने 'उपल्या' उपन्यास में 1956 से 1996 तक चार दशकों के दौरान दलित आंदोलन का चित्रण करते हुए दलित आंदोलन पर प्रकाश डाला है । डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के महानिर्वाण के बाद, दलित आंदोलन विभाजित हो गया और कार्यकर्ताओं ने अनेक तरह के अलग-अलग संगठन बना लिए। इससे कार्यकर्ताओं में यह भावना पैदा हुई कि वे ही आंदोलन के मुख्य कार्यकर्ता हो और आंदोलन उन्हीं के हाथ में हो। इस उपन्यास का हालांकि कथानक यथार्थवादी है, उपन्यास चार भागों में विभाजित है, इसलिए उपन्यास में कोई सुसंगतता नहीं है। लेखक के अनुसार, "इस आत्मचिंतन या विश्लेषण के मूल में हैं कुछ स्मृतियाँ, कुछ बहसे, कुछ साहित्यिक पाठ, कुछ समाचार, समाज की गतिविधियाँ और उनसे उत्पन्न पतिक्रियाएं, आदि हैं।"[3] ग्रामीण समाज की वास्तविकताओं, दलितों के खिलाफ अन्याय-अत्याचार और उत्पीड़न, अज्ञानता, समाजीकरण, अपमान, भूमि हथियाने के आंदोलन, अस्तित्व की लड़ाई आदि के खिलाफ आवाज उठाने के लिए दलित आंदोलन के कार्यकर्ताओं ने सबको आकर्षित करने का काम कर रहे थे।

इस उपन्यास की केंद्रीय चिंता समकालीन दलित आन्दोलन है। उपन्यास के पहले भाग में एक सनातन ब्राह्मण परिवार के दलितीकरण का चित्रण है। कैसे उनके कमरे के सहकर्मियों ने उसे दलितीकरण का कारण बना देते है, इस पर प्रकाश डाला गया है। दूसरे भाग में दलित आंदोलन पर है। इनमें रिपब्लिकन पार्टी, दलित पैंथर्स और नामकरण पर आधारित समस्याओं का चित्रण किया है। जाति और सरकार के खिलाफ दलित आंदोलन द्वारा छेड़ा गया संघर्ष को इसमें दिखाया है। तीसरे भाग में ब्राह्मण परिवार की बेटी दलित की पत्नी बनती है और नया जीवन शुरू करती है। इससे सवर्ण में विचार परिवर्तन और अंतर्जातीय विवाह को दी गई मान्यता समकालीन स्थिति का प्रतिबिंध बन जाता है। उपन्यास के चौथे भाग में लेखक शरणकुमार लिंबाले ने इस तथ्य को उजागर करने में सफल होते हैं कि दलित आंदोलन और एक संगठन में मिलकर काम करने वाले कार्यकर्ता एक दूसरे के कैसे दुश्मन बन जाते हैं।

इस उपन्यास में अनेक मुख्य पात्र है- अनिरुद्ध देशमुख, रोहिदास नागदिवे, दयानंद किनिकर,मिलिंद कांबले, विजय पगारे, गौतम गंगुरडे, ईश्वर इंगले आदि हैं।

सनातन ब्राह्मण परिवार का एक पुत्र अनिरुद्ध देशमुख कॉलेज की शिक्षा के लिए छात्रावास में प्रवेश करता है, लेकिन समान प्रतिशत के साथ एक दलित छात्र मिलिंद कांबले अपने सहयोगी के रूप में कमरे में रहने के लिए आता है। एक दलित छात्र के रूप में, उन्होंने दलितों के खिलाफ अन्याय और अत्याचारों को देखा है। इतने सारे छात्र एक साथ आते हैं और दलित छात्र संगठन बनाते हैं। संगठन

की दैनिक बैठके कमरे में ही होती रहती है। इस कारण अनिरुद्ध का अध्ययन नहीं हो पाता है। वह हॉस्टल में कमरा बदलने की बहुत कोशिश करता है। लेकिन वह सफल नहीं हो पता है। कमरा या सहकर्मियों को बदलने के लिए उसे सहमति नहीं मिलती है। इसके अलावा घर की खराब स्थिति के कारण यह अलग कमरे का खर्च नहीं उठा सकता है। लेकिन इस स्थिति में भी वह शिक्षा प्राप्त करता है और अपराधी बन जाता है। नाम बदलने के आंदोलन के दौरान हाडोलती, जलकोट और बधौना गांवों में हुए दंगों के लिए अनिरुद्ध को दोषी ठहराया जाता है। ड्यूटी के दौरान अनिरुद्ध को गांव के लोग पत्थरों से कुचल कर जिंदा जलाने की कोशिश करते हैं। लेकिन एक सहिष्णु पुलिस अधिकारी उसकी जान बचाता है।

दलित आंदोलन के माध्यम से समाज की रक्षा करने वाले प्रमुख व्यक्ति रोहिदास नागदिवे, मिलिंद कांबले, विजय पगारे, दयानंद किनिकर, गौतम गंगुरदे ईश्वर इंगले आदि हैं। वहीं राहुल बसोडे, रमा बाबर, याकूब शेख, भीमा भोले, पंडित कनाडे, निकम्मा, त्रिशरण और अन्य छोटी-छोटी शख्सियतों के साथ-साथ प्रमुख हस्तियां भी परिवर्तन आंदोलन के माध्यम से नाम परिवर्तन की लड़ाई लड़ रहे हैं। रवींद्र साने, रश्मि, संरक्षक मंत्री ने माने जैसी कुछ हस्तियों के नाम सामने आए हैं। इनमें से अनिरुद्ध, मिलिंद कांबले, रोहिवास नागदिवे अपने अलग व्यक्तित्व का निर्माण करने की कोशिश करते हैं। दलित आंदोलन के ये सभी कार्यकर्ता समाज और सरकार से संघर्ष करते हैं। उपन्यास के प्रत्येक भाग में कार्यकर्ताओं के कथनों के माध्यम से समकालीन इतिहास को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। लेकिन यह एक ऐसा उपन्यास है जो दलित आंदोलन के उभार, संघर्ष और विखंडन पर दृष्टिपात किया है।

'हिंदू' उपन्यास को उपल्या की अगली कड़ी के रूप में जाना जाता है। गैर दलितों द्वारा अन्याय और उत्पीड़न के खिलाफ दलित कार्यकर्ताओं का संघर्ष उपन्यास उपल्या में दिखाई देता है। इसी प्रकार 'हिन्दू' उपन्यास में दलित नेता तात्या कांबले अपने अम्बेडकर जलमा के माध्यम से दलितों में सुधार लाने का प्रयास करते हैं। लेकिन सवर्ण समाज यह बदलाव नहीं चाहता। इसके परिणामस्वरूप तात्या कांबले की हत्या कर दी गई। पूरी कहानी इसी घटना के इर्द-गिर्द घूमती है।

एक ओर उग्र हिंदुत्व की लहर और दूसरी ओर इसके खिलाफ एकजुट होने वाले दलितों के स्वाभिमान को इस उपन्यास के माध्यम से महसूस किया जा सकता है। हिन्दू उपन्यास में मुख्य पात्रों के रूप में तात्या कांबले, प्रभाकर कावले, मानिकचंद और गोपीचंद के साथ, सदानंद कांबले, रोहित, सोनाली, कस्बे गुरुजी, रामभाऊ कवाले, सुरेखा माने, जगन्नाथ पंडित और दीपक माने आदि मुख्य पात्र हैं।

'हिन्दू' उपन्यास का मुख्य पात्र तात्या कांबले हैं। उनकी बचपन की शिक्षा अचलपुर गांव में हुई। दो-तीन पीढ़ियों तक तमस्गिरा के परिवार के रूप में जाने जाने के बावजूद, तात्या कांबले एक ऐसे नायक हैं, जो 'अम्बेडकर जलसा' के माध्यम से दलित भाइयों को अज्ञानता से बाहर निकालते हैं और जैसे कट्टरपंथियों का मनोरंजन करने के बजाय समाज के लाभ के लिए राजनीति को जोड़ते हैं। परिवर्तनकारी आंदोलन के माध्यम से समाज की रक्षा करते हुए सभी लोग इसके शिकार हो जाते हैं और जलसाकर तात्या कांबले का नाम हमेशा के लिए मिट जाता है। प्रभाकर पूरे उपन्यास में एक खलनायक की मुख्य भूमिका निभाते हैं। वह तात्या कांबले से नाराज हैं क्योंकि उनके पिता का सरपंच आरक्षण उनके कारण चला गया है।

गांव के दलितों को अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करने वाले तात्या कांबले की हत्या में प्रभाकर और गांव के अन्य लोग शामिल होते हैं। सभी नेता दलितों की हत्या कर आम दलितों को सबक सिखाने की कोशिश करते हैं। इस घटना ने समाज में व्याप्त विषम तनाव और विकृत जाति व्यवस्था पर प्रकाश डाला है। 'संघर्ष' इस उपन्यास का एक महत्वपूर्ण तत्व है।

तात्या कांबले की हत्या का पर्दाफाश करने के लिए दलित कार्यकर्ता एक साथ आ जाते हैं। लेकिन मानिकचंद और गोपीचंद जैसे भ्रष्ट लोग दलितों को अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल कर लेते हैं। तात्या कांबले के छोटे भाई सदानंद कांबले ने उन्हें सरपंच के पद से हटाकर समाज कल्याण मंत्री बनाने का वादा किया है। इस घटना के कारण दलित आंदोलन में फूट पड़ता है। इस कारण विकृत जाति व्यवस्था के बोझ तले दबे दलितों और उत्पीड़ित दलित समाज की असल तस्वीर हमें साफ दिखाई देती है। अतः 'हिन्दू' उपन्यास सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। I

उपन्यास 'उपल्या' और 'हिन्दू' का सामाजिक चित्रण करते हुए सामाजिक दर्शन, दलित, उच्च जाति के भीतर श्रेष्ठ हीनता का चित्रण, उच्च जाति समाज में अंधविश्वास, परंपरा, अम्बेडकरवादी विचारधारा का आविष्कार आदि पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। 'उपल्या' और 'हिंदू' उपन्यास 1956 से 1996 के चार दशकों के दौरान समाज और दलित आंदोलन में हुए परिवर्तनों को दर्शाते हैं। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के निधन के बाद दलित समाज में जो परिवर्तन हुए हैं, उन्हें दिखाया गया है। आजादी के बाद की अवधि में भी, उच्च जातियों द्वारा दलितों के साथ अवहेलना और अपमान जनक व्यवहार किया जाता है। ऐसा लगता लगता है कि दलित समाज कई अपवादों, रूढ़ियों, परंपराओं का शिकार हो गया है। हालाँकि आज दलित समाज में सुधार हुआ है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों को अपनी आजीविका के लिए उच्च जातियों पर निर्भर रहना पड़ता है।

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर द्वारा दलितों को दिए गए "शिक्षित बनो, संगठित हो और संघर्ष करो"[4] आदर्श वाक्य के साथ, हजारों दलित युवा, अंबेडकर के विचारों को स्वीकार करके, सभी के खिलाफ लड़ते हैं और उनके खिलाफ अन्याय और उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाते हैं। 'उपल्या' और 'हिन्दू' उपन्यासों के शीर्षक अर्थपूर्ण लगते हैं। डॉ. बाबासाहेब द्वारा शुरू किए गए आंदोलन में एक साथ काम करने वाले कार्यकर्ता प्रतिद्वंद्वी बन जाते हैं। वे चाहते हैं कि आंदोलन उनके हाथ में हो और आंदोलन का एकाधिकार उनका हो। बंदरों की उपल्या प्रजाति में भी यही रवैया पाया जाता है। बंदरों के समूह में मादा चूजे पैदा होने पर उपल्या खुशी से झूम उठती है। नर पिगलेट पैदा होने पर मारे जाते हैं। ऐसा है 'उपल्या' का रवैया। दलित आंदोलन के कार्यकर्ताओं का भी यही रवैया है। इससे 'उपल्या' नाम उपन्यास के लिए सार्थक हो जाता है। 'हिन्दू' उपन्यास का समर्पण लेखक की भावुकता का परिचायक है। चूंकि उपन्यास एक कथा-उन्मुख साहित्यिक शैली है, इसलिए कोई भी भाषाई कलाकृति बिना कथा के नहीं पढ़ी जा सकती है। 'हिन्दू' उपन्यास के वर्णन के लिए प्रथम पुरुष और तृतीय पुरुष कथा पद्धति का प्रयोग किया गया है।

अंत में कह जा सकता है कि दलित उपन्यास 'आबेडकवाद' से प्रभावित हैं। ये रचनाएँ पाठकों में एक नई चेतना निर्माण कर उन्हें प्रेरणा देने का भी काम करती हैं। दलित साहित्य के मानदंडों की दृष्टि से इन उपन्यासों में लेखकों ने आंबेडकवादी तत्वों को संप्रेषित करने का सफल प्रयास किया है, जो निश्चित रूप से सराहनीय है। यह उपन्यास डॉ बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों को विश्व धरातल पर संप्रेषित करने में सक्षम है। दलित साहित्य में अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यासों का सृजन बहुत कम हुआ है। इसलिए दलित उपन्यासों की दृष्टि से यह प्रारंभिक काल माना जा सकता है। दलित लेखक अब लिख रहे हैं, अभिव्यक्त हो रहे हैं। इसलिए उनकी भाषा में भले ही अलंकार, रस और छंद आदि नहीं होंगे लेकिन उनके पास शब्द है, जो उनकी भावनाओं को ही शब्दों के माध्यम सेव्यक्त कर रहे हैं। यह बात दलित उपन्यासों की दृष्टि में महत्वपूर्ण है जो इस विधा के विकास में सहायक सिद्ध हो सकती है।

**सन्दर्भ**

1. रामदरश मित्र, हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा.पृ.सं.30
2. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी-भारत में दलित साहित्य एवं दलित चेतना निकष (शोध विशेषांक) दि.2012.पृ.स.61
3. नरवानर-शरणकुमार लिंबाले-पृ.सं. 172
4. डॉ. एन--सिंह-दलित साहित्य के विविध आया-दलित मीमांसा (आलेख) पु. सं. 13
5. ओमप्रकाश वाल्मीकि - दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र
6. 'उपल्या' - शरणकुमार लिंबाले
7. 'हिन्दू' – शरणकुमार लिंबाले

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی

# MAULANA AZAD NATIONAL URDU UNIVERSITY

(A Central University established by an At of Parliament in 1998) Accredited with "A" Grade by NAAC
Gachibowli, Hyderabad - 500 032, Telangana State

**DEPARTMENT OF HINDI**

# CERTIFICATE

*This is to certify that Prof / Dr. / Mr. / Ms.* Arge Godawari sudarshan *From* Department of CDAST (Hindi) U.O.H *has participated / chaired session / Presented a paper entitled* 'Upliya' aur 'Hindu' Marathi dalit upnyason me chitrit Ambedakarvad *in the Two day National seminar on* "HASHIYE KA SAMAJ AUR SAHITYA MEIN ASMITA KE UBHARTE NAYE AYAAM" *held on 22 - 23 February 2018.*

Dr. Boddu Sethu Babu
*Convenor*

Dr. Mohd. Khalid Mubashir-uz-zafar
*Head, Department of Hindi*

धर्माबाद शिक्षण संस्था, धर्माबाद संचलित

# लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, धर्माबाद, जि. नांदेड (महा.)

नॅक पुनर्मूल्यांकन 2.87 CGPA के साथ 'B' श्रेणी प्राप्त

(संलग्न : स्वा. रा. ती. म. विश्वविद्यालय, नांदेड) तथा

## महाराष्ट्र हिंदी परिषद

के संयुक्त तत्वावधान में

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी

## "२१ वीं शताब्दी के हिंदी साहित्य में महानगरीय बोध"

एवं महाराष्ट्र हिंदी परिषद का २५ वाँ (रजत महोत्सवी) अधिवेशन

दि. २२ तथा २३ दिसंबर २०१७

# "प्रमाणपत्र"

प्रमाणित किया जाता है कि श्री / सुश्री./ प्रा./ डॉ. आरगे गोदावरी सुदर्शन

को लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, धर्माबाद जि. नांदेड तथा महाराष्ट्र हिंदी परिषद के सुयंक्त तत्वावधान में दिनांक २२ - २३ दिसंबर, २०१७ को '२१ वीं शताब्दी के हिंदी साहित्य में महानगरीय बोध' इस विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं महाराष्ट्र हिंदी परिषद के २५ वें (रजत महोत्सवी) अधिवेशन में बीज-वक्ता/प्रमुख अतिथि/सत्राध्यक्ष/विषय-प्रवर्तक/आलेख-प्रस्तोता/ प्रतिभागी के रुप में सम्मिलित होने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र सहर्ष प्रदान किया जाता है।

सत्र/शोध-आलेख का शीर्षक 'क्या मुझे खरीदोगे?' उपन्यास में चित्रित महानगरीय बोध

| | | | |
|---|---|---|---|
| डॉ. गजानन चव्हाण<br>प्रधान सचिव,<br>महाराष्ट्र हिंदी परिषद | डॉ. मधुकर खराटे<br>अध्यक्ष,<br>महाराष्ट्र हिंदी परिषद | डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार<br>संयोजक,<br>राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी एवं<br>म.हि. प. का २५ वाँ (रजत म.) अधिवेशन | प्राचार्य डॉ. डी. आर. मोरे<br>कार्याध्यक्ष<br>राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी एवं<br>म.हि. प. का २५ वाँ (रजत म.) अधिवेशन |

# हैदराबाद विश्वविद्यालय UNIVERSITY OF HYDERABAD

## मानविकी संकाय SCHOOL OF HUMANITIES

## दलित-आदिवासी अध्ययन और अनुवाद केन्द्र

## CENTRE FOR DALIT AND ADIVASI STUDIES AND TRANSLATION (CDAST)

हैदराबाद HYDERABAD-500 046.

क्रम.सं (SL.No) :......................

दिनांक : 21. अगस्त. 20

# प्रमाण पत्र CERTIFICATE

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी ......आरगे गोदावरी सुदर्शन.............. ने दिनांक 21. अगस्त. 2017 को भारत में स्वदेशी सामाजिक सुधार आंदोलन : सदगुरु सेवालाल का योगदान विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय/संगोष्ठी/प्रदर्शनी/कार्यशाला/सिम्पोजियम में अध्यक्ष/विषयप्रवर्तक/आलेख-प्रस्तोता/प्रतिभागी के रूप में भाग लिया और ......'दलित उपन्यासों की भाषा शैली'........................ विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

*This is to certify that Shri/Smt./Kum. ........................................................................................ has participated as Chair/Paper Presenter/ Participant in the International/National/Seminar/Exhibition/Workshop/Symposium on ................................................................................................ on ................................................................................ and Chaired/Presented a session/research Paper entitled ..................................................................................................*

निदेशक DIRECTOR

संयोजक COORDINATOR

Sl. No. 12691

# UNIVERSITY OF HYDERABAD

P.O. CENTRAL UNIVERSITY, HYDERABAD - 500 046 (INDIA)

## PROVISIONAL CERTIFICATE CUM CONSOLIDATED GRADE TRANSCRIPT

Student Registration Number **14HDHL05**

This is to certify that **ARGE GODAWARI SUDARSHAN** son/daughter of **SUDARSHAN ARGE / RANI** has been declared qualified for the award of the degree of **M.Phil. Dalit and Adivasi Studies and Translation** after having passed the prescribed courses as follows

| Course No | Title of the Course | Letter Grade Awarded | Credits | Month & Year of Passing |
|---|---|---|---|---|
| | **Semester : I** | | | |
| DS701 | Research Methods and Critical Approaches | B | 4.00 | NOV 2014 |
| DS702 | Introduction to Dr. B.R. Ambedkars Thought | B+ | 4.00 | NOV 2014 |
| DS703 | Historical and Sociological Study of Indian Adivasi Literature | B | 4.00 | NOV 2014 |
| DS704 | Translation and Computing in Hindi (Practical) | B | 4.00 | NOV 2014 |
| | **Semester : II** | | | |
| DS751 | Dissertation Submitted on : 30 JUN 2015 | B+ | 16.00 | FEB 2016 |

S: Supplementary I: Improvement R: Repeat

Cumulative Grade Point Average (CGPA) : 7.63 ( SEVEN POINT SIX THREE )

Division : First Division

Final result declared on : 04/02/2016

Date 09/02/2016

Hyderabad

Prepared By Checked By

CONTROLLER OF EXAMINATIONS

Controller of Examinations